किलोल

आर.एन.आई.पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

वर्ष 5 अंक 06, जून 2021

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म. नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य 80/-

अनुक्रमाणिका

मेरी माँ 7

आलू 9

ईद आई 11

पंचतंत्र की कथाएँ-मित्रता में बड़ी शक्ति है 13

फलियों की बेल 16

मौसी 17

तुम हो पालनहार 18

चल भइया गा पेड़ लगाबो 20

मामा का घर 22

करतब 23

महक उठी कलियाँ 24

अधूरी कहानी पूरी करो 25

पिकनिक 25

सीमा यादव द्वारा पूरी की गई कहानी 26

संतोष कुमार कौशिक पूरी की गई कहानी 27

जिज्ञासा वर्मा, कक्षा नवमीं, क.उ.मा.वि. रतनपुर, कोटा, बिलासपुर द्वारा पूरी की गई कहानी 28

वाणी मसीह द्वारा पूरी की गई कहानी 29

सुधारानी शर्मा द्वारा पूरी की गई कहानी 30

शालिनीपंकज दुबे द्वारा पूरी की गई कहानी 31

यशवंत कुमार चौधरी द्वारा पूरी की गई कहानी 32

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 33

बूढ़े बाबा की बाँसुरी 33

छोकरी 35

सोचो गर ऐसा हो जाए 36

मेरे देश मे 38

झन लेवव परीक्षा दाई ददा के 40

माँ 41

बर का पेड़ 42
लइकुसहा कविता 44
पहेलियाँ 45
दादी अम्मा 46
अभिलाषाएँ 47
मैं नारी 49
ज्ञान की पाती-करें योग रहें निरोग 51
माँ 53
पढ़ई तुंहर दुआर 54
नंदावत हे छिंद पान के मऊर 56
कोरोना महामारी 58
विश्व पृथ्वी दिवस 59
हाँ मैं मजदूर हूँ 60
अंतर्मुखी स्वभाव एक गुण है 61
मेंढक का घरौंदा 63
नटखट नन्ही 65
नन्ही कली 67
नर्स 69
हमारे प्रेरणास्रोत-रानी दुर्गावती 71
अंतर्मन 74
सबक 76
पहेलियाँ 77
बेहतर की उम्मीद 79
छत में रखना पानी 80
प्रणाम 81
एक पेड़ सौ पुत्र समान 85
आओ हम टीका लगवाएं 87
पुतरा-पुतरी के बिहाव 89

मजदूर 91
परी रानी 93
चलो बीज लगाते हैं 95
महतारी पूछय सवाल 97
गाथा राणा प्रताप की 98
मैं भी एक पिता हूँ 100
कोरोना महमारी 102
तनु की सूझबूझ 104
पेड़ नीम का 106
पंखा 107
आम 108
नन्ही सी लड़की 110
बीते पल 112
सुनो मन की बात 113
हमारे पौराणिक पात्र-ब्रह्मगुप्त 115
फेफडा दिल पर भारी 118
एक पेड़ 120
माँ 121
कोरोना 122
लालच के फल बुरा होथें 124
जिंदगी 126
माँ 128
मेहनत का फल 130
चिड़ियों की बाते 131
बेटी के रूप अनेक 132
खिड़की 134
बोईर गुठलू 136
मेरा बेटा 138

मेरी प्यारी माँ 139
बँटने लगी बधाई 140
प्यारी गौरेया 141
आम 143
कोरोना के रोना 144
कौआ 146
वृक्ष 148
दीप जलायें 150
व्यापारी और गधा 151
किसान 152
आज हम लाचार 153
छत्तीसगढ़ महतारी 155
मजदूरों पर लॉकडॉउन की मार 156
हाय कोरोना 157
वर्षा जल संग्रहण 159
कोरोना वायरस 161
देख कर मैं व्यथित हूँ 162
हरियागे धरती के अछरा 165
उड़ान 167
श्रीराम तुम्हारा है अभिनंदन 168
कर भला तो हो भला 170
पेड़ हमारे दोस्त 172
कोरोना स्लोगन 174
जब जागो तभी सवेरा 175
माँ 177
चार 179
सहयोग 180
चलो पढ़ना है 182

कोरोना काल में मेरी आनलाइन कक्षा....183
सफलता की कहानी-प्रशिक्षक बनने की मेरी यात्रा....186
प्रकृति करे पुकार....188
नया पौधा....189
आखिरी सहारा....190
मेरा भाई....192
कलम....194
चित्र देख कर कहानी लिखो....196
जिज्ञासा वर्मा, कक्षा नवमीं, क. उ. मा. वि. रतनपुर, कोटा, बिलासपुर द्वारा भेजी गई कहानी....197
कछुए की जीत....197
कु. डिलेश्वरी प्रजापति, कक्षा छटवीं, शा पू मा शा कालीपुर, प्रेमनगर, सूरजपुर द्वारा भेजी गई कहानी....198
कछुआ और खरगोश....198
संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी....199
अनोखी दौड़....199
यशवंत कुमार चौधरी द्वारा भेजी गई कहानी....200
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र....201
मजदूर....202
डर लगता है....204
डोकरी दाई कहे....207
मेरी दुनिया माँ का आँचल....209
कोरोना से बचाव....211
भाखा जनऊला....212

संपादक

डॉ. आलोक शुक्ला

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, द्रोण साहू, डॉ. शिप्रा बेग, वृंदा पंचभाई, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, शशि शर्मा, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका, ले-आउट एवं आवरण पृष्ठ

पुनीत मंग0932

प्यारे बच्चो एवं शिक्षक साथियो,

इन दिनों आप सभी एक बार फिर से अपने आसपास कोरोना वायरस का कहर देख और अनुभव कर रहे होंगे. हमें इस वक्त पूरी सावधानी रखते हुए संक्रमण से बचने की जरूरत है. ऐसी आपदाएँ प्रायः पर्यावरण से की गई छेड़छाड़ के फलस्वरूप ही आती हैं. पाँच जून को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर हम अपने आसपास स्वच्छता बनाए रखने, पौधे लगाकर उनकी देखभाल करने का संकल्प ले सकते हैं. हमें अभी कोरोना काल में ऑक्सीजन की कीमत का पता चल रहा है. संकट के इस दौर में हमारे आसपास बाल मजदूरी की घटनाएँ बढ़ सकती है. आइये बारह जून को बाल मजदूर दिवस के दिन हम मिलकर यह प्रण लें कि हम अपने साथियों को बाल मजदूरी से बचाएँगे. इसी प्रकार हमें स्वस्थ रहने के लिए नियमित रूप से योग का अभ्यास करना आवश्यक है. इक्कीस जून को विश्व योग दिवस भी है. इसी दिन विश्व संगीत दिवस है अपना मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखने में संगीत का बहुत महत्व है. खाली समय में संगीत सुनने एवं गुनगुनाने का आनन्द लेने की आदत डालें.

साथियो आपमें से अधिकांश लोगों का किलोल का वार्षिक सब्सक्रिप्शन समाप्त हो गया है. इसे आगामी वर्ष के लिए अवश्य सबस्क्राइब करें और अपने विद्यार्थियों में इसे पढ़ने, पढ़कर आनन्द लेने एवं रचनाएँ भेजने हेतु निरंतर प्रोत्साहित करते रहें.

आपका

आलोक शुक्ला

मेरी माँ

रचनाकार-सतीश चंद्र भगत

सबसे पहले खूब-सवेरे,
घर में जगती मेरी माँ.

झाड़ू लेकर सुबह-सुबह ही,
साफ-सफाई करती माँ.

सबको खूब खिलाती लेकिन,
खुद थोड़ा सा खाती माँ.

सजी-धजी साड़ी में रहती,
दुखरा नहीं सुनाती माँ.

मुझे पढ़ाती और लिखाती
हँसती और हँसाती माँ.

कहती रहती मन से पढ़ना
नहीं डपटती मेरी माँ.

जब तू बड़ा बनेगा बेटा,
खुश हो जाए धरती माँ.

भारत माँ की सेवा करना
सब दिन कहती मेरी माँ.

आलू

रचनाकार-गौरीशंकर वैश्य विनम्र

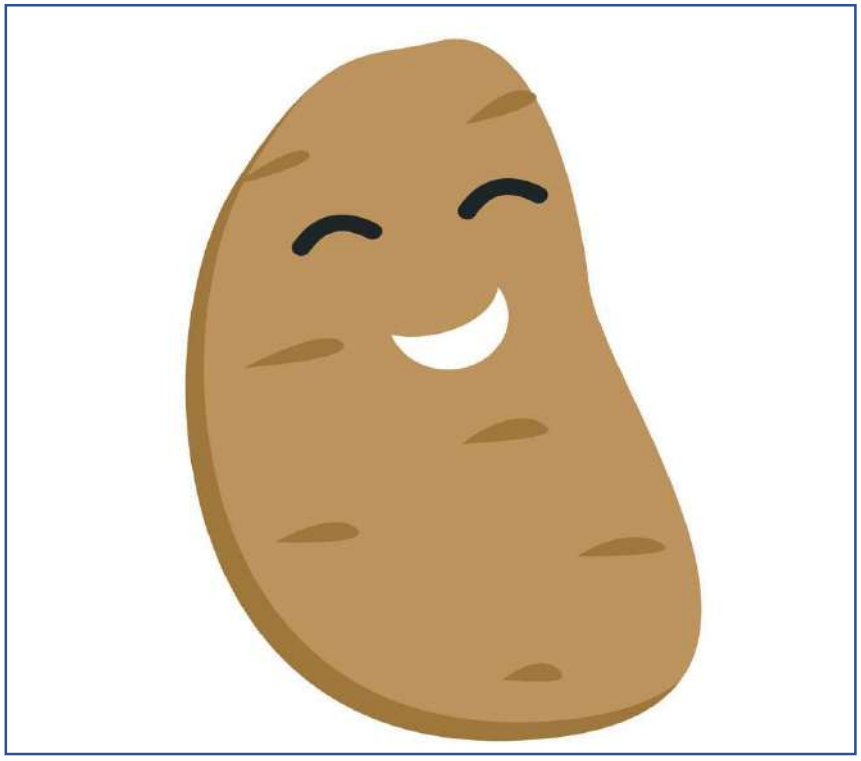

सब्जियों का राजा आलू,
बजा दे सबका बाजा आलू.
इसे उबालो अथवा भूनो,
कहता 'आजा खाले' आलू.

सस्ता है, गरीब भी खाता,
सभी घरों में आदर पाता.
दक्षिण अमेरिका से आया,
अब सारी दुनिया को भाता.

इसमें लवण, लौह, प्रोटीन,
कैल्शियम, शर्करा नवीन.
मिले विटामिन ए थियामीन,
विटामिन सी रियो फ्लावीन.

चाहे खाओ आलू-भात,
छको समोसा, टिक्की तात.
आलू होता बहुत सुपाच्य,
पापड़, चिप्स की क्या है बात.

तला-भुना हो कम ही खाएँ,
पेट के रोग न व्यर्थ बढ़ाएँ,
छोटे और अंकुरित घातक,
नन्हे आलू कभी न लाएँ.

ईद आई

रचनाकार-सीमांचल त्रिपाठी

आज के दिन नए कपड़े,
अब्बू हमको दिलवाएँगे.
चच्चा-चच्ची हैं देते पैसे,
पापा से तो ईदी पाएँगे..

प्यार से गले मिलकर देंगे,
आज के दिन की बधाइयाँ.
नमाज अताकर हम तो,
खाते और खिलाते सेवइयाँ..

ईद के इस मुबारक मौके पर,
मिलकर हम तो जश्न मनाएँगे.
जिम्मेदारी ले देश-समाज और,
घर को जागरुक बनाएँगे..

अमीर-गरीब सब ईश के बंदे,
ईद-उल-फितर बताने आता.
ईदी बाँट गरीब को और उसे,
गले लगाने को कह जाता..

घर-घर जाकर दे बधाइयाँ,
पुआ-मिठाई हम तो खाएँगे.
आज छोटे-बड़े सब मिलकर,
हम तो ईद का जश्न मनाएँगे..

पंचतंत्र की कथाएँ-मित्रता में बड़ी शक्ति है

तीन मित्र मन्थरक कछुआ,लघुपतनक कौवा और हिरण्यक चूहा बैठे-बैठे यहाँ-वहाँ की बातें कर रहे थे कि वहाँ चित्राँग नाम का हरिण कहीं से दौड़ता हाँफता आ गया. एक व्याध उसका पीछा कर रहा था. हरिण को आता देखकर कौवा उड़कर वृक्ष की शाखा पर बैठ गया. हिरण्यक पास के बिल में घुस गया और मन्थरक तालाब के पानी में जा छिपा.

कौवे ने हरिण की दशा देखकर मन्थरक से कहा-मित्र मन्थरक! यह तो एक प्यासा हरिण है, जो पानी पीने तालाब पर आया है.

मन्थरक बोला, यह हरिण बार-बार पीछे मुड़कर देख रहा है और डरा हुआ-सा है. यह प्यासा नहीं, बल्कि व्याध के डर से भागा हुआ है. देख तो सही इसके पीछे व्याध आ रहा है या नहीं.

दोनों की बात सुनकर चित्राँग हरिण बोल-मन्थरक ! मेरे भय का कारण तुम जान गए हो. मैं व्याध से डरकर बड़ी कठिनाई से यहाँ पहुँच पाया हूँ. तुम मेरी रक्षा करो. मुझे कोई ऐसी जगह बतलाओ जहाँ व्याध न पहुँच सके.

मन्थरक ने हरिण को घने जंगल में भाग जाने की सलाह दी. किन्तु लघुपतनक ने ऊपर से देखकर बताया कि व्याध दूसरी दिशा में चले गए हैं, इसलिए अब डर की कोई बात नहीं है. इसके बाद चारों मित्र तालाब के किनारे वृक्षों की छाया में बैठे देर तक बातें करते रहे.

कुछ समय बाद एक दिन कछुआ, कौवा और चूहा बातें कर रहे थे, शाम हो गई पर हरिण नहीं आया तीनों को सन्देह होने लगा कि कहीं वह व्याध के जाल में तो नहीं फँस गया?

बहुत देर तक भी चित्राँग नहीं आया तो मन्थरक ने लघुपतनक को जंगल में जाकर हरिण को खोजने की सलाह दी. लघुपतनक ने कुछ दूर जाकर देखा कि चित्राँग एक जाल में बँधा हुआ है. लघुपतनक उसके पास गया. उसे देखकर चित्राँग की आँखों में आँसू आ गए. वह बोला अब मेरी मृत्यु निश्चित है अन्तिम समय में तुम्हारे दर्शन करके मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई, मेरे अपराध क्षमा करना.

लघुपतनक ने धीरज बँधाते हुए कहा-घबराओ मत. मैं अभी हिरण्यक चूहे को बुला लाता हूँ. वह जाल काटकर तुम्हे मुक्त कर देगा.

यह कहकर वह चला गया और शीघ्र ही हिरण्यक को पीठ पर बिठाकर ले आया. हिरण्यक अभी जाल काटने ही जा रहा था कि लघुपतनक ने वृक्ष के ऊपर से दूर देखकर कहा यह तो बहुत बुरा हुआ.

हिरण्यक ने पूछा-क्या व्याध आ रहा है?

लघुपतनक नहीं, व्याध तो नहीं, किन्तु मन्थरक कछुआ इधर चला आ रहा है. हिरण्यक तब तो खुशी की बात है. दुःखी क्यों होता है?

लघुपतनक दुःखी इसलिए होता हूँ कि व्याध के आने पर मैं ऊपर उड़ जाऊँगा, हिरण्यक बिल में घुस जाएगा, चित्राँग भी छलाँगें मारकर घने जंगल में चला जाएगा; लेकिन यह मन्थरक कैसे अपनी जान बचाएगा ? यही सोचकर मैं चिन्तित हो रहा हूँ.

मन्थरक के वहाँ आने पर हिरण्यक ने मन्थरक से कहा मित्र ! तुमने यहाँ आकर अच्छा नहीं किया. अब भी वापस लौट जाओ, कहीं व्याध न आ जाए.

मन्थरक ने कहा-मैं अपने मित्र को आपत्ति में जानकर वहाँ नहीं रह सका. सोचा उसकी आपत्ति में कुछ सहायता करूँगा, तभी चला आया.

ये बातें हो ही रही थीं कि उन्होंने व्याध को उसी ओर आते देखा. चूहे ने उसी क्षण चित्राँग के बन्धन काट दिए. चित्राँग उठकर भाग खड़ा हुआ. लघुपतनक उड़कर वृक्ष पर बैठ गया. हिरण्यक पास के बिल में घुस गया.

व्याध अपने जाल में किसी को न पाकर बड़ा दुःखी हुआ. वह वापस जाने को मुड़ा ही था कि उसकी दृष्टि धीरे-धीरे जाने वाले मन्थरक पर पड़ गई. उसने सोचा, आज हरिण तो हाथ आया

नहीं, कछुए को ही ले चलता हूँ. कछुए को ही आज भोजन बनाऊँगा. यह सोचकर व्याध कछुए को कन्धे पर डालकर चल दिया.

यह देख हिरण्यक और लघुपतनक को बड़ा दुःख हुआ. चित्राँग भी व्याकुल हो गया. तीनों मन्थरक की मुक्ति का उपाय सोचने लगे.

कौए ने एक उपाय ढूँढ निकाला. वह यह कि चित्राँग व्याध के मार्ग में तालाब के किनारे जाकर लेट जाए. मैं तब उसे चोंच मारने लगूँगा. व्याध समझेगा कि हरिण मरा हुआ है. वह मन्थरक को भूमि पर रखकर जब चित्राँग को लेने आए तब हिरण्यक मन्थरक के बन्धन काट दे. मन्थरक तालाब में घुस जाए और चित्राँग छलाँगें मारकर घने जंगल में चला जाए. मैं उड़कर वृक्ष पर चला ही जाऊँगा. सभी बच जाएँगे, मन्थरक भी मुक्त हो जाएगा.

तीनों मित्रों ने यही उपाय किया चित्राँग तालाब के किनारे मृतवत् जा लेटा. कौवा उसकी गर्दन पर सवार होकर चोंच मारने लगा. व्याध ने देखा तो समझा कि हरिण जाल से छूटकर दौड़ता-दौड़ता यहाँ आकर मर गया है. उसे लेने के लिए वह जालबद्ध कछुए को जमीन पर छोड़कर आगे बढ़ा तो हिरण्यक ने अपने तीखे दाँतों से जाल के बन्धन काट दिए. मन्थरक पानी में घुस गया चित्राँग भी जंगल में दौड़ गया.

व्याध ने चित्राँग को दौड़कर जाते देखा तो आश्चर्यचकित रह गया. वापस जाकर जब उसने देखा कि कछुआ भी जाल से निकलकर भाग गया है. तब उसके दुःख की सीमा न रही. व्याध वहीं बैठकर विलाप करने लगा.

चारों मित्र, लघुपतनक, मन्थरक, हिरण्यक और चित्राँग प्रसन्नता से फूले न समाते थे. मित्रता के बल पर ही चारों ने व्याध से मुक्ति पाई थी.

फलियों की बेल

रचनाकार-बलवीर सिंह बिष्ट

मैंने फलियों की है ये बेल लगाई,
वसंत के आगमन में थी ये उगाई.
सर्दी में गाँव गया था जब मेरा भाई,
चाची ने उसे कुछ फलियाँ थमाईं.
वो फलियाँ मेरे मन को बहुत भाईं,
मैंने तुरंत उसमें से एक फली चुराई,
फिर वो फली छत में धूप में सुखाई.
मिट्टी की, फिर गमले में करी भराई,
निकाल कर बीज फिर की रोपाई.
जब बेल की प्रक्रिया पूरी हो पाई,
तब कहीं जा साँस में साँस आ पाई.
मौसम ने करवट ली तो वर्षा आई,
और मेरी बेल पर हरियाली छाई.
तब फूल खिले और फलियाँ आईं,
अब जाकर मेरी मेहनत रंग लाई.

मौसी

रचनाकार-सीमा यादव

मौसी मेरी बड़ी प्यारी,
हलवा बनाती मीठी-न्यारी.

मौसी मेरी खुशी का खजान
नई-नई चीजें लाती रोजाना.

मौसी जब कहीं घर से जाती है,
तो उनकी याद बहुत सताती है.

मौसी माँ सी ममता लाती,
इसीलिए वो मासी कहलाती.

मौसी मेरी बड़ी अलबेली,
मेरी अनोखी सखी-सहेली.

तुम हो पालनहार

रचनाकार-अविनाश तिवारी

तुम हो खेवनहार प्रभु जी,
तुम ही पालनहार,
सांसों के दो तार तुम्हीं हो,
दीनों के विश्वास तुम्हीं हो,
जीवन के आधार प्रभु जी,
तुम ही पालनहार.

जग है व्याकुल त्रास बड़ी है,
कैसी विपदा आन पड़ी है,
बचपन घुट कर सिसक रहा,
पांवों में बेड़ी पड़ी है,
कर दो न उद्धार प्रभु जी,
तुम हो पालनहार.

मंदिर सूना पनघट सूना
गांव का हर चौपाल है सूना
गुम है हंसी और ठहाके,
त्योहारों का उत्साह भी सूना
ले लो फिर अवतार प्रभु जी
तुम हो पालनहार.

चल भइया गा पेड़ लगाबो

रचनाकार-श्लेष चन्द्राकर

बखरी ला अउ नीक बनाबो.
चल भइया गा पेड़ लगाबो..

फूल फूलही अउ ममहाही.
तब तितली भौंरा मन आही..
जीव-जंतु ला तीर बलाबो.
चल भइया गा पेड़ लगाबो...

मोर गोठ ला तँय हा ले सुन.
रोज देखबो चिरई-चिरगुन..
सुग्घर दिन-भर छइँहा पाबो.
चल भइया गा पेड़ लगाबो...

आम बिही अउ जामुन फरही.
पाका फर ले डलिया भरही..
उसर-पुसर के हम फर खाबो.
चल भइया गा पेड़ लगाबो...

रुखमन ले ऑक्सीजन मिलथे.
तेखर ले ये जिनगी चलथे..
सब ला येकर लाभ बताबो.
चल भइया गा पेड़ लगाबो...

मामा का घर

रचनाकार-लक्ष्मी तिवारी

आज के दिन नए कपड़े,
चल-चल भैया मामा घर.
मामा घर पर है बंदर..

बंदर खाता है पत्ते,फल.
मटर,टमाटर केला ले चल..

बंदर संग हम खेलें खेल.
बस-जहाज, छुक-छुक मेल..

देख लिया हमने जग सारा.
मामा का घर सबसे प्यारा..

चल-चल भैया मामा घर.
मामा घर पर है बंदर..

करतब

रचनाकार-महेंद्र देवांगन "माटी"

करतब करती रोज के, देखे सब हैरान.
चल जाती है डोर पर, नन्ही सी है जान..

नन्ही-सी है जान, खूब वह नाचा करती.
चढ़ती ऊँचे बाँस, नहीं वह फिर भी डरती..

देते पैसे लोग, उसी से राशन भरती.
पैसे खातिर देख, रोज वह करतब करती..

महक उठी कलियाँ

रचनाकार-अनिता चंद्राकर

महक उठी कलियाँ बागों में, आया फिर नव प्रभात.
चहक उठी चिड़ियाँ डालों में अब बीत गई है रात.

पात पात झूम रहे तरुवर के, बह रही शीतल बयार.
जल्दी उठकर प्राप्त करो, प्रकृति का ये सुंदर उपहार.

जलनिधि पर थिरक रही, सूरज की स्वर्णिम किरणें.
बैठी प्रकृति सजकर, पहनी धरा सुरभित फूलों के गहने.

कलकल बहती नदियाँ गाती, अपनी धुन में गाने.
कमल ताल में ख़िल उठा, मधुकर लगे मुस्काने.

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी -

पिकनिक

आज श्रेया सुबह-सुबह ही उठ गई और शीघ्रता से तैयार भी हो गई. वह बहुत उत्साहित थी क्योंकि आज बहुत दिनों के बाद पूरे परिवार के साथ पिकनिक पर जाने का कार्यक्रम बना था.मम्मी पापा दादा दादी भैया सभी अपनी-अपनी तैयारियों में लगे थे. श्रेया बहुत उतावली हो रही थी, उसे लग रहा था कि बहुत देर हो रही है.

अंततः प्रातः 9 बजे सभी लोग घर से एक बड़ी सी कार से रवाना हो गये. पिकनिक के लिए तय जगह तक पहुँचने में लगभग एक घण्टे का समय लगने वाला था.

आधे घण्टे की यात्रा के बाद अचानक कार रुक गई. ड्राइवर ने बताया कि कार में कोई गड़बड़ी आ गई है. पापा ने ड्राइवर के साथ खराबी समझने और ठीक करने का प्रयास किया पर सफल नहीं हो सके. श्रेया के मुख पर उदासी छा गई. ड्राइवर आसपास किसी मैकेनिक की खोज में चला गया.अब उन सबके पास प्रतीक्षा करने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था.

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

सीमा यादव द्वारा पूरी की गई कहानी

श्रेया के पापा कार को ठीक करने की कोशिश में लगे हुए थे. थोड़ी देर में ड्राइवर एक मैकेनिक को साथ लेकर आ गया. मैकेनिक ने जल्दी ही कार ठीक कर दी. श्रेया के चेहरे पर खुशी वापस आ गयी. सपरिवार पिकनिक स्पॉट पर पहुँचकर सभी अपने-अपने तरीके से आनंद लेने लगे.

इधर श्रेया बगीचे में रंग-बिरंगे फूलों की सुंदरता देखकर अकेले ही घूमने चली गई. बाग का रास्ता भूलभुलैया जैसा था. इसलिए श्रेया गुम हो गयी. काफी देर हो जाने पर भी जब श्रेया कहीं नजर नहीं आई,तो उसके परिवार वाले ने उसे ढूँढ़ना शुरू कर दिया. आखिरकार श्रेया का भाई भूलभुलैया के पास पहुँचा और उसे श्रेया मिल गयी. सभी ने उसके भाई को शाबाशी दी. सभी खुशी-खुशी पिकनिक से वापस घर पहुँच गए. इस बार की पिकनिक श्रेया के लिए सबसे अलग और यादगार बन गयी थी

संतोष कुमार कौशिक पूरी की गई कहानी

श्रेया को उदास देखकर दादी ने उसे एक कहानी सुनाई. कहानी सुनकर भी श्रेया खुश नहीं हुई. तब मम्मी कहने लगीं-देखो श्रेया, कुछ ही दूर नदी किनारे एक बगीचा है, चलो वहीं जाकर कार ठीक होने तक विश्राम करते हैं. दादी, दादा, मम्मी सभी अपने साथ लाई हुई खाद्य सामग्री और अन्य खेल सामग्री लेकर बगीचे में पहुँच गए. बगीचे में विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों को देखकर श्रेया बहुत खुश हो गई. पूरे परिवार के साथ बगीचे में घूमने लगे.

दादाजी, श्रेया को वृक्ष लगाने के फायदे बताने लगे. बोले बेटा, वृक्षों से हमें फल, फूल, छाया, जड़ी-बूटी, ईंधन के लिए लकड़ी, शुद्ध हवा (ऑक्सीजन)आदि मिलते हैं. अगर पेड़ पौधे न हों तो विश्व में शुद्ध हवा की कमी हो जाएगी, जिससे हमें साँस लेना भी मुश्किल होगी. आजकल हम देख रहे हैं कि कोरोना काल में ऑक्सीजन की कमी के कारण हजारों व्यक्तियों की मृत्यु हो रही है. पैसा होते हुए भी ऑक्सीजन नहीं मिल पा रही है, इसलिए हर व्यक्ति को अपने गाँव के तालाब, नदी, विद्यालय और अपने घरों के आसपास वृक्ष लगाने चाहिए तथा वृक्षों को काटना नहीं चाहिए.

दादाजी की बातों से प्रभावित होते हुए श्रेया कहने लगी-"दादाजी मैं भी अपने स्कूल में पेड़ लगाऊँगी और उसकी सुरक्षा करूँगी. श्रेया की बातें सुनकर दादाजी खुश हो गये.

इधर भैया मोबाइल से सुंदर स्थानों की एवं परिवार की फोटो खींचने में व्यस्त थे. श्रेया ने भी अपनी खेलते हुए विभिन्न स्थानों पर फोटो खिंचवाईं. पास ही बह रही नदी जिसमें पानी कम,बालू अधिक थी के पास श्रेया अपने भैया के साथ पहुँची. बालू से दोनों ने कई प्रकार की आकृतियाँ बनाईं और सभी के चित्र अपने मोबाइल में कैद कर लिए.

तब तक पिताजी और ड्राइवर कार को ठीक करवाकर बगीचे में पहुँच गए. अब सभी ने बगीचे में बैठकर भोजन किया.

भोजन के बाद सभी पास के एक मंदिर में पहुँचे और सपरिवार दर्शन किए. अब पिताजी बोलें कि शाम होने वाली है,अब हम आगे नहीं जाएँगे. श्रेया सोचने लगी कि पिकनिक के लिए तय की गई जगह पर नहीं पहुँच पाने के बाद भी इस अनजान जगह' पर पूरा आनंद प्राप्त हुआ जो अविस्मरणीय है. वहीं से अपने घर सपरिवार वापस आ गये.

आज का दिन मोबाइल में ली गई फोटो में यादगार के रूप में सुरक्षित हो गया था.

जिज्ञासा वर्मा, कक्षा नवमीं, क.उ.मा.वि. रतनपुर, कोटा, बिलासपुर द्वारा पूरी की गई कहानी

जब श्रेया की परिवार गाड़ी ठीक होने की प्रतीक्षा कर रहा था, तभी एक भले मानस ने वहाँ अपनी कार रोककर श्रेया के पापा से कहा कि आप तो वही हैं जिन्होंने मेरे पिताजी को रास्ते में हार्ट अटैक आने पर अपनी कार से ले जाकर हॉस्पिटल में भर्ती कराया था. उस दिन मैं जल्दबाजी में आपका शुक्रिया अदा भी नहीं कर पाया था क्योंकि मेरा सारा ध्यान पिताजी की ओर था. वैसे आप लोग कहाँ जा रहे हैं, क्या मैं आपकी कोई मदद कर सकता हूँ.

श्रेया की पिताजी ने सारी बात उन्हें बताई. तब उस भले मानस ने कहा कि आप सभी मेरे कार से चलिए. तब तक आपका ड्राइवर कार ठीक करा लेगा. श्रेया के पापा को यह सुझाव अच्छा लगा, सभी उस भले मानस की कार में बैठकर पिकनिक वाली जगह पर पहुँच गए.

श्रेया ने अपने परिवार के साथ अंताक्षरी और कई तरह के खेल खेले एवं पकवानों का भी आनंद लिया. बाद में ड्राइवर कार ठीक करवाकर पिकनिक स्थल पहुँच गया. सभी खुशी-खुशी वापस आ गए.

श्रेया अपने पापा से बोली-मैं भी आपकी तरह लोगों की मदद किया करूँगी.

वाणी मसीह द्वारा पूरी की गई कहानी

अभी भी पिकनिक के लिए तय जगह पर पहुँचने के लिए आधी दूरी तय करना बाकी था. श्रेया बहुत उदास हो गई थी. परिवार के सभी सदस्य पेड़ के नीचे छाया में बैठे हुए थे. सभी ड्राइवर की प्रतीक्षा कर रहे थे कि वो किसी मैकेनिक को ले कर आए. श्रेया के पापा ने सभी बच्चों को समझाया कि हमें कठिन परिस्थिति में धैर्यपूर्वक विचार करना चाहिए और उसमें भी कुछ अच्छा ढूँढने की कोशिश करनी चाहिए. अब सभी यह सोचने लगे कि समय का कैसे उपयोग किया जाए. अंततः सभी आपस में एक दूसरे से कहानियाँ,गीत और चुटकुले आदि सुनने सुनाने लगे. मम्मी ने सभी को खाने के लिए नमकीन आदि दिए. सभी को बहुत मजा आ रहा था. कुछ देर में ड्राइवर, मैकेनिक को साथ लेकर आ गया और कार ठीक करवा ली. श्रेया और सभी बहुत खुश थे कि अब पिकनिक के स्थान पर जा पाएँगे.

पिकनिक वाली जगह पर पहुँचने के बाद सभी ने बहुत मजे किए. खेलकूद, घूमना फिरना सब शाम तक चलता रहा. बहुत सारी फोटो और अच्छी यादें लेकर सभी वापस घर आए. आज की पिकनिक बहुत शानदार रही थी.

सुधारानी शर्मा द्वारा पूरी की गई कहानी

ड्राइवर मैकेनिक की तलाश में चला गया, श्रेया एवं सभी को कार के अंदर बहुत गर्मी लग रही थी. सब कार से उतरकर इधर उधर देखने लगे, उन्हें थोड़ी दूर पर एक बड़ा सा वृक्ष दिखाई दिया, वे सब वहाँ पहुंचे तो देखा वहाँ घनी छाया थी, घना पेड़ होने के कारण ठंडी हवा भी आ रही थी. गर्मी से बेहाल श्रेया को वहाँ पहुँचकर बहुत शांति मिली.

श्रेया ने अपने भाई और बहन के साथ जाकर कार की डिक्की से चटाई और नाश्ते का सामान निकाल लिया. पेड़ के नीचे चटाई बिछाकर दादी मम्मी पापा सभी बैठ गए और नाश्ता किया. आसपास का वातावरण बहुत ही शांत और हरियाली से भरा हुआ था, थोड़ी दूर एक छोटा सा झरना भी था.

श्रेया एवं उसके भाई बहन बहुत खुश हुए, उन्हें बहुत अच्छा लगा, वे जाकर कार से खेल का सामान भी ले आए और खेलना शुरू कर दिया.

दादी ने कहा देखो प्राकृतिक वातावरण कितना सुंदर होता है, यहाँ शुद्ध हवा, पानी, छाया सब कुछ है. इस पेड में न जाने कितने छोटे-छोटे जीव जंतुओं का बसेरा है. इस भीषण गर्मी में इस वृक्ष ने हम लोगों को कितनी राहत दी है. हमें प्रकृति से शिक्षा लेनी चाहिए, और धन्यवाद करना चाहिए, कि उसने निस्वार्थ रूप से हम सबको अपना खजाना दिया है, हम सब को इसकी रक्षा करनी चाहिए.

कुछ देर बाद ड्राइवर एक मैकेनिक को लेकर आ पहुँचा, मैकेनिक ने गाड़ी ठीक कर दी, परंतु अब सब लोगों ने कहा कि आज पिकनिक यहीं पर मनाएंगे आगे नहीं जाएंगे. आनंद देने वाले सारी चीजें हमें यहीं पर मिल गई हैं. हमें भी प्रकृति का संरक्षण करना चाहिए, जो हमें जीवन जीने का सारा सामान निःशुल्क प्रदान करती है.

शालिनीपंकज दुबे द्वारा पूरी की गई कहानी

श्रेया के उदास चेहरा देखकर मम्मी उसे समझाने के लिए उसके पास जा रही थीं कि श्रेया की दादी ने उन्हें रोक लिया और कहा कि "बच्चों को कुछ समझाने का सबसे अच्छा तरीका है कि स्वयं उनके सामने उदाहरण प्रस्तुत किया जाए. बच्चे जो देखते है वही सीखते है. "

दादी की बात श्रेया की मम्मी को समझ आ गई. परिवार के सभी सदस्य चटाई बिछा कर पेड़ की छाँव में बैठ गए. बैठने के बाद समय बिताने के लिए अंत्याक्षरी खेलना शुरू किया गया. लगभग दो घण्टे बाद जब ड्राईवर भैया आये तो यहाँ हंसी ठहाकों का दौर चल रहा था. अंत्याक्षरी के बीच न जाने कितने गानों पर श्रेया थिरकी थी. दादाजी खूब अच्छे अंदाज में अपने बचपन के किस्से बताए जा रहे थे जिन्हें सुनकर सबको आनंद आ रहा था. गाड़ी के ठीक होने पर हॉर्न की आवाज सुनकर सबने जल्दी-जल्दी समान समेटा और पिकनिक के लिए आगे निकल पड़े.

यशवंत कुमार चौधरी द्वारा पूरी की गई कहानी

उदास बैठी श्रेया पर उसके दादा जी की नजर पड़ी तो दादाजी ने कहा चलो जब तक कार ठीक होती है तब तक हम सब लुका छिपी खेलते हैं. सब खेलने को तैयार हो गए. श्रेया खुश हो गई और सब खेल में रम गए. थोड़ी देर तक खेलने के बाद सभी पास के नाले के पास जाकर रेत पर खेलने लगे. श्रेया ने रेत से कई घर बनाए और उसे इस खेल में बहुत आनंद आया. कुछ समय बाद ड्राइवर के साथ आए मैकेनिक ने कार ठीक कर दी. सभी वहाँ से पिकनिक स्थल पहुँच गए.

श्रेया ने अपने दादा दादी मम्मी पापा भैया के साथ खूब आनंद लिया सबने बहुत सारी फोटो खिंचवाई और इन लम्हो को स्मृति में कैद कर लिया.

श्रेया को अब भूख लग आई थी, सभी ने साथ बैठकर खाना खाया. खाने के बाद बगीचे में घूमते हुए श्रेया ने उड़ती हुई रंग-बिरंगी तितलियाँ देखीं और वह उन्हें पकड़ने के लिए उनके पीछे दौड़ लगाने लगी.

सभी ने थोड़ी देर विश्राम किया और बैठे हुए ही अंत्याक्षरी जैसे खेल खेले और चुटकुले, गीत आदि से मनोरंजन किया. शाम होने लगी तो सभी घर लौट आए. आज की पिकनिक का दिन सभी के लिए यादगार बन गया था.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

बूढ़े बाबा की बाँसुरी

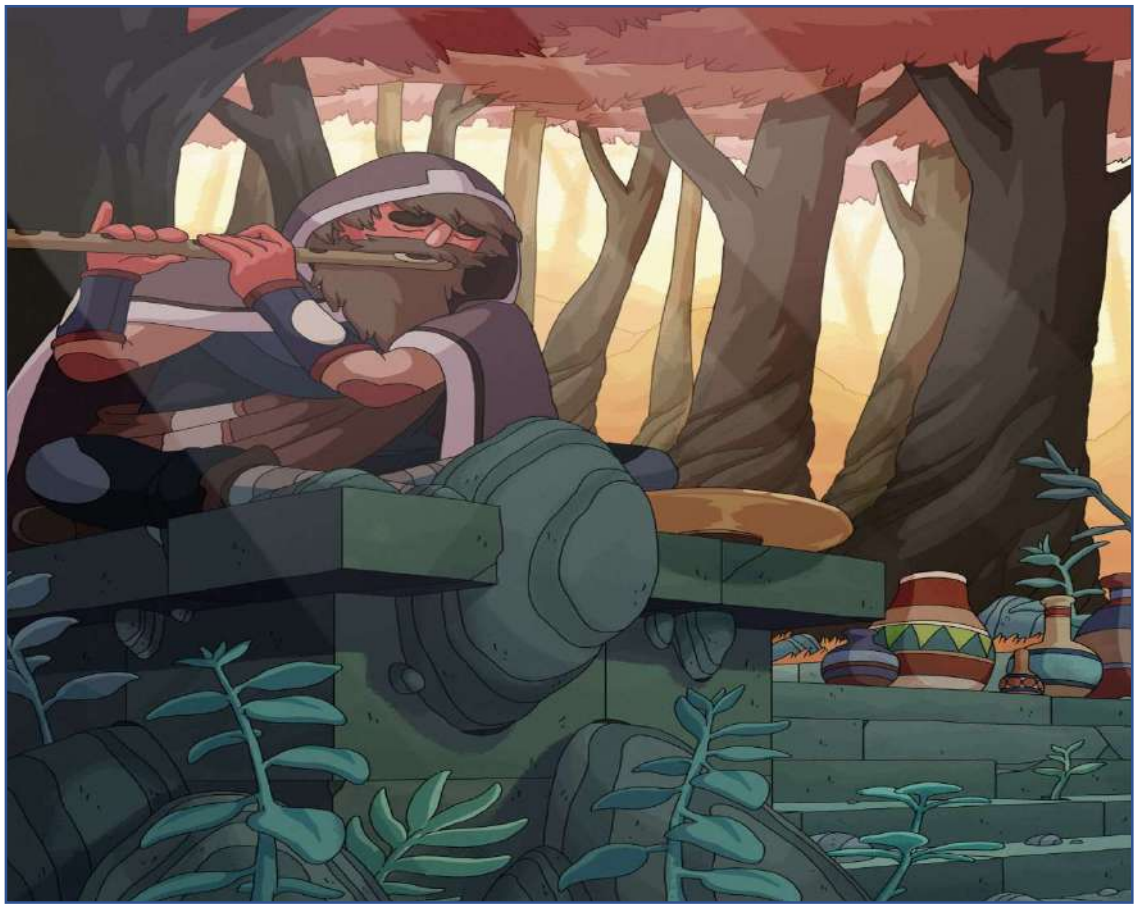

गाँव के बाहर नदी किनारे कुटिया बनाकर एक बूढ़ा व्यक्ति रहा करता था. उस बूढ़े को गाँव के लोगों ने हमेशा अकेला ही देखा था.

उसके परिवार के किसी और सदस्य के विषय में कोई भी कुछ नहीं जानता था. उस बूढ़े ने कुटिया के पास फलों का एक बगीचा लगा रखा था और प्रत्येक ऋतु में लगने वाले फलों को बेचकर मिलने वाले धन से ही उसकी आजीविका चलती थी.

गाँव के लोग उसे बूढ़े बाबा के नाम से संबोधित करते थे. किसी को उसका असली नाम नहीं मालूम था.

बूढ़े बाबा का बस एक ही काम था बाँसुरी बजाते हुए अपने फलों के बगीचे की रखवाली करना. वे अपना भोजन स्वयं पकाते और भोजन के बाद अपनी बाँसुरी लेकर बगीचे में किसी भी पेड़ की छाया में बैठ जाते, और फिर बाँसुरी की स्वर लहरियाँ आसपास के वातावरण में तैरने लगतीं. नदी किनारे जानवरों को चराने के लिए लाने वाले चरवाहों के साथ साथ जानवरों को भी बूढ़े बाबा की बाँसुरी की धुन सुनने की आदत सी हो गई थी.

अब इसके आगे आप अपनी कल्पना से इस कहानी को पूरा कीजिए और हमें माह की 15 तारीख तक ई-मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर भेज दें. आपके द्वारा पूरी की गई कहानियों में से चुनी गयी श्रेष्ठ कहानी किलोल के अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी.

छोकरी

रचनाकार-बलदाऊ राम साहू

छोटी सी है छोकरी
लिए सिर पर टोकरी.

आँखें उसकी नम है
खुशियाँ कम, बस गम है.

करती है मजदूरी
पेट बड़ी मजबूरी.

दुखड़ा किसे सुनाए
अब कहाँ वह जाए

सपने पाले मन में
कुछ-कुछ वह जीवन में.

वह भी स्कूल जाएगी
मुस्काएगी, गाएगी.

सोचो गर ऐसा हो जाए

रचनाकार-सुरेखा नवरत्न

सोचो गर ऐसा हो जाए,
पानी ऊपर हम चल पाएं.
भरे तालाब के बीचों-बीच,
एक बड़ा सा महल बनाएं.

सोचो गर ऐसा हो जाए,
पेड़ों पर पैसा फल जाए.
भर-भरकर बस्ते के अंदर,
घर अपने ले जाया जाए.

सोचो गर ऐसा हो जाए,
चिड़िया चले जमीन पर.
और पंख दो हमें लग जाएं
आसमान की सैर कर आएं.

सोचो गर ऐसा हो जाए,
चारों तरफ फूल खिल जाएं.
बनकर तितली रानी हम भी,
फूल-फूल का रस पी जाएं.

मेरे देश मे

रचनाकार-ममता वैरागी

अचानक पतझर का मौसम आ गया.
पता नही कहाँ से एक तुफान आ गया.
कोरोना खुद का नाम था उससे सबको रोना.
कितना किया जतन सबने दवा-दारू, टोना.

फिर भी जाने का नाम न लेता, फूलों को गिराएं.
मसल-मसल उन्हें चिल्लाए मानव जन को हराए.
तभी कुछ सेवा भावी,उठ खडे हो गये.
दो-दो हाथ इससे करने मानवता बचाने.

क्या शासन और क्या प्रशासन लगे सभी मंत्रीजी
हर कहीं पर ऐसे जन जो रखते अच्छा तंत्रजी.
दिन-रात लडने लगे, मानवों को बचाने लगे.
ब्लैक फंगस से भी हाथ दो-दो करने लगे.

तभी ताऊते ने दिखलाया अपना बडा जोश.
पेड़-पौधे, मकान धराशायी ऐसा किया विनाश.
पर इंसान ने प्रभू भजन मे अपने को लगाये
देख-देख प्रभू भी हारे, और आशीष दे पाये.

जाओं अब सब अच्छे से रहना इन दुष्टों को भगाता हूँ.
मेरे बच्चो आज धरा पर आकर तुम्हें बचाता हूँ.

झन लेवव परीक्षा दाई ददा के

रचनाकार-सोमेश देवांगन

आज के बेरा अइसन हावय के कब कोन मनखे ला का हो जाहि कोनो नइ बता सकय. सबो डाहर बन्द हावय मनखे मन बीमारी ले मरत हावय. चारो कोती हाहाकार मचे हावय. तेन बेरा हमर मन के दाई ददा हर अपन पेट ल पोचवा कर के पानी पी के भूख ल मिटावत हे अउ अपन हिस्सा के खाना ला हमर लइका मन ल भूख झन मरय कइके खवावत हे, ओ दाई ददा मन भी कइसे कर के साग पान दार चाउर लावत हे बड़ भागी हे वो लइका मन जेन ल अइसन दाई ददा मिले हवय फेर इहि बेरा मा अइसन लइका घलो हावय जेन ये विपत के बेरा म घलो दाई ददा ल परेशान करत हावय, की हमन ये साग ल नई खावन, ये भात ल बघारे काबर नही, अइसन परीक्षा झन लेवव बेटा कइ के ओ मन ला दाई ददा मन समझावत हे, कि बेटा अइसन बेरा आय हावय के कतको ला सुक्खा रोटी घलो नइ मिलत हे ता कोनो ला चाउर देखे ला नइ मिलत हे. ता जेन हावय खा लेवव अतका सुन के लइकामन अउ अपन दाई ददा ला आंखी देखावत हे कि हमला समझावत हस ता वो लइका मन बर मोर ये कहना हावय की बढ़ भागी हव लइका हो जेन तुंहर दाई ददा भगवान बन के तुमन ला खाना खवावत हे. येला सोचव के अपन दाई ददा के कर्जा ला कइसे उतारहु. ता भाई ये विपत के बेरा मा अपन दाई ददा ला परेशान झन करव अइसन परीक्षा कभू झन लेहु कइसनहो बेरा राहय अउ अतका सोच लेवव के मोर दाई ददा मोला दुनिया के सब सुख देवत हे मोर दाई ददा हर मोर भगवान हरय अउ अगर मोर भगवान मोर से रिसा जाहि त मोला कभू कुछु सुख नई मिलय कर के.

माँ

रचनाकार-सपना यदु

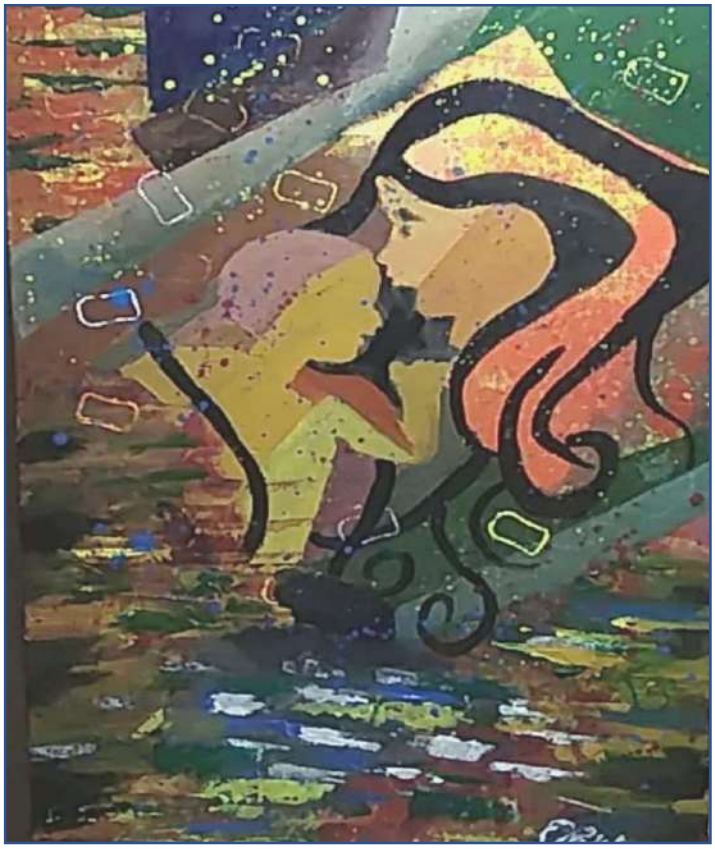

वो रात-रात भर जाग कर मुझे गोद में झुलाना.
खुद गीले में सो जाना और मुझे सूखे में सुलाना.

मेरे दिल की बातों को मेरे चेहरे से जान जाना.
मेरी एक फरमाइश पर पसंद का खाना बनाना.

अपनी इच्छाओं को दफन कर मेरे ख्वाब सजाना.
मुझे दर्द होने पर वो तेरी आंखों में आंसू आ जाना.

तुझसा ना कोई दूजा मैंने इस जहां में पाया है.
मां एक तू ही है जिसने निस्वार्थ प्यार लुटाया है..

बर का पेड़

रचनाकार-रानू साहू, कक्षा आठवीं, के जी बी व्ही दुल्लापुर बाजार

बहुत लुभाता है गर्मी में,
अगर कहीं हो बर का पेड़.
निकट बुलाता,पास बिठाता,
छाया वाला बर का पेड़.

तापमान धरती का बढ़ता,
ऊँचा-ऊँचा दिन-दिन ऊँचा.
झुलस रहा गर्मी से आँगन,
गाँव-मुहल्ला कूचा-कूचा.
राहत भरी साँसें,
देती है बर का पेड़.

हमने आँख बंदकर,
पहन ली है बेड़
बहुत लुभाता है गर्मियों में,
अगर कहीं हो बर का पेड़.

लइकुसहा कविता

रचनाकार-कन्हैया साहू 'अमित'

कपड़ा करथे फड़-फड़.
खड़फड़ी बजै खड़-खड़..

पनही हा चर्र-चर्र.
पाना हा खर्र-खर्र..

बरसा के झिमिर-झिमिर.
चिमनी के टिमिर-टिमिर..

घन्टी बाजय टन-टन.
चूरी खनकै खन-खन..

पानी खलबल-खलबल.
साँप ह सलमल-सलमल..

दाँत हा कटर-कटर.
जीभ हा चटर-चटर..

पहेलियाँ

रचनाकार-डॉ.कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

1. चासनी में डूबा रहता
किये बगैर मैं हल्ला,
बंगाल की हूँ एक मिठाई,
कहते मुझको----------

2. उदभव मेरा सब कोई ना जाने,
अंत ना मेरा देखा,
गणित की आकृति हूँ मैं बच्चों
कहते मुझको--------

3. जो गिनने के आती काम,
प्राकृत संख्या उसका नाम,
वैसे संख्या रही अनेक
पहली प्राकृत संख्या है-----

उत्तर:-1. रसगुल्ला 2. रेखा 3. एक

दादी अम्मा

रचनाकार-बलदाऊ राम साहू

दादी अम्मा आओ ना
कहानी हमें सुनाओ ना.

गुमसुम मत रहा करो
मन की बातें कहा करो.

हम साथी, सखी-सहेली
खुद को न समझो अकेली.

पापा जब देर से आएँ
कुछ मीठी डाँट लगाएँ.

मम्मी को पास बुलाना
बात पते की जरा बताना.

अभिलाषाएँ

रचनाकार-इंद्रजीत कौशिक

बादल की अभिलाषा

मैं तो बनना चाहूँ बादल
जमकर जल बरसाऊँ.
धरती पर हरियाली पाकर,
झुमूँ, नाचूँ, गाऊँ.

पुष्प की अभिलाषा

पुष्प अगर बन जाऊँ ईश्वर
यह मेरी अभिलाषा,
बिछ जाऊँ मैं उन कदमों पर,
बने जो निर्बल की आशा.

पुत्र की अभिलाषा

मात-पिता की सेवा में,
जीवनबिताऊँ अपना,
आज्ञाकारी बनकर रहूँ,
यही है मेरा सपना.

सैनिक की अभिलाषा

सीमाओं की रक्षा करके
अपना फर्ज निभाऊँ,
मातृभूमि की सेवा करके
देशभक्त कहलाऊँ.

मैं नारी

रचनाकार-ब्रीजभान टंडन

घर का सारे बोझ उठाती,
मेहनत से मैं ना घबराती.
मेहनत और संघर्ष है मेरे तलवार,
हौसला और धैर्य है मेरे पतवार..
मैं नारी हूँ तो क्या हुआ,अब हूँ नहीं मैं लाचार..
किसी के रोके रुकी नहीं,
बुरे वक्त में भी टूटी नहीं.
मैं नारी हूँ तो क्या हुआ
बेकारी लाचारी के आगे झुकी नहीं..
कितने बरसाये गये मुझपे शब्दों के बाण,
पर मैं घायल हो कर गिरी नहीं.
मैं नारी हूँ तो क्या हुआ,
थक कर हारना मैंने सीखी नहीं..

अपने दो बाजुओं का करती हूँ मैं सत्कार,
कायरता डरपोक भिरुपन को करती हूँ मैं धिक्कार.
मैं नारी हूँ तो क्या हुआ,
हर मुश्किलों से लड़ने को हूँ मैं तैयार..

ज्ञान की पाती-करें योग रहें निरोग

रचनाकार-चानी ऐरी

हम यह जानते हैं कि स्वास्थ्य हमारी अनमोल संपत्ति है इसीलिए Health is Wealth कहा गया है.

अच्छे स्वास्थ्य का अर्थ होता है स्वस्थ शरीर और प्रसन्न मन, पर बदलते समय में जीवन के मायने भी बदलते गए हैं. आजकल मनोविज्ञान के अनुसार स्वास्थ्य के तीन मुख्य आधार माने गए हैं

1.मन

2.तन/शरीर

3. आत्मा

मन को स्वस्थ रखने के लिए हम सकारात्मक सोच का उपयोग कर सकते हैं.

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए अच्छा भोजन, योग, ध्यान और खेलकूद का सहारा ले सकते हैं.

आत्मा को हम भक्ति भाव योग आदि के द्वारा स्वस्थ रख सकते हैं

हमारे इन तीनों आधारों को स्वस्थ रखने के लिए योग महत्वपूर्ण है, तो क्यों न हम योग के द्वारा संपूर्ण शरीर को स्वस्थ रखें. आजकल योग को शिक्षा से भी जोड़ दिया गया है, बच्चों के संपूर्ण विकास के लिए योग अति आवश्यक है.

इसके लाभों को देखकर पतंजलि ने योग की बहुत सी विधियाँ और लाभ बताए हैं. भारत की योग पद्धति पूरे विश्व में अपनाई जाने लगी है और लोग स्वस्थ रहने के लिए योग का सहारा ले रहे हैं. अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 21 जून को विश्व योग दिवस भी मनाया जाने लगा है.

आज योग के उपयोग से कई लोग भयंकर रोगों से भी लड़कर स्वस्थ हो रहे हैं. योग करने से शरीर में ऊर्जा अच्छे विचार एवं शरीर मे ऑक्सीजन की वृद्धि होती है. साथ ही हमारे शरीर के अंग सुचारू रूप से कार्य करते हैं.

आयुष विभाग, स्कूल शिक्षा विभाग, इण्डियन योग एसोसिएशन तथा पतंजलि योग पीठ के संयुक्त तत्वावधान में बहुत से कार्यक्रम योग को बढ़ावा देने के लिए होते रहते हैं. योग सिर्फ व्यायाम भर नहीं है, बल्कि विज्ञान पर आधारित शारीरिक क्रियाएँ हैं. कुछ विशेष और सामान्य योगासनों के नाम जो सभी लोग कर सकते हैं

1.प्राणायाम

2. अनुलोम विलोम

3. कपाल भाति

4. भ्रामरी प्राणायाम

5. तितली प्राणायाम

6. सुर्यनमस्कार

7. ताड़ासन

8. पवनमुक्तासन

योगासन से लाभ

योग से बीमारियो जैसे मधुमेह, खाँसी, गैस, हृदय की बीमारियो में लाभ, श्वास संबंधी बीमारियों मे लाभ होता है एवं शरीर शक्तिशाली और स्वस्थ बनता है.

माँ

रचनाकार-पुष्पलता साहू

सबसे है प्यारी जग से है न्यारी,
सबसे अनमोल होती है माँ
खुद के अरमानों को भूल,
ढेर सारी ख़ुशियाँ देती है माँ
उंगली पकड़कर चलना सिखाती,
थपकी देकर सुलाती है माँ
माफ कर सब गलतियों को,
लोरी गाकर सुनाती है माँ.
चले अगर गलत राहों पर तो,
हाथ पकड़ मंजिल दिखाती है माँ
कभी खुद गीले में सो कर,
सूखे में बच्चों को सुलाती है माँ
लाख तकलीफ़ें सह कर भी,
बच्चों पर ममता लुटाती है माँ

पढ़ई तुंहर दुआर

रचनाकार-टी.विजयलक्ष्मी

शहर-शहर, नगर-नगर,
गाँव-गाँव, डगर-डगर.
शिक्षा की चली बयार,
शिक्षा बच्चों का अधिकार.
आई "पढ़ई तुंहर दुआर".

आई पढ़ई तुंहर पारा,
लेकर बच्चों की मुस्कान.
"मिस्डकॉल गुरूजी"का उपहार,
"कॉन्फ्रेन्स कॉल" भी पतवार.
आई "पढ़ई तुंहर दुआर ".

सुकमा, दंतेवाड़ा, बीजापुर,
दुर्ग, कोरबा और नारायणपुर.
बलौदाबाजार चाहे जगदलपुर,
हर घर पहुंची शिक्षा की धार.
आई "पढ़ई तुंहर दुआर".

ऑनलाइन कक्षाओं की कतार,
कहीं ऑफलाईन की बहार.
"बुलटू बोल "तो कहीं,
मोटर-साइकिल पर सवार.
आई"पढ़ई तुंहर दुआर ".

"अंगना म शिक्षा "हो,
चाहे "प्रिंट रिच "परिवेश.
"ऑगुमेंटेड रियलिटी" हो,
चाहे "टी एल एम" का सार.
आई "पढ़ई तुंहर दुआर".

चौपालों में गलियारों में,
पढ़ई होती संग "लाउडस्पीकर,
द्वार-द्वार आई शिक्षा लेकर,
शिक्षा विभाग संग,आपकी सरकार.
आई "पढ़ई तुंहर दुआर".

नंदावत हे छिंद पान के मऊर

रचनाकार-संतोष कुमार तारक

छतीसगढ़ में बर-बिहाव में पहली छिंद पान के मऊर के अब्बड़ महत्ब रहय. ओकर बिन कोनो समाज के बिहाव नई होय. बिहाव म सबले बड़े जरूरी चीज मऊर रहय. येला छिंद पान के सुग्घर ढंग ले बनाये रथे. छिंद पान के बुता करईया पारधी जनजाति मन येला बनाये. कोनो-कोनो दूसर समाज के घलो मन जेन ल मऊर बनाये के कला आये बनात रिहिस.

छिंद के मऊर छिंद के पान के बनथे. जेला नान्हे बड़े पेड़ ले लु के लाये के पीछू बनाये जाय. बस्तर के जनजाति मन ले येला जादा बढ़िया ढंग ले बनाये.

छिंद के मऊर बनाना घलो कोई कलाकारी ले कम नई हे. मऊर बनाये के पीछू हरदी के पानी ले रंगाये ले अब्बड़ पिंयर-पिंयर चमक रथे. बीच-बीच म देवी-देवता के फोटू अउ कई रंग के चिकमिकी झिल्ली ल गाँथे ले अउ अब्बड़ सुग्घर दिखय. बाजार म बिहाव के लगती म जगह-जगह देखे ल मिल जाय.

छिंद के मऊर बस्तर के खजूर पाम प्रजाति के छिंद के पान ले बढिया बनाये जाय. जेकर वानस्पतिक नाम 'फोनिक सिलवेसट्रीस' आय, इंकर पत्ता ले चटई,बाहरी,टुकनी घलो बनथे. बस्तर

म इंकर पत्ता अउ तना ले घर घलो बनाथे. आदिवासी समाज म मऊर ल बनाके बाजार म बेचे बर लेजथे. जेंकर ले उँकर मन के रोजगार घलो चलथे.

समय के संगे-संग अब बाजार म रंग-रंग के मऊर दिखे ल धर लेहे. अब दुनिया के देखा-देखी चकाचौंध के मारे हमन प्रकृति ले मिले चीज ल बिसरावत जावत हन. अब तो नेंगहा म छिंद के मऊर के उपयोग होवत हवे. तेल-हरदी के दिन नान्हे मऊर जेला तेलमौरी कथे तेहा दुलही-दुलहा के मूड़ म दिखथे. मंगरोहन, मंडवा,करसा,देवतला के नेंग अउ मऊर सौंपे के समे दाई-माई मन मुड़ म बांध के घूमथे. टिकान के समे साफा म कोई-कोई मनखे जेन ल अब घलो अपन संस्कृति ले लगाव हवे छोटे छिंद के मऊर ल ओधा में खोच ले रथे. नहिते अब साफा के जमाना मे कोई नई पहिरे. आदिवासी समाज में अभी घलो छिंद पान के मऊर अउ सफेद धोती-कुरता अब ले नई छूटे हे. आदिवासी समाज मन आज घलो जुन्ना संस्कृति ल बचा के रखे हवे. इहि मन सहीराये के लाईक सबले जादा संस्कृति ल बचाये बर भीड़े हवय.

अब के समे में छिंद के मऊर पहिरैया मन ल निचट देहाती समझते. नवा-नवा फेशन के लुगरा-कपड़ा ल पहिरे दुलही-दुलही ल पढ़े-लिखे अउ बड़का मनखे मानथे. अपन पुरखा मन के रीति-नीति अउ प्रकृति ले मिले चीज के उपयोग म कोनो बुराई नई हे. जरूरत हवे अईसन ल बढ़ावा देके. जेकर ले छिंद पान के सामान बनइया समाज मन ल रोजगार अउ काम बुता मिलत रहय.

कोरोना महामारी

रचनाकार-पुष्पलता साहू

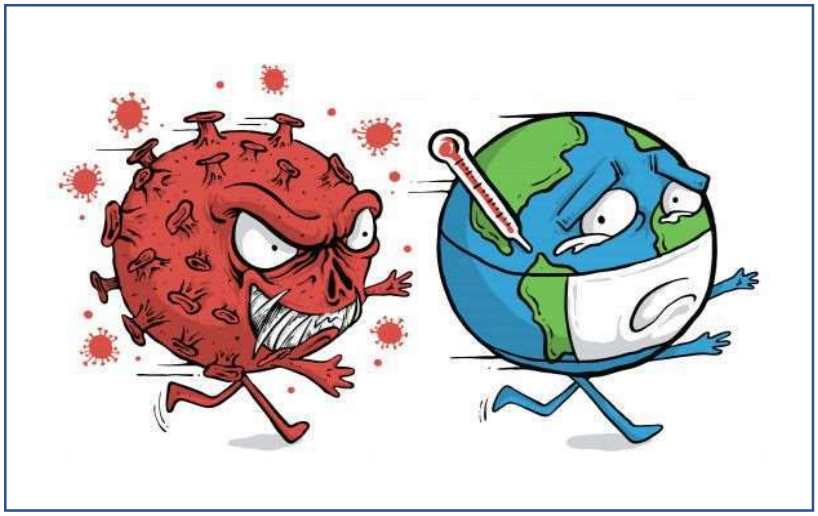

सबसे है प्यारी जग से है न्यारी,
बचने के लिए कोरोना महामारी से,
लॉकडाउन किया सरकार ने.
बेटा, पति, माँ और बहन खोई,
जानें कितने परिवार ने.

सर्दी, बुखार और सिर दर्द हो,
तुरंत ही चेकअप करवाना है.
टीकाकरण में सहयोग देकर,
होम आइसोलेशन भी अपनाना है.

संकट की इस घड़ी में सुरक्षित रहकर,
हमें अपनों को भी बचाना है.
दो गज की दूरी रखकर,
सैनेटाइजर और मास्क भी लगाना है.

सुनसान हुई गली, हाट, बाजारों की,
रौनकता भी लौटाना है,
सावधानी से सुरक्षा करके,
कोरोना को दूर भगाना है..

विश्व पृथ्वी दिवस

रचनाकार-प्रतिभा त्रिपाठी

धरती मेरी हरी-भरी हो,
ये संकल्प उठाते हैं.
वृक्ष लगाओ, पर्यावरण बचाओ,
यें संदेश फैलाते हैं..

वीरों की इस धरती को,
हम गुलज़ार बनायेंगे.
फूलों की बगिया से,
हर घर को महकायेंगे..

माटी में ही मिलना है,
धरती पर ही जीना है.
विश्व पृथ्वी दिवस पर,
धरती को महकाना है..

धरती का ऑगन इठलाता,
जब पेड़-पौधे लहराते हैं.
धरा की अनगिन सुंदरता,
मन सबका बहलाते हैं..

हाँ मैं मजदूर हूँ

रचनाकार-सन्तोष कुमार तारक

काम कुछ भी रहे,
काम में बस रहता चूर हूँ..
परिवार के लिए ही,
परिवार से रहता दूर हूँ..
हाँ मैं मजदूर हूँ..

अपने मालिक के लिए,
जीतोड़ मेहनत करता जरूर हूँ..
नहीं देता कोई साथ,
फिर भी अपने लिए भरपूर हूँ..
हाँ मैं मजदूर हूँ..

ईष्या द्वेष नही किसी से,
अपने किये पर करता गुरुर हूँ..
मतलब नहीं किसी से,
अपने आप मे रहता मगरूर हूँ..
हाँ मैं मजदूर हूँ..

अंतर्मुखी स्वभाव एक गुण है

रचनाकार-सीमा यादव

राम का परिवार मध्यमवर्गीय परिवार था. वह बचपन से संकोची स्वभाव का था, अपनी भावनाओं को व्यक्त करना उसे कठिन लगता था. इसी कारण वह अक्सर अपने मित्रों के बीच उपहास का पात्र भी बनता था. अपने अंतर्मुखी स्वभाव के कारण राम ज्यादा भीड़-भाड़ वाली जगहों में सामंजस्य नहीं कर पाता था. उसे एकांत पसंद था. एकांत में रहकर वह तरह-तरह के प्रश्नों पर सोचा करता था. अंतर्मुखी स्वभाव के कारण उसे कुछ कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ता था. उसके मित्र भी उसकी योग्यता को समझ नहीं पाते थे, वे उसकी उपेक्षा करते थे. किन्तु राम को किसी से कोई शिकायत नहीं थी, वह न तो किसी से प्रतिस्पर्धा का भाव रखता और न ही किसी से अपनी तुलना करता. वह अपने आप में ही व्यस्त रहता था, उसे यही अच्छा लगता था. अंतर्मुखी स्वभाव के साथ ही राम की एक और विशेषता यह थी कि वह यथासंभव सभी की मदद करने का प्रयास करता था.

राम के मित्र बड़ी-बड़ी बातें तो करते किन्तु उनकी बातें उनके कार्यों से समानता नहीं रखती थीं. वे सब कहते कुछ और थे, और करते कुछ और ही थे. राम अपने मित्रों के बीच अपनी अलग पहचान रखता था. उसकी सादगी, उसका सरल स्वभाव हर किसी के मन को मोहने वाला था. उसके इसी स्वभाव से उसके मित्रगण उससे ईर्ष्या का भाव भी रखते थे.

बारहवीं तक की पढ़ाई के बाद राम को प्राथमिक स्तर के सरकारी स्कूल में शिक्षक का पद मिल गया. अध्यापन के साथ ही उसने अपनी आगे की पढ़ाई भी अनवरत जारी रखी. इस तरह राम अपनी मेहनत और लगन से आत्मनिर्भरता के मुकाम तक पहुँचने में कामयाब हो गया. राम ने यह साबित कर दिया कि अंतर्मुखी, संकोची स्वभाव के व्यक्ति भी अपनी योग्यता से सफलता प्राप्त कर सकते हैं.

राम की हमेशा उपेक्षा करने वाले मित्र भी अब राम को सम्मान भरी नजरों से देखते हैं.

मेंढक का घरौंदा

रचनाकार-वसुंधरा कुर्रे

एक था मेंढक.
कितना सुंदर उसका घरौंदा.
मेरे आँगन में लगा था,
कमल का एक पौधा.
वह गमला था उसका घरौंदा.
दिन भर उस पानी में रहता.
कभी पत्ती पर बैठता.
कभी गमले के किनारे बैठे रहता.
जब पास जाओ देखकर,
लगा देता पानी में डुबकी.
पत्तों पर छिपे-छिपे,
सिर उठाए देखते रहता.
कितना सुंदर उसका घरौंदा.
एक था मेंढक.
कितना सुंदर उसका घरौंदा.
जैसे शाम अंधेरा होता,
आँगन में बिजली जलती.

वैसे ही पानी से बाहर आकर,
लगे आँगन में कूदने-फाँदने
कीड़े-मकोड़े आंगन का,
घूम-घूम कर वह खाता.
टर्र-टर्र की आवाज लगाता.
पास जाओ तो वह झट से,
पानी में डुबकी लगाता.
उसको देखकर बच्चे खेलते,
कितने अच्छे बच्चों को लगते.
एक था मेंढक.
कितना सुंदर उसका घरौंदा.

नटखट नन्ही

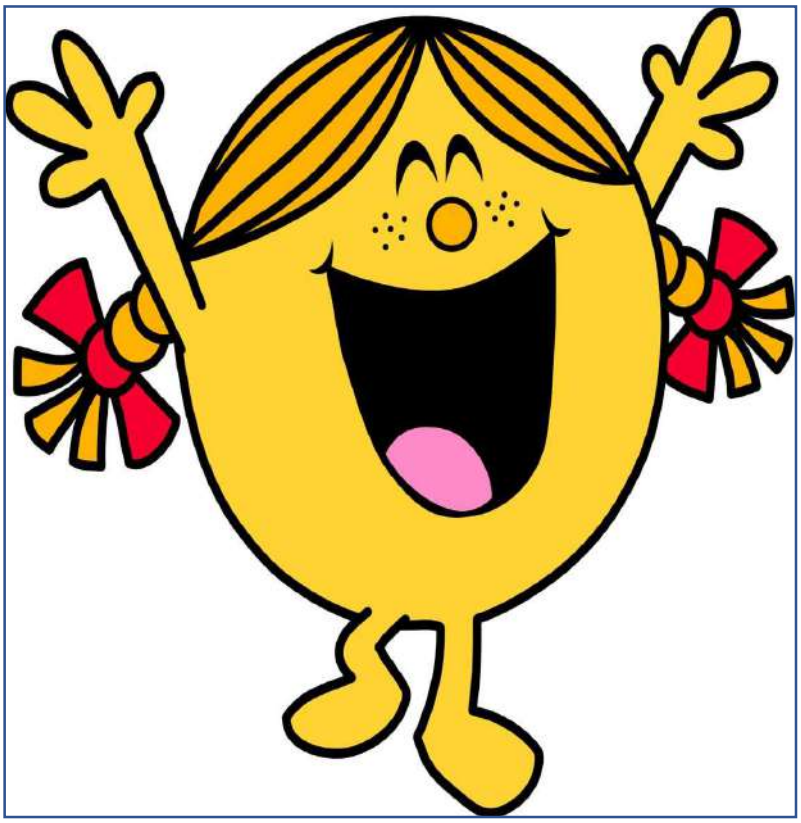

1. टीचर: नन्ही बताओ, अगर रात को मच्छर काटे तो क्या करना चाहिए?
   नन्ही: "चुपचाप खुजा कर सो जाना चाहिए.
   क्योंकि हम कोई सुपरमैन तो हैं नहीं, जो मच्छर से सॉरी बुलवा लें.

2. एक व्यक्ति ने नन्ही से पूछा: बेटा क्या यह गेंद तुम्हारी है?
   नन्ही: पहले आप बताइए कि क्या इस गेंद से कोई शीशा टूटा है?
   व्यक्ति: नहीं तो.
   नन्ही: तब तो यह गेंद मेरी ही है.

3. नन्ही: मम्मी आज टीचर ने मुझे पनिशमेंट दिया.
   मम्मी: जरूर तुमने कोई शरारत की होगी. बताओ क्या किया था तुमने?
   नन्ही: मैंने कुछ नहीं किया मम्मी; मैं तो कक्षा में चुपचाप सो रही थी.

4. नन्ही: पिताजी मुझे दस रुपये दे दीजिए.
   पिताजी: पर तुम रुपयों का क्या करोगी?
   नन्ही: बाहर एक आदमी धूप में खड़ा है, उसे दूँगी.
   पिताजी: पर वह कौन है और क्या कह रहा है?
   नन्ही: वह कह रहा है कि आइसक्रीम ले लो.

5. मम्मी: नन्ही मैंने तुम्हें फूल लाने को कहा था. तुम पूरी डाल क्यों तोड़ लाईं?
   नन्ही: माँ, वहाँ बोर्ड पर लिखा हुआ था कि फूल तोड़ना मना है; इसलिए.

नन्ही कली

रचनाकार-वसुंधरा कुर्रे

नन्ही कली उगता सूरज देखकर.
मंद-मंद यूँ मुस्कुराई,
उगा सूरज अब मैं खिलूँगी.
पंखुड़ी यूं धीरे-धीरे,
एक-एक करके
हवा के साथ लगी खिलने.
बीच पराग हँसते हुए दांतों सी चमकी.
जैसे-जैसे सूरज चढ़ा आसमान.
कली बन गई फूल.
फूल बनकर कली यूं मुस्कुराई.
तितली उसके पास मंडराई,
फूल हिल-डुल कर इठलाई.
फूल बोली आ जा मेरे पास.
फूल हंस-हंसकर उसको बुलाई.

तितली उसके पास जो आई.
फूल खुशियों से भर आई.
जब भौंरे फूल के पास आई.
फूल अपने मधुर रस पिलाई.
भौंरे मधुर गुंजन गान सुनाई.
जैसे-जैसे सूरज ढलने को आया.
फूल भी अपनी मुस्कान मुरझाई.
यह सब नन्ही कली देख रही थी.
सोच रही थी कल होगी हमारी बारी
हम भी कल कली से फूल बनेंगे
हम पर भी आएँगे तितली.
भौंरे की मधुर गुंजन गान, हम भी सुनेंगे.
यह सोच कली मंद-मंद मुस्कुराई

नर्स

रचनाकार-सीमांचल त्रिपाठी

अस्पताल में प्रतिदिन करती,
जो मरीजों की है देखभाल.
बच्चे बूढ़े हों या फिर जवान,
करती वो ईलाज पर सवाल..

डॉक्टर के बाद अस्पताल में,
होती है वह सबसे जिम्मेदार.
पर्ची पढ़ इन्जेकशन-दवा दे,
बनकर है वह तो होशियार..

दिन की हो या रात ड्यूटी
हर पाली वह करतीं काम.
मरीजों की सेवा है करती,
ना चाहिए उसको नाम..

रोगी सेवा का है कर्म पुनीत,
उसे निभाना बडा भाता है.
प्रतिदिन आगे बढ़कर उसको,
जिम्मेदारी निभाना आता है..

प्यार जताकर सभी मरीजों से,
देखभाल वह मजे से करती हैं.
मरीज महिला हो या हो पुरुष,
हमदर्दी जता बात करती हैं..

उनका भी होता है घर परिवार,
और होता है ससुराल-मायका.
माता-पिता हो या सास-ससुर,
सेवा में ना बदले है जायका..

पति संग पत्नी धर्म निभाती,
बच्चों की बनती वह माँ प्यारी.
पति और बच्चों को संग लेकर,
बनाती वह घर परिवार न्यारी..

मरीजों की देखभाल है सर्वस्व,
बिना थके करती वह तो काम.
मरीज सेवा को धर्म मान करती,
परिचारिका-नर्स उसका नाम..
नर्स उसका नाम...2

हमारे प्रेरणास्रोत-रानी दुर्गावती

बच्चो!आज हम आपको ले चलते हैं मध्यप्रदेश के जबलपुर क्षेत्र, जो पंद्रहवीं शताब्दी में गोंडवाना राज्य कहलाता था. जबलपुर से लगभग पचास किलोमीटर की दूरी पर सिंगौरगढ़ है. यहाँ स्थित मदन महल आज भी गोंडवाना साम्राज्य की समृद्धि और विशालता की गाथा कहता है. महल में मिले अवशेष बीते युग की बहुत सी कहानियाँ सुनाते हैं. क़िले के अंदर बने जलाशय में आज भी पूरे वर्ष पानी रहता है. किले की पहाड़ियों मे बने गुप्त रास्ते पहेली की तरह लगते हैं. माना जाता है कि यह गुप्त सुरंग मण्डला जाकर खुलती थी. सिंगौरगढ़ के रास्ते में शारदा माई का मंदिर स्थित है जहाँ गोंडवाना साम्राज्य की रानी पूजा के लिए अक्सर आया करती थीं. बच्चो! आज मैं आपको इसी रानी की कहानी सुनाती हूँ.

उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले में उस समय चंदेल वंश का राज था. वहाँ के राजा कीर्ति सिंह के यहाँ एक कन्या का जन्म पाँच अक्तूबर १५२४ को हुआ. दुर्गाअष्टमी के दिन जन्म होने के कारण कन्या का नाम दुर्गावती रखा गया. बचपन से ही दुर्गावती की रुचि घुड़सवारी, तीरंदाज़ी और तलवारबाज़ी में थी. अकबरनामा में अबुल फजल ने उनके बारे मे लिखा है-“वह बंदूक़ और तीर से निशाना लगाने में बहुत उम्दा थी और लगातार शिकार पर ज़ाया करती थी”.

अपने नाम की तरह दुर्गावती के तेज, साहस, शौर्य और सुंदरता की प्रसिद्धि चारों ओर फैली हुई थी. उनके गुणों से प्रभावित होकर गोंड राजवंश के राजा संग्राम शाह ने उनके लिए अपने बड़े बेटे से विवाह का प्रस्ताव भेजा. १८ वर्ष की अवस्था मे दुर्गावती का विवाह दलपत शाह से हो गया. विवाह के कुछ वर्ष पश्चात उन्होंने एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम वीर नारायण सिंह रखा गया. परंतु यह ख़ुशी ज़्यादा दिन न रह सकी. जब उनका पुत्र केवल पाँच वर्ष का ही था कि उनके पति दलपत शाह की मृत्यु हो गयी.

इस घटना के बाद रानी दुर्गावती पूरी तरह टूट गयीं पर उन्होंने हार नहीं मानी. उन्होंने अपने बेटे को सिंहासन पर बिठाया और खुद गोंडवाना साम्राज्य की बागडोर अपने हाथों मे ले ली.

रानी दुर्गावती के पास उस समय बहुत कम सैनिक थे. उन्होंने अपने राज्य के गोंड युवकों को साथ लेकर अपनी सेना तैयार की. उन्हें असहाय युवती जानकर उनके राज्य पर कई आक्रमण किये गये. गोंडवाना तीन ओर से मुग़ल शासकों से घिरा हुआ था. पश्चिम में निमाड़-मालवा का शुजात खाँ सूरी, दक्षिण में खान देश का मुग़ल राज्य और पूर्व में अफगानी शासक था. रानी दुर्गावती व्यूह रचना और युद्ध कौशल मे दक्ष थी. उनकी युद्ध रणनीति के समक्ष हर बार मुग़ल शासकों को पराजय का सामना करना पड़ा. तीनों राज्यों पर इस विजय से गोंडवाना राज्य को अपार सम्पत्ति मिली. दुर्गावती के राज्य में हरियाणा, राजस्थान सहित अनेक राज्यों के व्यापारी गोंडवाना राज्य के साथ व्यापार करने लगे. रानी ने राज्य में प्रजा की ख़ुशी के लिए कई कुएँ, बावड़ियाँ, तालाब, धर्मशालाएँ बनवाई. उनके राज्य में हर जगह खुशहाली थी कभी अकाल नहीं पड़ता था. गोंडवाना एक समृद्ध राज्य बन गया था.

सन १५६४ का समय था जब अकबर का शासन चारों ओर बढ़ रहा था. अब उसकी नजर गोंडवाना राज्य पर थी. अकबर ने अपने गुप्तचरों को फ़क़ीरों के वेश में राज्य में भेजा. वहाँ की आंतरिक सूचनाएँ इकट्ठी करने के बाद अपने सेनापति आसफ खाँ को गोंडवाना पर आक्रमण का हुक्म दिया.

आसफ खाँ जिरह बख्तर से लैस अपने पचास हज़ार मुग़ल घुड़सवार सैनिकों के साथ गोंडवाना पर टूट पड़ा. दुर्गावती भी अपने बीस हजार गुड़सवारों और एक हजार हाथियों के साथ सामने आ डटीं. दो-तीन घंटों की लड़ाई के बाद जब दोनों ओर के सैनिक थककर चूर हो गए, तब आसफ खाँ ने अपने नए बीस हजार घुड़सवारों को हमले का हुक्म दिया. बढ़ते मुगल सैनिकों ने दुर्गावती और उनके पुत्र वीरनारायण को घेर लिया. पराजय निश्चित थी यह देखते हुए उन्होंने अपने बेटे से कहा-मेरे मरने के बाद गोंडवाना की रक्षा करना और हिंदू महिलाओं को मुसलमानों के हाथ मत पड़ने देना. उन्हें अग्नि देवता को सौंप देना,युद्ध हारने के पूर्व जौहर की व्यवस्था कर देना. यह कह कर रानी जैसे ही आगे बढ़ीं तभी एक तीर उनके हाथी पर लगा और दूसरा तीर उनके गले को भेद गया.

दुर्गावती ने परिस्थिति को भाँप लिया. अपनी इज्जत बचाने के लिए शीघ्रता से कमर से खुँसी कटार निकाली और जय भवानी कहते हुए कटार अपने हृदय में मार ली. उनका शरीर मुगलों के हाथ न लग सका. अपनी मर्यादा की रक्षा के लिए वीरतापूर्वक अपने प्राण न्योछावर करने की ऐसी मिसाल बहुत कम मिलती है. आतताइयों की बर्बर भूख और लिप्सा के आगे घुटने टेकने के बजाय वीरता और साहस के साथ उनका सामना करने और मृत्यु का आलिंगन करने के ऐसे उदाहरण दुनिया के इतिहास में कम ही मिलते हैं. रानी दुर्गावती का यह बलिदान उन्हें सदा सदा के लिए अमर बना गया.

वर्तमान में जबलपुर मंडला रोड पर स्थित बरेला में रानी दुर्गावती की समाधि है, जहाँ वे वीरगति को प्राप्त हुई थीं. चौबीस जून को रानी दुर्गावती के बलिदान दिवस पर आज भी लोग यहाँ उनकी समाधि पर दर्शन के लिए आते हैं. सिंगौरगढ़ में स्थित महल आज भी उनके साहस,पराक्रम और वीरता की गाथा कहता है.

अंतर्मन

रचनाकार-लोकेश्वरी कश्यप

सुना है सबके पास होता है सबका एक जैसा होता है.
एहसास सबका दर्द और खुशी का, फिर जाने कहाँ छुप जाता उनका,
अंतर्मन.....

कोई किसी का धन छीनता,कोई किसी की जान, तो कोई छीनता सम्मान,
उनके अंदर का जब जागता हैवान, तो क्यों बिक जाता है.
अंतर्मन.....
क्या वह भी हो जाता लालची क्या उसको भी स्वार्थ लेता है घेर
देख कर सब की बेबसी, लाचारी और
नाउम्मीदि भीतर ही भीतर घुटता
अंतर्मन.....
कभी आत्मा का परमात्मा से अंतर्संबंध कराता,
कभी पंच तत्व के पिंजड़े में पखेरू बन अपने परों को फड़फड़ाता,
अंतर्मन.....

मिट जाए सारे वैमनस्य बंद हो जाए सारे षड्यंत्र,

आहा कितना सुखद अवसर होगा वह, जब सबका जाग जाएगा,
अंतर्मन.....

चहुँओर होगी जब वसुधैव कुटुंबकम की भावना,
होगी शांति और प्रेम जब दीप्त होंगे सब के अंतर्मन.....
ना कहीं पाप होगा ना होगा अपराध और अपमान.
मिले सबको सही संस्कार हो जाएगा सब का उद्धार, आनंदित हो जाए
अंतर्मन.....

ऐसे सुखमय संसार का चलो करे सब मिलकर निर्माण.
ज्ञान, विज्ञान, परंपराओं और संस्कारो से सबके परिपूर्ण हो जाए,
अंतर्मन.....

सबक

रचनाकार-अनिता चन्द्राकर

बीत गई अब काली रात, चिड़िया चूँ-चूँ बोली.
आई पूरब से नई रोशनी, सबने आँखें खोली.

नव ऊर्जा के संचार से, छँट गई दुख की बदली.
जीवन में फिर से रंग भरा, खिलने लगी कली.

हुआ कुछ ऐसा जो, सीखा गया हमें कई सबक.
प्रमुदित रहकर फैलाएँ हम, ख़ुशियों की महक.

मत करो शक्ति का क्षय, परहित को मानो धर्म.
व्यर्थ न जाने दो समय को, करते रहो सतत कर्म.

रिश्तों के अनमोल मोती समेट, बाँटो जग में प्यार.
मन की आँखों से देखो, अतिशय सुंदर है संसार.

पहेलियाँ

रचनाकार-श्वेता पुष्पेन्द्र तिवारी

1. छोटे बड़े सभी को भाए उसको तो बूझो,
गोल मटोल रंग है पीला पेट में दाढ़ी मूछ.

2. तन गोरा मुख चाँद-सा,
कोई न कहे अधूरी तोला मासा तोड़ लो,
फिर भी पूरी की पूरी

3. तीन अक्षर का मेरा नाम
उल्टा सीधा एक समान
चिकनाई है रहती मुझमें
ज्यादा खाओगे तो गड़बड़ काम

4. गोल गोल चीज मैं बहुत ही श्रेष्ठ हूँ
मानो मेरी इसको तुम सच समझो ना गप,
जब मैं रूठ जाऊँ तो हो जाए दुनिया ठप

5. लाल बैल बड़ा प्यारा लगे,
पर टेढ़ा सिंग डराता है,
छूने को जब हाथ बढ़ाओ
हाथ नोच भगाता है.

6. तीन अक्षर का मेरा नाम
मध्य कटे तो सार बनूंगा
अंत कटे तो सब खाए,
जो भारत के तीन ओर दिखाए.

7. ऐसे वाहन का नाम बताइए
जिसका नाम आगे पीछे करने पर भी अर्थ में कोई भी बदलाव नहीं होती

8. ना किसी से प्रेम ना किसी से बैर
फिर भी लोग लेते मेरी रोज खैर
सब के गानों की रौनक है बढाती
फिर भी मुझ पर एक थप्पड़ पड़ती.

9. बरगद के वृक्ष के नीचे चार लोग बैठे हैं.
लंगड़ा बहरा अंधा लूला.
पेड़ से आम गिरने पर.
सबसे पहले कौन उठाएगा.

उत्तर:-1. आम 2. पुरी 3.डालडा 4. पहिया 5. गुलाब फूल 6. सागर 7. जहाज
8. ढोलक 9..बरगद में आम नहीं फलते

बेहतर की उम्मीद

रचनाकार-अनिता चन्द्राकर

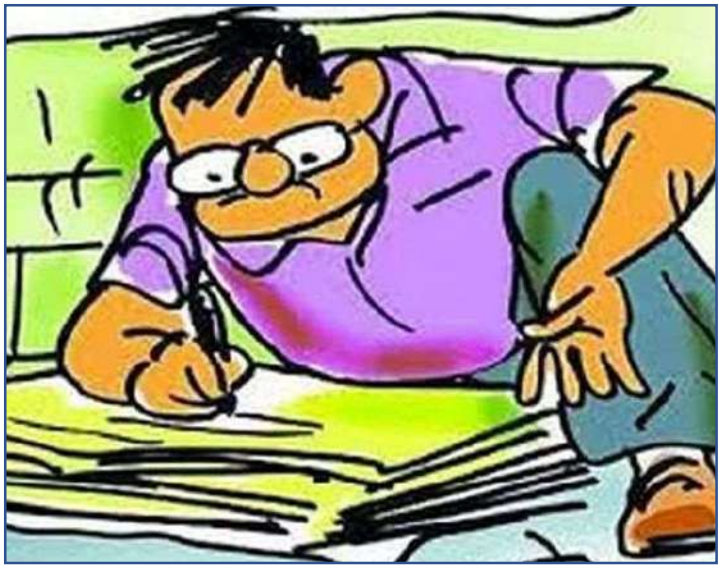

बेहतर की उम्मीद रखिये हमेशा, मुश्किलें हार जाएगी.
निकलेंगे किसलय डालियों में, जीवन में बहार आएगी.

दुख की बदली छँट जाएगी, बस मत छोड़ना कभी आस.
इंद्रधनुषी किरणों को देख, भर जाएगा पुनः नव उल्लास.

आज बन्द है दरवाज़े घरों के, झरोखों से रोशनी आएगी.
धैर्य रख कुछ दिन और, ज़िन्दगी पटरी पर लौट आएगी.

आज परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं, चारों तरफ़ दर्द का डेरा.
बिखरा बिखरा सा मन है, आओ कर दे ख़ुशियों का घेरा.

सम्भाल ले ख़ुद को साथी, ये काली रात भी कट जाएगी.
थम जाएगी आँधियाँ, मुस्कुराती सुबह नव सन्देश लाएगी.

छत में रखना पानी

रचनाकार-सोमेश देवांगन

कहती सब से हाथ जोड़ चिड़िया रानी.
छत पर रखना सब थोड़ा दाना पानी..

गर्मी बढ़ गई धूप बढ़ लगा मुझे डराने.
जाऊँ किधर मैं अपनी प्यास बुझाने.

दोपहर की तेज धूप देख मैं डर जाती.
भूख लगे फिर भी मैं दाना नहीं पाती..

मैं चिड़िया हाथ जोड़ करती हूँ निवेदन.
मदद करो भूखे प्यासे न कटे मेरा जीवन..

लो प्रतिज्ञा रखेंगें छत पर हम दाना-पानी.
भूखी प्यासी नहीं रहेगी हमारी चिड़िया रानी..

प्रणाम

रचनाकार-संतोष कुमार कौशिक

प्रणाम, प्रणत शब्द से बना है जिसका अर्थ है.नम्र होना,विनीत होना या किसी के सामने सिर झुकाना.यह परंपरा भारत में आदिकाल से है. सामान्य हिंदी में प्रणाम का अर्थ अभिवादन से है अर्थात अपने से बड़ों को आदर पूर्वक अभिवादन करने व आशीर्वाद प्राप्त करने की प्रक्रिया ही प्रणाम कहलाती हैं. शास्त्रों में कहा गया है कि जो व्यक्ति सुशील और विनम्र होते हैं, बड़ों का अभिवादन और सम्मान करने वाले होते हैं तथा अपने बुजुर्गों की सेवा करने वाले होते हैं उनकी आयु, विद्या,कीर्ति और बल में सदैव वृद्धि होती रहती है इसलिए माताएँ छोटे-छोटे बच्चों को भी जय-जय करके प्रणाम करना सिखाती हैं. जीवन में प्रणाम की बड़ी महत्ता है प्रणाम में उन्नति की चाबी होती है.

रामायण में तुलसीदास जी ने भगवान श्री राम की बाल लीलाओं का वर्णन करते हुए कहा है कि-

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा. मातु पिता गुरु नावहिं माथा..

भगवान श्री राम सुबह उठते ही माता-पिता और गुरु का आशीर्वाद प्राप्त कर अपनी दिनचर्या प्रारंभ करते हैं. श्रीराम ने यह सब लीलाएँ इसलिए कीं ताकि सभी,किसी भी कार्य को करने के पूर्व बड़ों का आशीर्वाद प्राप्त करें.

प्रणाम से संबंधित मार्कण्डेय जी की कथा

मार्कण्डेय जी अल्पायु थे.उसके पिता ने शीघ्र ही मार्कण्डेय का जनेऊ संस्कार कराकर उन्हें प्रणाम की दीक्षा दी और समझाया कि जो भी व्यक्ति तुम्हारे सामने आए उसे प्रणाम करना. यह मार्कण्डेय जी का नित्य नियम था कि जो भी व्यक्ति उनके सामने आता वह उसे प्रणाम किया करते थे. एक बार सप्त ऋषि मार्कण्डेय जी के सामने आए और मार्कण्डेय जी ने उनके चरण स्पर्श किए तब सप्त ऋषियों ने उन्हें दीर्घायु होने का आशीर्वाद प्रदान किया, किंतु जब उन्हें यह पता चला कि मार्कण्डेय तो अल्पायु है,तब वे मार्कण्डेय को लेकर ब्रह्माजी के पास गए. ब्रह्माजी के पास जाकर मार्कण्डेय जी ने उनके चरण स्पर्श किए तब ब्रह्माजी ने भी उन्हें दीर्घायु होने का आशीर्वाद दिया. सप्त ऋषियों ने ब्रह्माजी से कहा कि यह बालक तो अल्पायु है अतः हमारा वरदान झूठ साबित होगा, तब ब्रह्माजी ने कहा कि अब यह बालक कई कल्पों तक जीवित रहेगा तथा दीर्घायु रहेगा. जब यमराज मार्कण्डेय के प्राण लेने आए तब महाकाल शिव ने उन्हें भगा दिया. इस तरह मार्कण्डेय द्वारा प्रणाम करने पर वे दीर्घायु हो गए.

महाभारत में भी एक प्रसंग है जो प्रणाम के महत्व को दर्शाता है, वह प्रसंग इस प्रकार है-

महाभारत का युद्ध चल रहा था, एक दिन दुर्योधन के व्यंग्य से आहत होकर भीष्म पितामह घोषणा कर देते हैं कि वह अगले दिन पांडवों का वध कर देंगे. उनकी घोषणा का पता चलते ही पांडवों के शिविर में बेचैनी बढ़ गई. भीष्म की क्षमता के बारे में सभी को पता था इसलिए सभी अनिष्ट की आशंका से परेशान हो गए.

श्री कृष्ण द्रौपदी को लेकर भीष्म पितामह के शिविर पहुँचे. उन्होंने द्रौपदी से कहा कि अंदर जाकर पितामह को प्रणाम करो, द्रौपदी ने अंदर जाकर पितामह भीष्म को प्रणाम किया तो, उन्होंने द्रौपदी को अखंड सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद दिया. इसके बाद पितामह ने द्रौपदी से पूछा-क्या श्री कृष्ण तुम्हें यहाँ लेकर आए हैं? द्रौपदी ने कहा-हाँ ! वे कक्ष के बाहर ही खड़े हैं. यह सुनकर पितामह भीष्म कक्ष के बाहर आ गए और दोनों ने एक दूसरे को प्रणाम किया. पितामह भीष्म ने कहा उन्हें आभास था कि उनके एक वचन को, उनके ही दूसरे वचन से काट देने का कार्य श्री कृष्ण ही कर सकते हैं.

शिविर से लौटते समय श्रीकृष्ण ने द्रौपदी से कहा कि तुम्हारे एक बार जाकर पितामह को प्रणाम करने से तुम्हारे पतियों को जीवनदान मिल गया, प्रणाम में बहुत शक्ति होती है अगर वह प्रतिदिन पितामह भीष्म, धृतराष्ट्र, द्रोणाचार्य आदि को प्रणाम करती रहीं होतीं और इसी प्रकार दुर्योधन, दु:शासन आदि की पत्नियाँ भी पांडवों को प्रणाम करती होती तो शायद महाभारत युद्ध की नौबत ही न आती.

प्रणाम से होने वाले लाभ

बड़ों का अभिवादन करने के लिए चरण छूने की परंपरा सदियों से रही है. सनातन धर्म में अपने से बड़े के आदर के लिए चरण स्पर्श उत्तम माना गया है. प्रत्यक्ष और परोक्ष तौर पर चरण स्पर्श के कई फायदे हैं...

1. चरण छूने का अर्थ है पूरी श्रद्धा से किसी के समक्ष नतमस्तक होना, इससे विनम्रता आती है और मन को शांति मिलती है. चरण छूने वाला दूसरों को भी अपने आचरण से प्रभावित करने में सफल होता है.

2. जब हम किसी आदरणीय व्यक्ति के चरण छूते हैं, तो आशीर्वाद के तौर पर उनका हाथ हमारे सिर के उपरी भाग को और हमारा हाथ उनके चरण को स्पर्श करता है. ऐसी मान्यता है कि इससे उस पूजनीय व्यक्ति की सकारात्मक ऊर्जा आशीर्वाद के रूप में हमारे शरीर में प्रवेश करती है, इससे हमारा आध्यात्मिक तथा मानसिक विकास होता है.

3. शास्त्रों में कहा गया है कि हर रोज बड़ों के अभिवादन से आयु, विद्या, यश और बल में बढ़ोतरी होती है.

4. इसका वैज्ञानिक पक्ष कुछ इस तरह है: न्यूटन के नियम के अनुसार, दुनिया में सभी चीजें गुरुत्वाकर्षण के नियम से बँधी हैं, गुरुत्व भार सदैव आकर्षित करने वाले की ओर जाता है. हमारे शरीर पर भी यह नियम लागू होता है, सिर को उत्तरी ध्रुव और पैरों को दक्षिणी ध्रुव माना गया है. इसका अर्थ यह हुआ कि गुरुत्व ऊर्जा या चुंबकीय ऊर्जा उत्तरी ध्रुव से प्रवेश कर दक्षिणी ध्रुव की ओर प्रवाहित होकर अपना चक्र पूरा करती है. शरीर में उत्तरी ध्रुव (सिर) से सकारात्मक ऊर्जा प्रवेश कर दक्षिणी ध्रुव (पैरों) की ओर प्रवाहित होती है. दक्षिणी ध्रुव पर यह ऊर्जा असीमित मात्रा में स्थिर हो जाती है. पैरों की ओर ऊर्जा का केंद्र बन जाता है. पैरों से हाथों द्वारा इस ऊर्जा के ग्रहण करने को ही हम चरण स्पर्श कहते हैं.

5. चरण स्पर्श और चरण वंदना भारतीय संस्कृति में सभ्यता और सदाचार का प्रतीक है.

6. माना जाता है कि पैर के अंगूठे से भी शक्ति का संचार होता है. मनुष्य के पाॅंव के अंगूठे में भी ऊर्जा प्रसारित करने की शक्ति होती है.

7. मान्यता है कि बड़े-बुजुर्गों के चरण स्पर्श नियमित तौर पर करने से कई प्रतिकूल ग्रह भी अनुकूल हो जाते हैं.

8. इसका मनोवैज्ञानिक पक्ष यह है कि जिन लक्ष्यों की प्राप्ति को मन में रखकर बड़ों को प्रणाम किया जाता है, उस लक्ष्य को पाने का बल मिलता है.

9. यह एक प्रकार का सूक्ष्म व्यायाम भी है. पैर छूने से शारीरिक कसरत होती है. झुककर पैर छूने, घुटने के बल बैठकर प्रणाम करने या साष्टांग दंडवत से शरीर लचीला बनता है.

10. आगे की ओर झुकने से सिर में रक्त प्रवाह बढ़ता है, जो स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है.

11. प्रणाम करने का एक लाभ यह भी है कि इससे हमारा अहँकार कम होता है.

इन्हीं कारणों से बड़ों को प्रणाम करने की परंपरा को नियम और संस्कार का रूप दे दिया गया है.

एक पेड़ सौ पुत्र समान

रचनाकार-सुन्दर लाल डडसेना "मधुर"

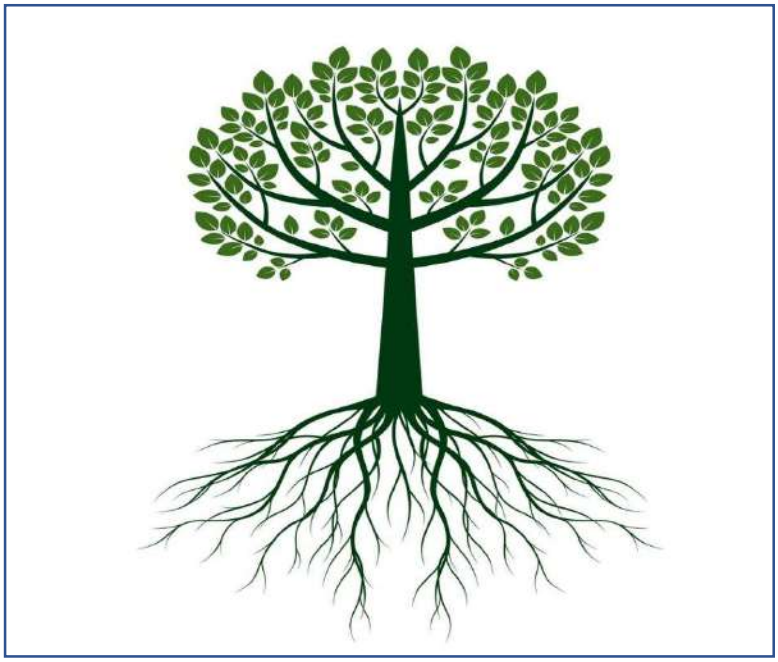

कटती धरती करे पुकार,वृक्ष लगाकर करो श्रृंगार.
पेड़ रहेगा जीवन में गर, तो साँस हमारी बढ़े अपार.

पेड़-पौधों से उर्वरा छाये, जीवों में नया विश्वास.
जल जंगल जमीन से उपजे, एक नयी अहसास.
गर धरती है हरी भरी, लगती मधुरम आसपास.
पेड़ों से जीता संसार, बिना न इनके जीवन खास.
धरती का श्रृंगार हैं ये, पेड़ों की है दया अपार.
कटती धरती.....

पेड़ है तो पास जीवन,काट न कर तू इसे वीरान.
पेड़ बिना ये जीवन की,बगिया करो न सुनसान.
पेड़ लगाकर जीवन का,कर ले स्व पर एहसान.
आओ मिलकर पेड़ लगाएं,एक पेड़ सौ पुत्र समान.
जल जंगल जमीन से ही,चलता है यह संसार.
कटती धरती.....

आओ मिलकर पेड़ लगाएं,करें धरा का श्रृंगार.
काट काट कर बंजर मानव,करें स्वयं को बीमार.
पेड़ काटना जीवन की,बन न जाये जीवन खार.
आओ मिलकर पेड़ लगाएं,ये जीवन का सार.
जीवन में होगी अनुकूलता,चलता इससे संसार.
कटती धरती.....

आओ हम टीका लगवाएं

रचनाकार-अविनाश तिवारी

आई है संजीवनी घर से निकलो यार
अट्ठारह से ऊपर लगाओ पूरा घर परिवार

जंग जीतना है हमको कोरोना को भगाना है
मास्क लगाकर अच्छे से जीवन को चलाना है.

ये टीका है हथियार हमारा
भय को दूर भगायेगा
आत्मविश्वास प्रबल हो सबका
इससे कोरोना हारेगा.

मत पालो कोई भ्रम टीके से
कोई नुकसान नहीं होता है
भारत की ये खोज अद्भुत
इससे रक्षातंत्र ही बढ़ता है

आगे आओ भाई बहना
जीवन सबका बचाना है
भारत दमके सूर्य सा अपना
सुनहरा सबेरा लाना है.

पुतरा-पुतरी के बिहाव

रचनाकार-सोमेश देवांगन

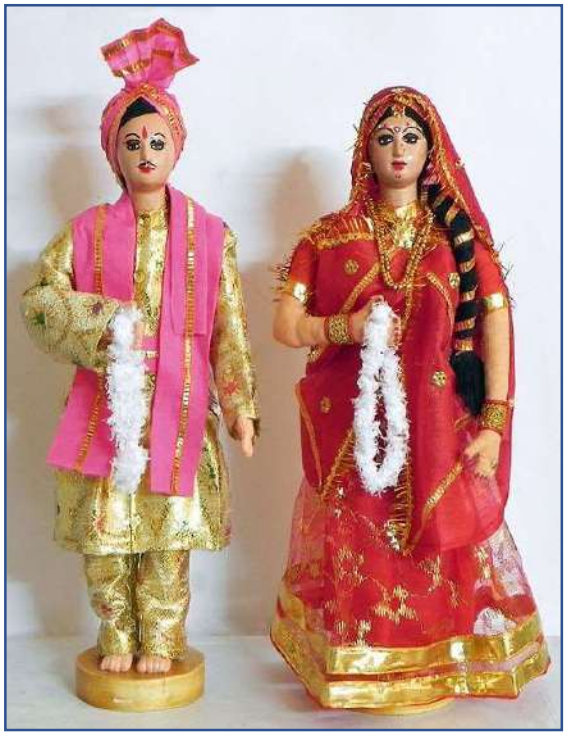

पुतरा-पुतरी के, होही बिहाव.
देखव सुघ्घर, मड़वा छवाव..

डारा-पान, टोर के लाववं.
झालर लगा के, बने सजाव..

छोटे छोटे, मड़वा गड़ाव.
तीर-तीर मा, चउक पुराव..

जल्दी जल्दी, चुलमाटी जाववं.
माटी कोड़ के, तूमन लाववं..

नोनी सुघ्घर, करसा सिरजाव.
ओखर ऊपर, दीया जलाव..

देवता म, तेल हरदी चढ़ाव.
पुतरा-पुतरी म, घलो लगाव..

नान नान कपड़ा, सिलवाव.
मऊर मुकुट, सुग्घर पहिराव..

पुतरा-पुतरी ल, बने सजाव.
उखर मन के, बिहाव रचाव..

आगे बरतिया, बरात परघाव.
सुग्घर अकन दाईज परवाव..

पुतरी-पुतरा के, भावर ला पराव.
इंखर जल्दी, बिहाव ला कराव..

पुतरी-पुतरा के हो गे बिहाव.
अक्ती तिहार ल, सुघ्घर मनाव..

मजदूर

रचनाकार-सीमांचल त्रिपाठी

माथे पर पसीना,
चमके जैसे नगीना.
करती श्रम अपार,
रहे कोई भी महीना..

तन ढकने ठीक,
से हैं कपडे नहीं.
साज और श्रृंगार,
वह जानती नहीं..

बाँध बच्चा पीठ पे,
करती वह मजदूरी.
प्रतिदिन करना काम,
है उसकी मजबूरी..

दिन-दिन धूप मे करे,
वर्षा गर्मी से ना डरे.
अथक मेहनत वो करे,
हंसी-खुशी से है परे..

खुद भूखी रहकर वह,
बच्चों को है खिलाती.
खुद गीले में भी रहकर,
सुखे में है उन्हें सुलाती..

परी रानी

रचनाकार-टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'

परी रानी एक बार मुझे.
ले गयी अपने संसार मुझे..

फिर आकर मैंने देखा यहाँ.
मुझे लगा मैं आया कहाँ?

लग रहा था दृश्य विचित्र.
रंग-बिरंगे थे आकर्षक चित्र.

सियार ढोल बजा रहा था.
बंदर हुआ.. हुआ.. गा रहा था.

कौए की आवाज बड़ी निराली.
साथ दे रही थी कोयल काली..

साँप-नेवला खेल रहे थे.
चीता-हिरण घूम रहे थे..

यहाँ प्रेम शांति एकता भाईचारा.
नहीं अंधेरा, सर्वत्र था उजियारा..

तभी लगा कुछ मुझे ऐसे.
परीरानी मुझे दिये कुछ पैसे..

फिर पाया मैंने बिस्तर अपना.
टूट गया मेर सुंदर सपना..

चलो बीज लगाते हैं

रचनाकार-मनोज कुमार पाटनवार

चलो बीज लगाते हैं, पेड़ बनाते हैं
घर-घर मुहिम चलाते हैं
सभी सदस्य पेड़ लगाते हैं
शीतल पवन चलाते हैं
प्रदूषण को मिटाते हैं

चलो बीज लगाते हैं, पेड़ बनाते हैं
धरती में हरियाली लाते हैं
पिघलते ग्लेशियर को बचाते हैं
बंजर भूमि को कानन बनाते हैं
हो रहे लुप्तप्राय जंतु को बचाते हैं

चलो बीज लगाते हैं, पेड़ बनाते हैं
मिट्टी को कटाव से बचाते हैं
भौम जल स्तर को बढ़ाते हैं
बारिश कराते हैं
पैदावार बढ़ाते हैं

चलो बीज लगाते हैं, पेड़ बनाते हैं
कार्बन डाइऑक्साइड घटाते हैं
ऑक्सीजन लेवल को बढ़ाते हैं
औषधियों के पेड़ लगाते हैं
हर्बल को अपनाते हैं

चलो बीज लगाते हैं, पेड़ बनाते हैं
फलने तक सुरक्षा बढ़ाते हैं
प्रकृति का संतुलन बनाते हैं
परिंदों को बुलाते हैं
घोंसला नई बनाते हैं

चलो बीज लगाते हैं, पेड़ बनाते हैं
धरा को दुल्हन की तरह सजाते हैं
ग्लोबल वार्मिंग से बचाते हैं
अब तो गंभीर हो जाते हैं
सब मिलकर शपथ उठाते हैं

महतारी पूछय सवाल

रचनाकार-सोमेश देवांगन

मोर छत्तीसगढ़ महतारी ह पूछय फेर सवाल.
मोर हरियर अँछरा फेर होगे काबर लाल..

घर के दुश्मन घुन कस कीरा छाती छेदत हे.
दुलरुवा बेटा मन के जीव परान ल लेवत हे..

काबर अतका बाढ़त हावय घोर अत्याचार.
महतारी ला घलो आँखी देखावत हे दुराचार..

ये घुनहा बीमारी ले मोला घलो अब बचावव.
घर के बैरी दुश्मन ल खोज के मार गिरावव..

गाथा राणा प्रताप की

रचनाकार-नरेन्द्र सिंह "नीहार"

आओ बच्चो तुम्हें सुनायें,
गाथा राणा प्रताप की.
मेवाड़ी माटी के चन्दन,
पराक्रमी प्रताप की.

मुगलानी मंसूबों को,
धूल-धूसरित कर डाला.
आन बान शान की खातिर,
संकट में खुद को डाला.

चेतक पर चढ़कर राणा का,
भाला बम-बम बोल गया.
शत्रु सेना काँप उठी,
धरती अम्बर डोल गया.

भामाशाह ने दिया खज़ाना,
साथ मिला वनवासी का.
कभी न झुकने दिया शीश,
निज राजस्थानी माटी का.

हल्दीघाटी की मर्यादा,
थाती स्वाभिमान की.
बल विक्रम साहस शौर्य,
कथा सुनो बलिदान की..

मैं भी एक पिता हूँ

रचनाकार-मनोज कुमार पाटनवार

सुख साधन जुटाता हूँ
दुख में अंदर से रोता हूँ
आँसू नहीं दिखाता हूँ
तिनका जोड़ घर चलाता हूँ
मैं भी एक पिता हूँ
परिवार के लिए जीता हूँ

अपना सुख त्याग कर
सारी जरूरतें पूरी करता हूँ
पसीने से नहाता हूँ
खुद अभावों में जीता हूँ
मैं भी एक पिता हूँ
परिवार के लिए जीता हूँ

परिवार की खुशी में
अपनी खुशी ढूँढता हूँ
उनके हंसने से मैं भी हंसता हूँ
अपना गम छुपाता हूँ
मैं भी एक पिता हूँ
परिवार के लिए जीता हूँ

मेरा भी दिल पिघलता है
घर के हालात देख दहलता है
फिर भी बाहर से
पत्थर दिल ही रहता हूँ
मैं भी एक पिता हूँ
परिवार के लिए जीता हूँ

थकान से बदन कराहता है
फिर भी आह न करता हूँ
संग सबके बैठ जाता हूँ
तो दर्द में भी मुस्काता हूँ
मैं भी एक पिता हूँ
परिवार के लिए जीता हूँ

जिम्मेदारी बखूबी निभाता हूँ
मेहनत से कमाता हूँ
अनुशासन का पाठ पढ़ाता हूँ
गर्व से कहता हूँ
मैं भी एक पिता हूँ
परिवार के लिए जीता हूँ

कोरोना महमारी

रचनाकार-प्रतिभा त्रिपाठी

दो गज की दूरी से,
कोरोना को भगायेंगे
चेहरे पे मास्क लगाकर
जागरुकता फैलायेगें
चलो चलें टीकाकरण केन्द्र इंजेक्शन लगायेंगे

घर में रह रहकर,
योग को अपनायें है
जीवन को स्वस्थ, सुखमय
मिलके हम बनायेगे
घर बैठकर हम सब
कोरोना को भगायेंगे
चलो चलें टीकाकरण केन्द्र इंजेक्शन लगायेंगे

बच्चों की मस्ती छूटी,
खेल-कूद दूर हुआ
नानी घर जाने को,
बच्चे तरस गए,...
जल्दी जल्दी कोरोना भगाना
नियमों का पालन कर
चलो चलें टीकाकरण केन्द्र इंजेक्शन लगायेंगे

कोरोना महमारी आने से
सब हुए दूर-दूर
ना किसी का दुख बाँटे
ना किसी सुख बाँटे
अपने-अपने घर रहकर
कोरोना को भगायेंगे..
चलो चलें टीकाकरण केन्द्र इंजेक्शन लगायेंगे

तनु की सूझबूझ

रचनाकार-टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

स्कूलों में वार्षिक परीक्षा परिणाम घोषित किये जा रहे थे. तनु कक्षा पाँचवीं में प्रथम आयी थी. उसके छोटे भाई शुभम ने भी कक्षा तीसरी की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी. दोनों भाई-बहन स्कूल से आकर बैठक में टेबल पंखा चालू कर सोफे पर बैठ गये. मम्मी-पापा घर पर नहीं थे. दोनों को एक-दूसरे की अंकसूची देखने की इच्छा हुई पर पहले अंकसूची दिखाने के लिए दोनों में से कोई तैयार नहीं था. दोनों में अंकसूची के लिए छीना-झपटी होने लगी.

अचानक शुभम का हाथ पंखे से टकरा गया. चालू पंखे में करंट प्रवाहित होने के कारण उसका हाथ पंखे से चिपक गया. शुभम की चीख सुनकर तनु सहम गयी फिर तुरंत उसने दीवार पर टँगी सायकल की पंचर ट्यूब से शुभम को पकड़कर पंखे से अलग किया. तनु एकदम घबरा गयी. अचेत शुभम को पलंग पर लिटाकर पड़ोस की कौर आंटी को बुलाने गयी. तब तक मम्मी-पापा भी आ गये. तनु ने मम्मी-पापा को घटना की पूरी जानकारी दी. पापा डॉक्टर को बुलाने चले गये. मम्मी शुभम को गोद में लेकर पलंग पर बैठ गयी. मम्मी भी बहुत घबरायी हुई थी.

डॉक्टर के उपचारोपरांत शुभम को होश आया. डॉक्टर तनु के पापा से बोले-"चंद्राकर जी, घबराने की कोई बात नहीं. मैंने इंजेक्शन लगा दिया है. ये टेबलेट्स शाम और सुबह लगातार दो दिन तक देते रहिएगा. " डॉक्टर के जाने के बाद एकत्रित हुए लोग तनु की सूझबूझ की चर्चा करने लगे.

"छोटी सी बच्ची ने क्या दिमाग लगाया. " खान चाचा बोले.

"थैंक गाॅड! " जाॅन अंकल ने भी हामी भरी.

घटना के बारे में सुनकर सभी को आश्चर्य होने लगा. मुसीबत के समय क्या दिमाग लगाया है. वाह, बहुत खूब.

कौर आंटी ने तनु से पूछा-"तनु, तुम ने शुभम का हाथ पंखे से चिपकने पर उसे अलग करने के लिए साइकिल-ट्यूब का ही उपयोग क्यों किया?"

तनु बताने लगी-"आंटी जी, हमारी रूबीना मैडम, जो हमें विज्ञान पढ़ाती हैं. उन्होंने बताया था कि रबड़, चमड़े, मोम, सूखे कपड़े, सूखी लकड़ी विद्युत के कुचालक है. इनमें करंट प्रवाहित नहीं होता. शुभम भाई का हाथ पंखे से चिपकने पर मुझे रबड़ ट्यूब का ख्याल आया और इसी से शुभम को पकड़कर पंखे से अलग किया. " यह सुनकर सभी तनु की सूझबूझ की प्रशंसा करने लगे.

पेड़ नीम का

रचनाकार-डॉ. सतीश चन्द्र भगत

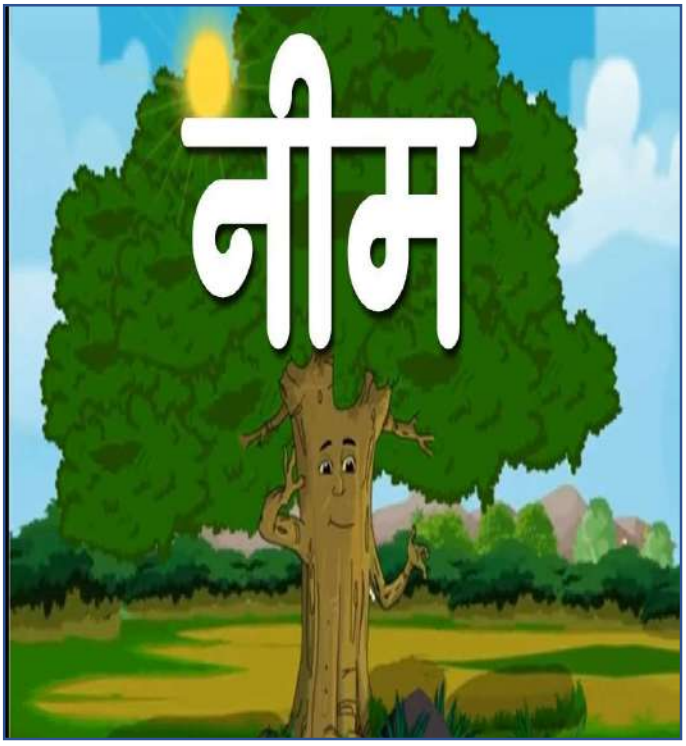

हरा भरा वह पेड़ नीम का,
औषधीय है पेड़ नीम का.

नीम निबौरी कड़वा लेकिन,
है उपयोगी पेड़ नीम का.

दातुन बनता है टहनी से,
शीतल छाया पेड़ नीम का.

चर्मरोग को दूर भगाता,
वैद्य गुणी है पेड़ नीम का.

पंखा

रचनाकार-डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

तीन पंखुड़ी जब मिल जाए,
सरपट-सरपट दौड़ी जाए.
दौड़-दौड़ कर हवा चलाए,
हवा हमें ये मिलती जाए.
नन्हीं गुड़िया हवा ये पाए,
हवा चले तो निंदिया आए.
इसको पंखा कहते हैं,
हर घर में ये रहते हैं.

आम

रचनाकार-मनोज कुमार पाटनवार

आम हूँ मैं आम हूँ
फलों का राजा आम हूँ.
आता मैं कई काम हूँ,
हवन में काष्ठ जलकर,
पूजा संपन्न कराता हूँ.
कलश में पत्ते सजकर,
देव पूजन कराता हूँ.

आम हूँ मैं आम हूँ
फलों का राजा आम हूँ.
बसंत ऋतु का स्वागत,
अपने बौर से मैं करता हूँ.
कोयल भी कुकने लगती है,
पूरे उपवन को महकाता हूँ.

आम हूँ मैं आम हूँ
फलों का राजा आम हूँ,
हर उम्र को लुभाता हूँ,
खट्टे मीठे स्वाद चखाता हूँ,
अचार, मुरब्बा,जेम बनकर,
भोजन का स्वाद बढ़ाता हूँ.

आम हूँ मैं आम हूँ,
फलों का राजा आम हूँ.
जेठ की तपन में छाँव देता हूँ,
पसीने में हवा चला देता हूँ,
बाग में बच्चों को खेलते देख,
मैं भी झूमने लग जाता हूँ.

आम हूँ मैं आम हूँ,
फलों का राजा आम हूँ.
लंगड़ा, दशहरी और कलमी,
कई रूपों में पाया जाता हूँ.
लाल, पीला और हरा रंग में,
सबके मन को लुभाता हूँ.

आम हूँ मैं आम हूँ,
फलों का राजा आम हूँ.
लोग मुझे पत्थर मारते हैं,
फिर भी देता फल आम हूँ.
जब मेरा तना सूख जाता है,
इमारती, जलाऊ बन जाता हूँ.

आम हूँ मैं आम हूँ,
फलों का राजा आम हूँ.
सबको देता एक संदेश,
भविष्य में आम बचाना है.
खूब लगाना आम सभी,
मिल पाएगा आम तभी.

नन्ही सी लड़की

रचनाकार-सीमा यादव

मीरा नाम की एक छोटी-सी लड़की अपने मासूम और चंचल स्वभाव के कारण सबकी चहेती और लाडली थी. मीरा बहुत समझदार थी. मीरा जब छोटी थी तभी उसके माता-पिता आपस में तालमेल न होने की वजह से अलग हो गए थे. मीरा के पालन-पोषण की सारी जिम्मेदारी उसकी माँ पर आ गयी थी. मीरा की माँ धार्मिक स्वभाव की थी, उनका प्रभाव मीरा पर भी था. मीरा अब बड़ी हो रही थी, इसलिए उसकी माँ मीरा की आगे की पढ़ाई पर आने वाले खर्च की व्यवस्था को लेकर चिंतित रहती थीं. उनके पास इतना धन नहीं था कि मीरा को महँगी फीस वाली उच्च शिक्षा दिला सकें. मीरा के शिक्षक ने मीरा की योग्यता को पहचान कर उसे नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा में शामिल होने के लिए प्रेरित किया. मीरा ने प्रवेश परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त किए और उसका चयन हो गया. मीरा ने छठवीं से बारहवीं तक की निःशुल्क शिक्षा नवोदय विद्यालय से पूरी की. मीरा अब बौद्धिक रूप से परिपक्व हो गयी थी. वह अपनी माँ की भावनाओं को भलीभाँति समझती थी. मीरा आगे की शिक्षा भी पूरी करना चाहती थी, परन्तु आर्थिक समस्या के कारण सोच में पड़ी रहती कि क्या करूँ जिससे मेरी आगे की पढ़ाई पूरी हो सके?

एक दिन मीरा ने समाचार पत्र में एक प्रतियोगिता का विज्ञापन देखा. प्रतियोगिता मे अच्छे अंक प्राप्त करने पर एक बड़ी राशि पुरस्कार के रूप में मिलनी थी. उसने प्रतियोगिता में भाग लिया और पुरस्कार जीत लिया. उन रुपयों से उसने अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी की. अब मीरा ने स्कूल की अध्यापिका के रूप मे कार्य करने का निर्णय किया और आत्मनिर्भर हो गई. मीरा अपने समाज की पहली इतनी शिक्षित लड़की है. मीरा ने अपने समाज की सभी लड़कियों के लिए आदर्श स्थापित करके यह साबित कर दिया है कि यदि सच्चे मन से पूरी शक्ति लगाकर किसी चीज को पाने की कोशिश करें, तो सफलता अवश्य मिलती है.

बीते पल

रचनाकार-कु सोनम, केजीबीवी दुल्लपुर बाजार, पंडरिया, कबीरधाम

याद आते है वो पल,दिल से,
शुरू होते थे जो, घण्टियों के टिन-टिन से.

प्रार्थना के समय गर्व से, राष्ट्रगान का गाना,
क्लास में पढ़ाई के साथ मस्ती,
फिर दोपहर में मध्यान्ह भोजन का खाना.
याद आते है वो पल, दिल से,
शुरू होते थे जो घण्टियों के टिन-टिन से.

अपनी-अपनी बारी में स्कूल की सफाई,
घर के काम में कभी इतनी खुशी नहीं आई.
लौट आओ दिन अब,हम याद करते है स्कूल को,
स्कूल अब सपना लगता है, भूल गए सब मूल को.

याद आते है वो पल दिल से,
शुरू होते थे जो घण्टियों के टिन-टिन से.

सुनो मन की बात

रचनाकार-यशवंत कुमार चौधरी

साथी सुन ओ मेरे
सब हाथ में है तेरे
तू चाहे तो बदलेगी
ये हाथ की लकीरें
साथी सुन ओ मेरे
सब हाथ में है तेरे
बदल तू मन की तस्वीर
बदल दे तू अपनी तकदीर
तू चाहे तो आसमां छू ले
तू चाहे तो मंजिल पा ले
वक्त के साथ-अपनों के पास
कर ले कुछ अनोखा खास
सूरज की पहली किरण के साथ
कर्म करो जीवन की नई उजास के साथ

हाँ ! बेहद खास हो तुम
इसलिए तो अपनों के पास हो तुम
अब भी वक़्त है जागो साथी
सुन लो मन की बात साथी

हमारे पौराणिक पात्र-ब्रह्मगुप्त

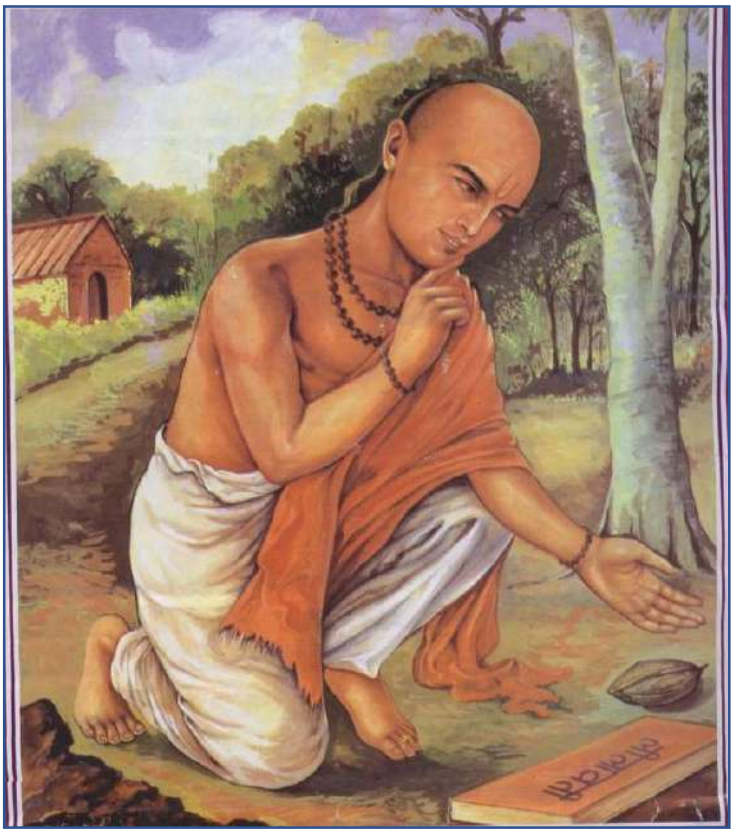

ब्रह्मगुप्त एक महान गणितज्ञ थे. उन्होंने तत्कालीन समय में भारतीय गणित को सर्वोच्च शिखर पर पहुँचा दिया था. इसीलिए बारहवीं शताब्दी के विख्यात ज्योतिष गणितज्ञ भास्कराचार्य ने उन्हें 'गणक चक्र चूड़ामणि' के नाम से संबोधित किया था. गणित के क्षेत्र में ब्रह्मगुप्त की सबसे बड़ी उपलब्धि है अनिवार्य वर्ग समीकरण -

अय2 +1= र2 का हल प्रस्तुत करना.

पाश्चात्य गणित के इतिहास में इस समीकरण के हल का श्रेय जोल पेल (1688ई.) को दिया जाता है और 'पेल' समीकरण के नाम से ही जाना जाता हैं. परंतु वास्तविकता यह है कि पेल से 1000 वर्ष पहले ब्रह्मगुप्त ने इस समीकरण का हल प्रस्तुत कर दिया था. इसके लिए ब्रह्मगुप्त ने जिन प्रमेयिकाओ की खोज की थी उन्हें भारतीय गणित में 'भावना' कहा गया है.

ब्रह्मगुप्त का जन्म 598 ई. में पश्चिम भारत के भिन्नमाल (वर्तमान मध्य प्रदेश) में हुआ था. उस समय यह नगर गुजरात की राजधानी था. भास्कराचार्य ने उनका जन्म-स्थान पंजाब में भिलनाल्का बतलाया है. ब्रह्मगुप्त के पिता का नाम विष्णुगुप्त था और विष्णु गुप्त के पिता का नाम जीश्नुगूप था. वह वैश्य परिवार के थे. डॉक्टर वी. ए. अस्मित के अनुसार ब्रह्मगुप्त

उज्जैन में रहते थे और वहीं उन्होंने अपना कार्य किया. भास्कराचार्य के अनुसार वह चांप वंशी राजा के राज्य में रहते थे.

ब्रह्मगुप्त ने ज्योतिषशास्त्र के दो प्रसिद्ध ग्रंथों की रचना की थी. इन ग्रंथों के नाम हैं - ब्रह्म स्फुट सिद्धांत और खंड-खाघ. ब्रह्म सिद्धांत की रचना ब्रह्मगुप्त ने 30 वर्ष की अवस्था में (सन् 628) की थी. ब्रह्मगुप्त के इन दोनों ज्योतिष ग्रंथों का अनुवाद अरबी भाषा में 'सिंद-हिंद' और अलत-अरकन्द नाम से किया गया. महान ज्योतिषी और गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त के इन ग्रंथों से ही अरबो को पहली बार भारतीय गणित और ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त हुआ. बाद में अरबों ने ही इस ज्ञान को यूरोप तक पहुँचाया. अब यह ग्रंथ उपलब्ध नहीं है. हमें स्मरण रखना चाहिए कि अरबी गणितज्ञों और ज्योतिषियों के गुरु ब्रह्मगुप्त थे.

ब्रह्मगुप्त से पहले भारत में अनेक सिद्धांत ग्रंथ थे. उनमें से एक था ब्रह्म सिद्धांत. ब्रह्म सिद्धांत की बातें पुरानी हो गई थीं तथा नवीन ज्ञान से उनका मेल नहीं था अतः ब्रह्मगुप्त ने नया सिद्धांत लिखा. 'स्फुट' का अर्थ है फैलाया हुआ अथवा संशोधित.

'ब्रह्मस्फुटसिद्धांत' उनका पहला ग्रन्थ माना जाता है जिसमें शून्य का एक अलग अंक के रूप में उल्लेख किया गया है. यही नहीं, बल्कि इस ग्रन्थ में ऋणात्मक अंकों और शून्य पर गणित करने के सभी नियमों का वर्णन भी किया गया है. ये नियम आज की समझ के बहुत करीब हैं. हाँ, एक अन्तर अवश्य है कि ब्रह्मगुप्त शून्य से भाग करने का नियम सही नहीं दे पाये: ०/० = ०.

ब्रह्मगुप्त के ग्रंथ में बीजगणित सबसे महत्वपूर्ण विषय हैं. बीजगणित को उन्होंने कुत्तक की संज्ञा दी हैं और कुत्तकाध्याय मे इसका ज्ञान प्रदान किया है. ब्रह्मगुप्त ने बीजगणित का पर्याप्त विकास किया और ज्योतिष के प्रश्न हल करने में उसका प्रयोग किया. समीकरणों के विषय में ब्रह्मगुप्त ने नए हल सुझाए. इस प्रकार उन्होंने अंक गणित, बीजगणित तथा रेखागणित तीनों पर प्रकाश डाला और π का मान 10 मानकर चले. वर्गीकरण की विधि का वर्णन सर्वप्रथम ब्रह्मगुप्त ने ही किया तथा विलोम विधि का वर्णन भी बड़ी अच्छी तरह से किया. गणित अध्याय शुद्ध गणित में ही है. इस में जोड़ना, घटाना आदि ट्रेराशिक भांड, प्रतिभांड आदि हैं. अंकगणित परिपाटी गणित में है - त्रेनि व्यवहार, क्षेत्र व्यवहार, त्रिभुज, चतुर्भुज आदि के क्षेत्रफल जानने की रीति, चित्र व्यवहार, त्रैवाचिक व्यवहार, राशि व्यवहार, छाया व्यवहार, आदि 24 प्रकार के अध्याय इसके अन्तर्गत हैं.

ब्रह्मगुप्त सूत्र

ब्रह्मगुप्त का सबसे महत्वपूर्ण योगदान चक्रीय चतुर्भुज पर है. उन्होने बताया कि चक्रीय चतुर्भुज के विकर्ण परस्पर लम्बवत होते हैं. ब्रह्मगुप्त ने चक्रीय चतुर्भुज के क्षेत्रफल निकालने का सन्निकट सूत्र (approximate formula) तथा यथातथ सूत्र (exact formula) भी दिया है.

जहाँ t = चक्रीय चतुर्भुज का अर्धपरिमाप तथा p, q, r, s उसकी भुजाओं की नाप है. हेरो का सूत्र, जो त्रिभुज के क्षेत्रफल निकालने का एक सूत्र है, इसका एक विशिष्ट रूप है.

ब्रह्मगुप्त ने अपना दूसरा ग्रंथ-खंड 67 वर्ष की अवस्था में (665 ई.) लिखा था. इसमें उन्होंने पञ्चांग बनाने का ज्ञान प्रदान किया है अँग्रेज़ विद्वान कोलबर्क ने सन 1817 में ब्रह्मगुप्त के ग्रंथ के कुत्तकध्यय (बीजगणित) का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया था. तब यूरोप के विद्वानों ने जाना कि आधुनिक बीजगणित वास्तव मे भारतीय बीजगणित पर आधारित है. ब्रह्मगुप्त ने ध्यान गुहोपदेश नामक ग्रंथ की भी रचना की थी. उनकी मृत्यु सन 680 ईसवी में हुई थी.

ब्रह्मगुप्त गणित ज्योतिष के बहुत बड़े आचार्य थे. आर्यभट के बाद भारत के पहले गणित शास्त्री 'भास्कराचार्य प्रथम' थे. उनके बाद ब्रह्मगुप्त हुए. ब्रह्मगुप्त खगोल शास्त्री भी थे और आपने 'शून्य' के उपयोग के नियम खोजे थे. गणित के क्षेत्र में अपने महत्वपूर्ण कार्यों के लिए ब्रह्मगुप्त का यश सदैव स्मरणीय रहेगा.

फेफडा दिल पर भारी

रचनाकार-चानी ऐरी

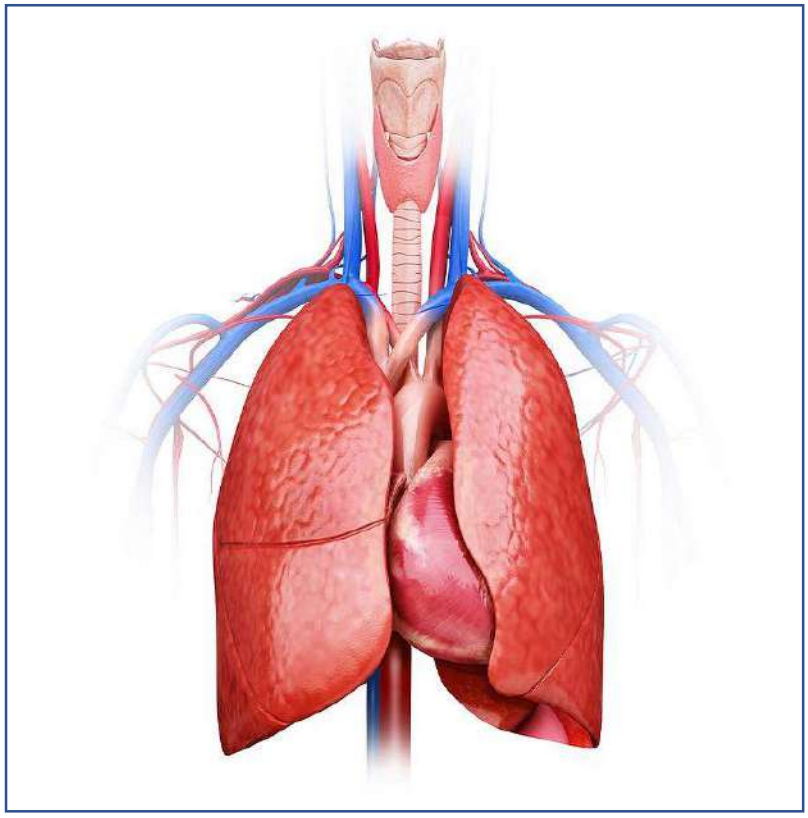

दिल की बातें करते रहे सभी,
फेंफड़े का कुछ बताया ही नहीं.
फेंफड़ा भी स्वाभिमानी निकला,
गुस्सा था, पर जताया ही नहीं.

इतना नाराज थे ऐ दोस्त!
तो कम से कम जताया तो होता.
दिल की जगह तुम भी ले सकते थे,
बस एक बार बताया तो होता.

दिल का क्या है वो तो टूटता है,
फिर जुड़ जाया करता है.
ऐ फेंफड़े! तू गर नाराज़ हो तो
मौत की तरफ मुड़ जाया करता है.

ऐसा पता होता तो तुझे
अलग ही सम्मान दिलाया होता,
अपनी महबूबा को दिल से नहीं,
तुझसे मिलाया होता.

रिश्ते सारे तूने लीले,
जो दोस्त, सगे और अपने थे.
बंद किया उन सभी आंखों को,
जिनमें लाखों सपने थे.

खैर अब बता करना क्या है,
और क्या नहीं करना है.
जिंदा रहने दे इस जहाँ में,
हमको अभी नहीं मरना है.

अब बंद करो ये बरबादी,
और मानस जन को माफ करो.
लोगों की सांसें लौटा दो,
और अपना मन भी साफ करो.

तेरी फितरत पहचान गए,
सम्मान तेरा लौटाएंगे.
"लंग्स डे" भी होगा भारत में अब,
तुझपर भी अभियान चलाएंगे..

एक पेड़

रचनाकार-वीरेन्द्र कुमार साहू

छोटे बीज के अंकुरण से,
बनता एक प्यारा पौधा.

पौधे को जब बरसो सहेजा,
तब जाकर पेड़ हैं बनता.

होता सफर लंबा उसका,
जीवन के लिए अनमोल होता.

देता ऑक्सीजन छाँव भी,
कई पंछियों का आश्रय भी.

अब तो सब जाग जाओ,
हरा भरा ये जग कर जाओ.

एक पेड़ सबके लिए
प्रकृति का वरदान है होता..

माँ

रचनाकार-साक्षी पत्रवाणी, दसवी, शा. उ. मा. विद्यालय, पंधी

प्यारी जग से न्यारी माँ,
खुशियाँ देती सारी माँ.

चलना हमे सिखाती माँ,
मंजिल हमे दिखाती माँ.

सबसे मीठे बोल है माँ,
दुनिया में अनमोल है माँ.

खाना हमें खिलाती है माँ,
लोरी गाकर सुलाती है माँ.

प्यारी जग से न्यारी माँ,
खुशियाँ देती सारी माँ..

कोरोना

रचनाकार-नंदिनी राजपूत

जिस वैश्विक महामारी से,मचा है भू में हाहाकार
नाम है उसका कोरोना,नहीं है उसका कोई आकार.

अदृश्य है वह राक्षस, छिपा है हर कण-कण में
जाने किस घड़ी में,जीव-मानुष को जकड़ ले.

पर हम भी है मानव, हार नहीं मानेंगे
कोरोना रुपी दानव को,वैक्सिनेशन से मारेंगे

लॉकडाउन का पालन करके,घर में सुरक्षित रहेंगे.
घर के सदस्य हो या पड़ोसी,दूर से ही नमस्ते कहेंगे.

सर्दी-खाँसी हो या बुखार,डॉक्टर के पास जाओ
जल्दी ठीक हो जाओगे बिल्कुल ना घबराओ.

दो गज दूरी मास्क है जरूरी, यह नियम अपनाएंगे
उस अदृश्य राक्षस को,भारत से दूर भगाएंगे.

साबुन हो या सैनीटाइजर,बार-बार इस्तेमाल करेंगे
जीवन में आगे बढ़ना है तो,कोरोना से नहीं डरेंगे.

जन जागरूकता अभियान चलाकर, लोगों को जागृत करेंगे
गाँव बस्ती हो या शहर, मिलजुल कर हम कोरोना से लड़ेंगे..

लालच के फल बुरा होथें

रचनाकार-हिमाँशु, कक्षा ग्यारहवीं, शा. उ. मा. वि. पहंडोर, पाटन, दुर्ग

मँझनिया के बेरा रहय, खाना-पीना खाय के बाद, मई-पिला घाम के रहत ल अपन-अपन कुरिया म बेरा ढारत रहय. दाई अऊ बाबू ह अपन कुरिया म चल दिस. सीमा ह अपन बबा बड़कादाई के तीर म जादा पइधे रहय. ओई मन करा सुतय, बबा अऊ बड़का दाई मन के नींद ह परगे. ओमन के नाक ह घुरूर,घुरूर बाजत रहय. सीमा ह कले चुप उठीस, ओकर गोड़ हाथ ह एको कनी नइ बाजिस. फईरका ल हेर के कुरिया ल बाहिर निकलगे.

लईका मन के नींद ह मँझनिया कहाँ के परथे. ओमन ल तो रंग-रंग के खुरापाती करै के उदीम आवत रहिथे. सीमा ह अपन ममा के बेटी ल घलो बला लिस. "अरे नीता चल आज हमर बोईर के रूख तरी खेले जाबो. " नीता घलो ह लुक लुकाय रहय खेले बर.

दूनो संगी बोईर रूख के तरी म आ गीन. नीता कहिस "अब काय करबोन रे सीमा..... "

सीमा ह अबड़ चंचल बुध के लईका रहिस. ओ हर कहिस "चल आज बोईर गुठलू बिनबो, अऊ ओकर चिरौंजी निकालबोन, जब एक कटोरी हो जाही त गुर डारके लाडू बनाबो. "

नीता कइथे, "जमो बोईर ह तो झर गे हे रे.... ऊपर-ऊपर म सुखड़ी-सुखड़ी कस बाँहचे हे. मैं रूख म चढ़ के हलाहू अऊ तैं बिनबे. "

नीता ह रूख म चढ़के हला डारिस. झट-पट बने एक सुपेली अकन सुक्खा-सुक्खा बोईर अऊ गुठलू किंदर-किंदर के खोज-खोज के बिन डारिन.

तीर-तखार ले पथरा ले आनिन अऊ ठुक-ठुक, कुच-कुच के चिरौंजी ल कटोरी म धरत गीन. बीच बीच म सुखड़ी-सुखड़ी बोईर र खावतो जाय. एती बबा ह ठुक-ठुक के अवाज ल सुनिस," काय ठुक-ठुक करथे लईका मन रे, घर म रहिबे मँझनिया कहूँ झन जाबे बेटी कहे रहें त कले चुप भाग गे हे. " ओ हर अपन ललहूँ रंग के पटकू ल मुड़ी म ओढ़के बारी डहर हाँक पारत गिस.

" नोनी ओ... सीमा, ए सीमा अरे, घाम म का कुचरत हो लईका हो..... " सीमा ह ओतके बेरा एक ठन बोईर ल मुँह म भरे रहय. बबा के हाँक परई ल सुनिस त हड़बड़ी म गुठलू ल लील डारिस. अब बोईर के गुठलू ह ओकर घेंच म अरहज गे.

ओक् ओक् ओकयाईस तभो नई निकलिस. न एती जावय न ओती जावय. सीमा के मुँह कान ललिया गे रहय. बबा घलो हड़बड़ा गे मोर लईका ह कैसे अटक घलिस. पीठ ल सारय नरी ल सारय. ओमन के टुड़बुड़-टुड़बुड़ ल सुन के बड़का दाई घलो आ घलिस.

का होगे? एकरे बर कईथौं मँझनिया झन जाये करो हिके एक राहपट कस के चेथी ल मारिस. त गुठलू ह मुँह कोती उगला गे.

सबो के हाय जी लाईस. ओ दिन के बाद सीमा ह मँझनिया के बेरा नइ जावय. घर म बबा अऊ बड़का दाई करा किस्सा धसुनय.

<u>जिंदगी</u>

रचनाकार-सीमा यादव

जिंदगी सिमट सी गई है.
ये कैसी आँधी आई है.

दुःखों का न होता है गम.
पत्थर सा हो गये हैं हम.

ये कैसा जीवन है.
जहाँ देखो वहाँ वीरान है.

अपनों से दूर होकर ये हुआ एहसास.
नहीं है जिंदगी में अब कोई आस.

पल पल दहशत में है जीवन.
कब क्या हो जाए ये सोच घुटता है मन.

कब कौन किससे बिछड़ जाए.
इसी आशंका से मन घबराए.

अनजाने डर ने मन को किया है व्यथित.
आज और कल के बीच अटका है अतीत.

जिंदगी का हरेक पल है कीमती.
इसे न समझो इतनी सस्ती.

मन में जगाओ विश्वास की लहर.
लुप्त हो जायेगा कोरोना का कहर.

करके हिम्मत दिखा दे दुनिया को.
आशा ही है जो कायम रखेगी काया को.

माँ

रचनाकार-मनोज कुमार पाटनवार

माँ तू महान है
बच्चों के लिए जहान है
माँ से ही बच्चे की पहचान है
माँ की सेवा ही इम्तिहान है
जिसने माँ का दिल जीत लिया
वही सबसे सफल इंसान है

माँ चलना बोलना सिखाती
गोद में बिठा खाना खिलाती
अच्छे बुरे का ज्ञान कराती
सोते वक्त लोरी सुनाती
स्कूल के लिए तैयार कराती
पढ़ा-लिखा कर काबिल बनाती

बड़ा होने पर भूल न जाना
जीवन भर सुख पहुंचाना
बेटा होने का फर्ज निभाना
माँ के दूध का कर्ज चुकाना
माँ ने वारी ममता का खजाना
गर्व करे माँ, ऐसा बन के दिखाना

मेहनत का फल

रचनाकार-ओजस्वी साहू, कक्षा सातवीं, सर्वोदय स्कूल धमतरी

एक गाँव में रामू नाम का एक किसान रहता था. उसकी पत्नी का नाम यशोदा था. उनकी एक बेटी थी जिसका नाम गीता था. रामू ने अपने खेत में सब्जी और धान बोई थी. रामू और उसकी पत्नी बहुत मेहनती थे. काम ज्यादा होने पर उसने अपनी बेटी से कहा-बेटी गीता, क्या तुम मेरी मदद करोगी? गीता अपने पिता की बात मान लेती हैं और अपने पिताजी के साथ खेतों में पानी डालने का काम करती है. कुछ दिनों बाद रामू के खेतों से तरह-तरह की सब्जियों की उपज हुई, धान की पैदावार भी बहुत अच्छी हुई. रामू को धान और सब्जियाँ बेचकर बहुत सारा पैसा मिला और उनकी गरीबी दूर हो गई. अब वे खुशी-खुशी रहने लगते हैं.

चिड़ियों की बाते

रचनाकार-प्रिया देवांगन "प्रियू"

सहम गए यूँ सारे पक्षी.
चीं चीं करना छोड़ दिये..
मानव के हालात देखकर.
सब से रिश्ता तोड़ दिये..
एक डाल पर बैठें सारे.
मन ही मन क्या सोच रहें.
भूख लगी है फिर भी देखो.
जाने से संकोच रहें..
फैल रहा है कहर शहर में.
हर तरफ मौत साया है.
पक्षी सारे सहम गये हैं.
ये कैसा दिन आया है..
एक दुजे को देख देख कर.
अपनी भाषा बोल रहें.
मिल कर बैठें सारे साथी.
उलझन सारी खोल रहें..

बेटी के रूप अनेक

रचनाकार-सपना यदु

नन्ही बेटी देखो आज बड़ी हो गई,
थी जो पापा के लिए आसमान की परी,
आज किसी गैर के घर के गमले की कली हो गई.

वो पायल की छन-छन से माँ का बेटी को ढूँढ लेना,
वो हंसी की किलकारी से पापा के गम छीन लेना,

वो घर की राजकुमारी बन सबसे अंत में सोकर उठना,
वो कन्या स्वरूपिणी बन सबसे पहले भोजन करना,

वह पल-पल में जिद और हर चीजों में नखरे करना
वो घर की जिम्मेदारियों से मुक्त सखी सहेलियों के संग घूमना,

देखो यह राजकुमारी आज अपने घर से विदा हो गई.
गैरों के घर जाकर अब बेटी से बहू हो गई..

पूजा की घंटी से आज सबकी नींद उड़ाती है.
सबसे अंत में उठने वाली आज सबसे पहले जाग जाती है..

तरह-तरह के व्यंजन बनाकर सबको वह खिलाती है.
खिला पिला कर सबको वह खुद अंत में खाती है..

यह खाना है वह खाना है माँ को कहने वाली.
याद कर रसोई में चुपके से निर बहाती है..

नाजो लाड में पली जो सबको नखरे दिखाती थी.
खुद की इच्छा दफन कर आज सबके नखरे उठाती है..

त्याग और समर्पण अब है इसकी जिंदगानी.
अब यह बेटी बेटी नहीं कहलाती है अब नारी..

खिड़की

रचनाकार-सीमा यादव

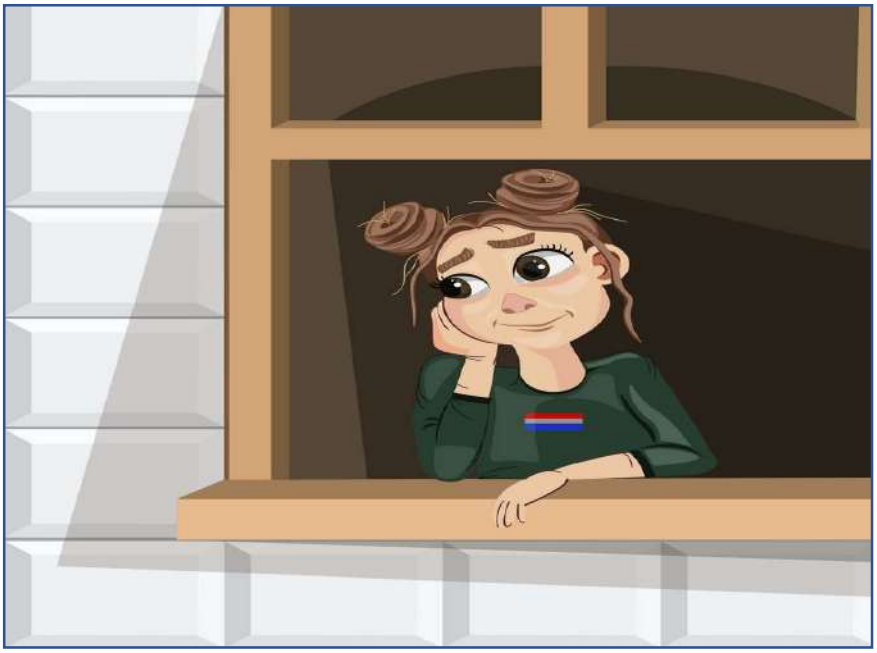

घर की खिड़की बड़ी प्यारी.
हम सबकी है दुनियादारी.

सब्जी वाले, कबाड़ी वाले.
या फिर हो कुल्फी वाले.

हम सभी हैं झट-पट उठ जाते.
खिड़की से जब इनके दर्शन पाते

खिड़की हमें झलक दिखलाती.
हम सबके मन को बहलाती.

खिड़की से जब दिखे मौसम का हाल.
हो जाता सबका मन खुशहाल.

ठण्डी-गरमी, धूप-छाँव का सदा एहसास कराती.
हर दर्द की दवा बनकर हम सबकी सेवा करती.

खिड़की है हम सबकी शान.
जो रखती है हम सबका का ध्यान.

खिड़की की ताजी हवा.
बड़े काम की है ये दवा.

बोईर गुठलू

रचनाकार-सुरेखा नवरत्न

मँझनिया के बेरा रहय, खाना-पीना खाय के बाद, मई-पिला घाम के रहत ल अपन-अपन कुरिया म बेरा ढारत रहय. दाई अऊ बाबू ह अपन कुरिया म चल दिस. सीमा ह अपन बबा बड़कादाई के तीर म जादा पइधे रहय. ओई मन करा सुतय, बबा अऊ बड़का दाई मन के नींद ह परगे. ओमन के नाक ह घुरूर,घुरूर बाजत रहय. सीमा ह कले चुप उठीस, ओकर गोड़ हाथ ह एको कनी नइ बाजिस. फईरका ल हेर के कुरिया ल बाहिर निकलगे.

लईका मन के नींद ह मँझनिया कहाँ के परथे. ओमन ल तो रंग-रंग के खुरापाती करै के उदीम आवत रहिथे. सीमा ह अपन ममा के बेटी ल घलो बला लिस. "अरे नीता चल आज हमर बोईर के रूख तरी खेले जाबो. " नीता घलो ह लुक लुकाय रहय खेले बर.

दूनो संगी बोईर रूख के तरी म आ गीन. नीता कहिस "अब काय करबोन रे सीमा..... "

सीमा ह अबड़ चंचल बुध के लईका रहिस. ओ हर कहिस "चल आज बोईर गुठलू बिनबो, अऊ ओकर चिरौंजी निकालबोन, जब एक कटोरी हो जाही त गुर डारके लाडू बनाबो. "

नीता कइथे, "जमो बोईर ह तो झर गे हे रे.... ऊपर-ऊपर म सुखड़ी-सुखड़ी कस बाँहचे हे. मैं रूख म चढ़ के हलाहू अऊ तैं बिनबे. "

नीता ह रूख म चढ़के हला डारिस. झट-पट बने एक सुपेली अकन सुक्खा-सुक्खा बोईर अऊ गुठलू किंदर-किंदर के खोज-खोज के बिन डारिन.

तीर-तखार ले पथरा ले आनिन अऊ ठुक-ठुक, कुच-कुच के चिरौंजी ल कटोरी म धरत गीन. बीच बीच म सुखड़ी-सुखड़ी बोईर र खावतो जाय. एती बबा ह ठुक-ठुक के अवाज ल सुनिस," काय ठुक-ठुक करथे लईका मन रे, घर म रहिबे मँझनिया कहूँ झन जाबे बेटी कहे रहें त कले चुप भाग गे हे. " ओ हर अपन ललहूँ रंग के पटकू ल मुड़ी म ओढ़के बारी डहर हाँक पारत गिस.

" नोनी ओ... सीमा, ए सीमा अरे, घाम म का कुचरत हो लईका हो..... " सीमा ह ओतके बेरा एक ठन बोईर ल मुँह म भरे रहय. बबा के हाँक परई ल सुनिस त हड़बड़ी म गुठलू ल लील डारिस. अब बोईर के गुठलू ह ओकर घेंच म अरहज गे.

ओक् ओक् ओकयाईस तभो नई निकलिस. न एती जावय न ओती जावय. सीमा के मुँह कान ललिया गे रहय. बबा घलो हड़बड़ा गे मोर लईका ह कैसे अटक घलिस. पीठ ल सारय नरी ल सारय. ओमन के टुड़बुड़-टुड़बुड़ ल सुन के बड़का दाई घलो आ घलिस.

का होगे? एकरे बर कईथौं मँझनिया झन जाये करो हिके एक राहपट कस के चेथी ल मारिस. त गुठलू ह मुँह कोती उगला गे.

सबो के हाय जी लाईस. ओ दिन के बाद सीमा ह मँझनिया के बेरा नइ जावय. घर म बबा अऊ बड़का दाई करा किस्सा धसुनय.

मेरा बेटा

रचनाकार-अजय कुमार यादव

कितना प्यारा मेरा बेटा,
जान से प्यारा मेरा बेटा.
बातें उसकी मीठी मीठी
बातें करता है टूटी फूटी.

हरदम घर में धूम मचाता
सबको अपने पास बुलाता
है वो भी स्कूल को जाता
थक कर घर को है आता.

है दिल की धड़कन बेटा मेरा,
सुबह सवेरे देखूँ उसका चेहरा.
आ के धीरे से मेरे कानों में बोलता
अपनी फ़रमाइशों का पिटारा खोलता.

सपनों को करेगा पूरा मेरा,
आयुष है नाम बेटे का मेरा.
"भूल गए" बातों ही बातों में,
वो सबको है कहता रहता.

मेरी प्यारी माँ

रचनाकार-सुनीता साहू

गंगा की निर्मल धारा है माँ,
धूप में पेड़ की छाया है माँ.

जीवन है, समस्त संसार माँ,
चरणों में स्वर्ग का द्वार है माँ.

इस दुनिया में सबसे न्यारी माँ,
मेरी माँ है कितनी प्यारी माँ.

दुनिया से अनमोल है माँ,
खाना हमें खिलाती है माँ.

हर रोज सुनाती लोरी मुझे माँ,
कभी ना करती आनाकानी माँ.

चलना हमें सिखाती माँ,
मंजिल हमें दिखाती माँ.

बँटने लगी बधाई

रचनाकार-इंद्रजीत कौशिक

शादी करूंगी तो तुमसे ही,
बोली चुहिया रानी.
तुम डोली लेकर आ जाओ,
छोड़ो, अब नादानी.

मेरे पास नहीं कोई बंगला,
ना कोई है कार.
बोला चूहा, ढूंढ़ लो दूजा,
ठहरा मैं बेकार.

क्या करूंगी मैं बंगले का,
नहीं कार से प्यार.
इस दुनिया में तुमसे अच्छा,
मिला नहीं दिलदार.

बन गई शादी तब दोनों की,
गूँज उठी शहनाई.
जोड़ी रहे सलामत अब से,
बँटने लगी बधाई.

प्यारी गौरेया

रचनाकार-सुरेखा नवरत्न

मोनू घर के आँगन में खेल रहा था. तभी उसनें देखा कि आँगन वाली दीवार में पत्थरों के ठीक बीचों-बीच एक खाली जगह में एक गौरैया घोंसला बना रही है. गौरैया अपनी चोंच में तिनका लेकर आती और उसे घोंसले में लगाती,फिर उड़ जाती. फिर दूसरा तिनका लेकर आती फिर उड़ जाती.

कुछ ही दिनों में गौरेया ने घोंसला तैयार कर लिया. अब चिड़ी उसके अंदर आराम किया करती. शायद चिड़ी ने अण्डे दिए थे. जब वह बाहर जाती तब अपनी गर्दन बाहर निकालकर चूँ चूँ की आवाज करती. इधर-उधर देखती और फुर्र.. से उड़ जाती.

एक दिन सुबह-सुबह चिड़ी जोर-जोर से आवाज करने लगी. उसकी आवाज सुनकर मोनू जाग गया. मोनू आँखे मलते हुए कमरे से बाहर निकला और देखा कि एक छोटी सी चिड़िया घोंसले से नीचे गिर गई है और उसके ऊपर चींटियाँ भी चढ़ गई हैं.

मोनू ने झट से उस नन्ही चिड़िया को अपने हाथों में उठा लिया. उसने देखा कि नन्ही चिड़िया को थोड़ी चोट भी लगी थी. मोनू ने चोट वाली जगह पर हल्दी का लेप लगाया और उसे घोंसले में वापस रख दिया. मोनू ने देखा कि घोंसले में चिड़ी का एक और बच्चा भी था.

धीरे-धीरे गौरैया के बच्चे बड़े होने लगे. अब वे भी अपनी माँ के साथ चूँ-चूँ,करते थे. एक दिन मोनू रोटी खा रहा था. तभी छोटी चिड़िया मोनू के पास आकर बैठ गई. मोनू बहुत खुश हुआ.उसने छोटी चिड़िया के मुँह में रोटी का एक छोटा सा टुकड़ा डाल दिया. बच्चा झट से रोटी खाकर उड़ गया.

अब चिड़ी के बच्चे उड़ना सीख गए थे. जब-जब मोनू आँगन में खेलता तब-तब चिड़ी के बच्चे उसके आसपास आ जाया करते. अब वे दोस्त बन गए हैं.

आम

रचनाकार-महेंद्र कुमार वर्मा

होते बड़े रसीले आम,
होते ज़रा हठीले दाम.

अपनी सोहबत में देते,
खुशबू रस के टीले आम.

दिखलाते हैं जलवे खूब,
हरे गुलाबी पीले आम.

पेटी में अल्फांसो आम,
खुल्ले बिके लजीले आम.

आम के दीवाने बोलें
केसर रंग सजीले आम.

सभी फलों पे करते राज,
रस से भरे रसीले आम.

कोरोना के रोना

रचनाकार-सीमांचल त्रिपाठी

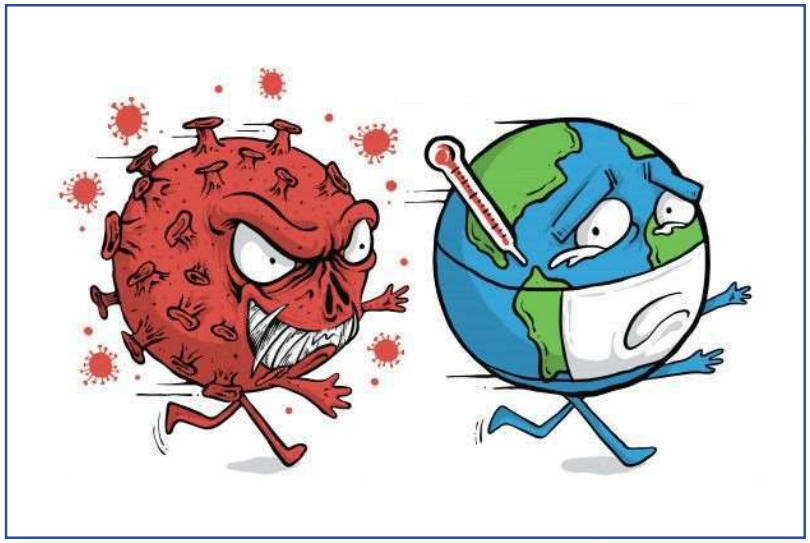

कोरोना के रोना परगे
चिटको शरम नइ आय.

न घाम न जाड़,
न भूख न प्यास.
फैलादिस जग म,
कर दिस मन उदास..
मुंह ल तोपे बर दिन भर मास्क बंधाय
कोरोना के रोना.....

चीन ले जनम धरीस,
अउ मचा दिस हाहाकार.
एकर ठऊर न ठिकाना,
न होवय रूप आकार..
भाग जाही कहिके थारी, घंटी ल बजाय
कोरोना के रोना.....

गुरूजी करत हे ड्यूटी,
किसिम-किसिम करत हे सेवा.
परिवार मन कहत हे,
टीका लगाय घलो बीमा त कर देवा..
मनसे कर सेवा बर ड्यूटी घलो बजाय
कोरोना के रोना.....

डोकरी-डोकरा मन बर,
पहिली चरण म टीका ह आईस.
कोरोना ल भगाय बर,
दू-दू डोज म टीका घलो लगाईस..
तभो ले काबे झपाय ऊपर झपाय
कोरोना के रोना.....

जवान मन के बारी आगे आईस,
दूसर चरण म टीका पैईतालीस पार लगावत हे.
कोनो ल जर आवत हे
कौनो मजा उड़ावत हे
सोच समझ के सबो झन
टीका सुग्घर लगाय.
कोरोना के रोना.....

युवा मन के बारी आगे आईस,
तीसर चरण म टीका ह अठारह पार लगावत हे.
सोचत-सोचत जावत हे
हाँसत-खेलत आवत हे
का करबे संगी ऐ पापी ल,
कोन ह कतक समझाय.

मनसे के समझदारी हे,
घर म सुरक्षित रहे बर समझाय..
साबुन ले हाथ धो के सेनेटाइज कराय
कोरोना के रोना.....

कौआ

रचनाकार-खेमराज साहू

कौआ काका बड़ा सयाना है
सब कहते है वह काना है.
सुबह-सुबह छत पर आता है
अपना गर्दन घुमाता है.
काला है करकस आवाज
काँव-काँव चिल्लाता है.

सोने वाले को जल्दी से जगाता है
रोज-रोज आलस दूर भगाता है.
उड़-उड़कर जब थक जाता है
पेड़ों पर आराम फरमाता है.
रोटी देख झट से आता है
खाकर भूख मिटाता है.
पानी पीकर प्यास बुझाता
सरपट दौड़ वह उड़ जाता है

कौआ काका रोज नया संदेशालाता है
काँव-काँव कर सबको सन्देशसुनाता है.
घर-घर जा जाकर दौड़ लगता है
हम सबको हाल चाल बतलाता है
आस-पास की गन्दगी साफ करता है
साफ़ वातावरण से प्यार करता है.

वृक्ष

रचनाकार-हितेंद्र कोंडागंया

वृक्ष सलोने
वृक्ष सजीले
मन को भानेवाले
अनमोल कहलाते.

धरा की शोभा बढ़ाते
धरा सहचर कहे जाते
सदैव स्थिर रहने वाले
प्राणवायु दान देने वाले.

मानवता के हमसफ़र
कहलाने वाले
सूर्य सा अडिग रहने वाले.

वापस नहीं माँगने वाले
समस्त प्राणिजगत को
मूल रूप से भोजन
उपलब्ध कराने वाले.

अनेकों ईंधन देने वाले
छत्र छाया देने वाले
सुख सुविधाओं के लिए
संसाधन वाले वृक्ष जय.

दीप जलायें

रचनाकार-महेंद्र देवांगन "माटी"

चलो चलें हम दीप जलायें, खुशहाली सब आये.
भूले भटके राहजनों के, लाठी हम बन जायें..
दूर करें अंधेरा सबका, खुशियाँ हम सब लायें.
झूम उठे अब सारी धरती,गीत खुशी के गायें..
आओ मिलकर पेड़ लगायें,हरियाली हम लायें.
अपनी धरती अपनी माटी, सुंदर स्वर्ग बनायें..

व्यापारी और गधा

रचनाकार-साक्षी पत्रवाणी, कक्षा दसवीं, शासकीय उ. मा. विद्यालय, पंधी

एक बार एक गधा और एक आदमी रास्ते पर जा रहे थे, रास्ते में गधा गहरे गड्ढे में गिर गया, आदमी ने अपने प्रिय गधे को गड्डे से निकालने का भरपूर प्रयास किया. लेकिन काफी प्रयत्न करने के बाद वो भी असफल ही रहा. वह बहुत दुखी हो गया. लेकिन वह गधे को ऐसी हालत में छोड़कर जाना भी नहीं चाहता था. तब उस आदमी ने गधे को उसी गड्ढे में जिन्दा गाड़ने का विचार किया, जिससे वह आसानी से मर सके. इसलिए वह उस गड्ढे में मिट्टी डालना आरंभ कर देता है, जैसे ही उस गधे पर मिट्टी गिरती है, वो वजन के कारण हिलाकर हटा देता है और उसी मिट्टी पर चढ़ जाता है. गधा प्रत्येक बार यही कार्य करता है, जब जब मिट्टी उसके ऊपर गिरती है. अंत में मिट्टी से गड्डा भर जाता है और वह गधा सुरक्षित बाहर आ गया.

किसान

रचनाकार-सपना यदु

खून पसीना बहा-बहा कर, माटी में जो लादे जान.
और नहीं है वह कोई भाई, वह कहलाता है किसान..

धरती माँ का है वह सच्चा लाल, सदा उसकी सेवा करता है.
हरा भरा धरती को करके सदा, उसको दुल्हन सा रखता है..

क्या गर्मी क्या सर्दी बारिश,है वह इन सबसे अनजान.
इतनी मेहनत है पर देखो, नहीं है इसको कोई अभिमान..

खेत जोतता फसल उगाता, तब सबको भोजन मिल पाता.
अगर छोड़ दे यह करना किसानी, सोचो-सोचो हम सबका का क्या होता..

आज हम लाचार

रचनाकार-कामिनी जोशी

पेड़ कटाने वाले काट गए,
क्या सोचा था एक पल में
वो किसी परिंदे का घर उजाड़ गए.
क्यों सोचा था एक पल में,
वो धरती की मजबूत नींव उखाड़ गए.
कितनी ही भूमि को वो सुनसान बना गए,
इस पर्यावरण का मंजर वो एक पल में उजाड़ गए.
ना करो इस पर्यावरण का उपहास,
ये इस धरती का है अपमान,
हर एक पेड़ पौधा और जीव
इस धरती का है सम्मान.
अगर करोगे इस धरती के साथ खिलवाड़
तो करना पड़ेगा ऑक्सीजन का जुगाड़.
कैसा ये मंजर है, कैसी विडम्बना है,
आदमी मर रहा है और धरती करे शृंगार.
अब तो समझ गए होंगे,और मन करे विचार.

प्रकृति स्वयम संतुलन बनाती
इंसान हो गया आज लाचार.
इस बात को सोचो और चलो,
करे सुनहरे पल की पहल,
न सूखे कोई पौधा धरती बने हरिहर.

छत्तीसगढ़ महतारी

रचनाकार-हितेंद्र कोंडागाँव

भात संग पताल-चटनी,
अउ सरसों भाजी के साग.
छत्तीसगढ़ के महमहाथे,
अंगाकर रोटी अउ बैचांदी के पाग.

चीला,फरा कस गुरतुर-गुरतुर,
दाई-ददा के मया.
आलूकांदा, सकरकांदा,
कोचई, सुकसी के झोर.
चल संगी रांध के खाबों,
हमन झोरे-झोर.

डुबकी कढ़ी के सवाद ल,
कहाँ पाबे रे भईया.
अइसन खट-मीठ गोठ बात ल,
संगवारी संग आज छत्तीसगढ़ी म,
तय गोठिया ले रे भईया.

मजदूरों पर लॉकडॉउन की मार

रचनाकार-सोमेश देवांगन

लॉकडॉउन की मार, मजदूरों को मार गई.
रोजगार छीन गई, भूख प्यास भी मार गई..

लॉक ही हो गया, हम मजदूरों की मजदूरी.
डॉउन भी होते गया, भूख ने बना ली दूरी..

मजदूरों पर भारी, कोरोना से बड़ी महामारी.
बन्द है सब कुछ, लगी भूखमरी की बीमारी..

भारत मे कोरोना, जब अपना कदम बढ़ाया.
जिंदगी की सीढ़ियों से, मजदूरों को गिराया..

बन्द हमारी मजदूरी, बन्द हमारा काम धाम.
लॉकडॉउन नहीं समस्या समाधान का नाम..

हाय कोरोना

रचनाकार-डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

हाय कोरोना हाय कोरोना दुनियाँ सारी चिल्लाती,
चारों ओर मचा है रोना दुनियाँ सारी कांपी जाती.

कोरोना से बचना है तो बाहर नहीं जाना है,
बार-बार हाथो को अपने मुँह से नहीं लगाना है.
बार-बार हाथो को अपने साबुन से ही धोना है
स्वच्छ रहेगें हम सब बच्चों फिर काहे का रोना है.
डरना नहीं है प्यारे भैया बीमारी है आती जाती,
हाय कोरोना हाय कोरोना दुनियाँ सारी चिल्लाती,
चारों ओर मचा है रोना दुनियाँ सारी कांपी जाती.

बार-बार हाथों में अपने सेनेटाइजर लगाना है,
मुँह पर मास्क लगाकर कोरोना को भगाना है.
फेस मास्क और ग्लब्स से ये कोरोना भागेगा,
अपना जीवन रहे सुरक्षित नया सवेरा आएगा.

चहुदिश आएगी खुशहाली नहीं कोयल गाती,
हाय कोरोना हाय कोरोना दुनियाँ सारी चिल्लाती,
चारों ओर मचा है रोना दुनियाँ सारी कांपी जाती

वर्षा जल संग्रहण

रचनाकार-रजनी शर्मा बस्तरिया

पृथ्वी की सेहत में होगी समृद्धि

वर्षा जल संग्रहण में यदि हो वृद्धि

कहते हैं कि भविष्य वर्तमान के गर्भ में छुपा होता है. इसी भाव के साथ वर्षा के जल के संरक्षण और पानी का दुरुपयोग रोककर बूँद बूँद का संग्रहण करने के लिए "जल प्रहरी" के रूप में नींव रखने का कार्य मायाराम सुरजन शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में प्राचार्य श्रीमती भावना तिवारी के निर्देशन में इको क्लब प्रभारी श्रीमती रजनी शर्मा ने कबाड़ से जुगाड़ शैक्षणिक वाटिका में किया है. इस संदेश के लिए एक रिप्लिका तैयार किया गया है.

वाटिका में एक गढ़्ढा खोदकर उसे सुरक्षित करने के लिए पुराने अनुपयोगी वाटर टैंक को काटकर ढँका गया. इस छोटे से गड्ढे में पेड़ लगाया गया. बेकार पड़े बेसिन के सिंक के सुराख से बाहर निकले पौधे लहलहा कर हरियाली का संदेश दे ही रहे हैं. सिंक पानी एकत्र किए जाने

के प्रतीक के रुप में रखा गया है. जिससे पानी वाटिका में एकत्र हो रहा है. धरती के पानी के संग्रहण के प्रतीक के रूप में बेकार वाटर टैंक के माध्यम से समझाने की कोशिश की गई है. आते जाते विद्यार्थियों का ध्यान यह सहजता से आकृष्ट करता है और यह भाव भी जगाता है कि जल का संरक्षण आवश्यक है. मात्र कुछ ही क्षणों में इस कार्यप्रणाली को समझ जाते हैं. बड़े ही नही वरन नन्हे बच्चे भी इसे देखकर बहुत अच्छे से समझ जाते हैं. शाला के युवा क्लब के मंत्रियों को यह जिम्मेदारी दी गई है कि वे इसकी सुरक्षा और इसका शाला के अन्य छात्राओं के बीच प्रचार-प्रसार भी करेंगे. क्योंकि भविष्य में एक "जल प्रहरी" के रूप में उनकी भूमिका इस शाला में इको क्लब प्रभारी श्रीमती रजनी शर्मा ने अभी से तय कर दी है.

कोरोना वायरस

रचनाकार-कु मानसी साहू, कक्षा पांचवी,सर्वोदय स्कूल धमतरी

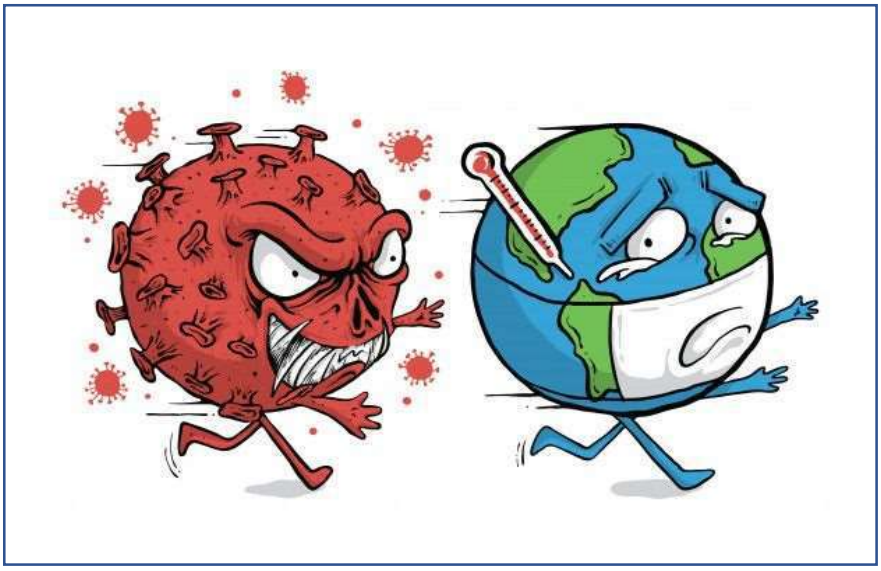

देखो-देखो वायरस आया,
सब घर में छुप जाओ.
वरना इसकी जकड़ में आ जाओगे.
कोरोना हमको कितना रुलाओगे.

अब चुप बैठ भी जाओ,
लॉक डाउन हो गया है.
इधर-उधर आना-जाना,
सब ने बंद कर दिया है.

टीका लगाकर तुम्हें,
खत्म करेंगे करोना.
खुशी-खुशी रहेंगे,
नहीं होगा फिर रोना.

देख कर मैं व्यथित हूँ

रचनाकार-लोकेश्वरी कश्यप

पीड़ा में तड़पते हुए अपनों को,
टूट कर बिखरते हुए सारे सपनों को,
देख कर मैं व्यथित हूँ.....

निस्तब्ध,स्तंभित की वेदनाओ को,
साथ ही लोगों की असंवेदनाओं को, देखकर मैं व्यथित हूँ.....

परपीड़ा में अवसर ताक रहे लोगों को,
सांसो की कालाबाजारी करते सौदेबाजों को,
देख कर मैं व्यथित हूँ.....

उन्होंने देखा था लाशों पर चढ़कर आजादी आई थी,
हम देख रहे, आज लाशों पर गरमाई तुच्छ राजनीति को,
देख कर मैं व्यथित हूँ.....

अब तो जिंदगी और मौत पर भी आरक्षण का दांव चल रहा,
हमारी ही आस्तीन में जाने कब से फरेबी सांप पल रहा,
देख कर मैं व्यथित हूँ.....

कोई तरस रहा हवा को, तो कोई तरस रहा दवा को,
पर क्या फर्क पड़े देश के लापरवाहो को,गद्दारों को,
देख कर मैं व्यथित हूँ.....

लोग पढ़-लिखकर परंपराओं, संस्कारों से दूर हो गए,
"सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे भद्राणि पश्यंतु" के भाव अब लुप्त हो गए,
देख कर मैं व्यथित हूँ.....

कहां गई वो रिश्तो की गर्माहट वह भावनाएं, वह आत्मीयता,
इस दुख में मौका परस्ती की दिखाई पड़ रही कैसी यह विडंबना,
देखकर मैं व्यथित हूँ.....

इधर मर रहे सब बीमारी से,उधर हर तरफ कत्लेआम हैं.
हर जगह घोटालेबाजी इधर भी शमशान उधर भी श्मशान हैं.
देखकर मैं व्यथित हूँ.....

खून हो रहा मानवता का, शांति से मन वीरान हैं.
आज फिर भी चुप क्यों हिंदुस्तान हैं देख कर मैं व्यथित हू.....

असहिष्णुता की आग में आज जल रहा पूरा बंगाल है.
तथाकथित फिल्मीस्तानी देशभक्त आज क्यों बेजुबान हैं.
देख कर मैं व्यथित हूँ.....

इस वायरस ने आज पुनः सबको कर दिया बेहाल है.
खींच लिया इसने सारे रंग बदलते गिरगिटों की खाल है.
देख कर मैं व्यथित हूँ.....

हर तरफ त्रासदी,हर तरफ मच रहा हाहाकार है.
हमसे रूठ चुके क्यों अब हमारे संस्कार हैं.
देख कर मैं व्यथित हूँ.....

अब कहां गई वह वसुधैव कुटुंबकम की भावना,
यहां अब हर किसी को सत्ता धन की है कामना.
देख कर मैं व्यथित हूँ.....

राजनीति की चिट्ठी लिखना छोड़ कुछ तो अच्छा काम करो.
अब तो षड्यंत्र बंद करो, तुम जैसों को धिक्कार है.
देखकर मैं व्यथित हूँ.....

हर तरफ भ्रम,हर तरफ लालच की बहार है.
जाने कितने अपने चले गए, कितनों को इंतजार है.
देख कर मैं व्यथित हूँ.....

आज इंसान कितना बेबस कितना लाचार है.
बद से बदतर होते जा रहे,किसी के काबू में अब नहीं हालात है.
देख कर मैं व्यथित हूँ.....

बाहर खतरा है मत निकल, पर तू तो पतंगा दीवाना है.
क्यों नहीं देख रहा आज हर गांव हर शहर हो रहा वीराना है.
देख कर मैं व्यथित हूँ.....

घर पर रहो,सुरक्षित रहो,बात हमारी मान लो.
जो कुछ जितना बचा है अब तो उसको प्यार से संभाल लो.
देख कर मैं व्यथित हूँ.....

हरियागे धरती के अछरा

रचनाकार-लक्ष्मी तिवारी

आगे सावन के पहली फुहार,
हरियागे धरती के अछरा,
हरियागे भुइयां के अछरा,

फुलगे,कांसी,मोगरा,अउ कचनार
हरियागे धरती के अछरा,
हरियागे भुइयां के अछरा,

१:-राउत के बंसी बाजत हवय हरियर पियर खार म.
जथे बिहनिया नागर धरके किसान ह खेत खार म..
बिहनिया सुरूज संग किसान होवत हे तियार
हरियागे धरती के अछरा,
हरियागे भुइयां के अछरा,

२:-भारत भुइयां म छतीसगढ़ ह कहाथे धान कटोरा.
धान पान सब होते संगी सावन पानी के निहोरा.
सुवा,ददरिया,कर्मा गाथे हमर गाँव के बनिहार
हरियागे धरती के अछरा,
हरियागे भुइयां के अछरा,

३:-किसान के सब रोजी रोटी हवय धान के किसानी म.
ये किसानी होथे भैया बरखा के पानी म.
पानी ले जिन्दगानी हवै कहिथे सब सियान..
हरियागे धरती के अछरा,
हरियागे भुइयां के अछरा,
आगे सावन के पहली फुहार,
हरियागे धरती के अछरा,
हरियागे भुइयां के अछरा,

फुलगे,कांसी,मोगरा अउ कचनार,
हरियागे धरती के अछरा,
हरियागे भुइयां के अछरा..

उड़ान

रचनाकार-ऋषी गर्ग

पंछी पिंजरे में खुश है अगर,
तो जरूरी नहीं क्षितिज की उड़ान.
खुशियां कनक की जंजीरों में है,
तो चढ़ना ही क्यों स्वाधीन की चढ़ान..

फासला है फैसलों का इतना प्रचुर,
भूल जा झूठी सीमाओं का सम्मान.
पीछे देखेगा तो अग्र कटेगा,
कैसे होगा अनागत से मिलान..

सूंघा नहीं गुलाब कभी,
तू काफी रहेगा वो झूठा रेहान.
आँखे जो तीनों दिशाओं में चले,
तो काफी आगे तक है जाता जहान..

श्रीराम तुम्हारा है अभिनंदन

रचनाकार-श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'

अभिनंदन प्रभु राम जी, जग के पालन हार.
अवध धाम पुनि आइये, राघवेन्द्र सरकार.
राघवेन्द्र सरकार, कृपा भक्तों पर करिये.
रोग, शोक, संत्रास सभी भक्तों के हरिये.
कह 'कोमल' कविराय, आपका शत-शत वंदन.
प्रगट पधारो नाथ, आपका है अभिनंदन.

मंगल छवि अभिराम प्रभु, दर्शन की है आस.
अवध नाथ प्रभु आइये, हरो सभी संत्रास.
हरो सभी संत्रास, जगत के पालन कर्ता.
इस जीवन के राम, तुम्हीं हो कर्ता-धर्ता.
कह 'कोमल' कविराय, दूर सब करो अमंगल.
हरो अमंगल क्लेश, करो सब मंगल-मंगल.

दानव मुँह फाड़े खड़ा, महारोग विकराल.
धनुष-वाण ले हाथ में, प्रभु मारो तत्काल.
प्रभु मारो तत्काल, विषम संकट यह टारो.
कोरोना के दुष्ट, राक्षस को संहारो.
कह 'कोमल' कविराय,सुखी तब होंगे मानव.
होगा जब यह नष्ट, दुष्ट कोरोना दानव.

कर भला तो हो भला

रचनाकार-अयन तिवारी, कक्षा पांचवी, शासकीय प्राथमिक विद्यालय बेलगहना, कोटा

नगोई नामक गाँव में दो भाई रहते थे एक का नाम संजय था और दूसरे का रंजीत. एक बार दोनों के बीच विवाद हो गया. रंजीत का कहना था कि भलाई करने वालों का सदैव भला होता है, वही संजय का कहना था कि भलाई का जमाना नहीं रहा. उन्होंने शर्त लगाई कि शर्त हारने वाले को उसके पास जो भी है सब कुछ शर्त जीतने वाले को देना होगा दोनों पंचायत में गए वहां एक व्यक्ति से पूछा दो से पूछा सभी ने यही कहा कि भलाई का जमाना नहीं रहा. रंजीत के पास जो खेत का एक टुकड़ा था वह भी संजय के नाम हो गया. कुछ दिन बाद रंजीत के घर खाने को कुछ भी नहीं था. वह संजय के पास मदद माँगने गया और बोला कि मुझे 10 किलो चावल दे दो. संजय ने कहा अपनी एक आँख निकलवा दो बदले में 15 किलो चावल ले जाओ रंजीत मजबूर था उसने अपनी एक आँख निकलवा ली और 15 किलो चावल लेकर घर आया वह चावल कुछ दिनों तक चला फिर खत्म हो गया. रंजीत फिर संजय के पास गया फिर से अपनी एक आँख निकलवा दी और बदले में 15 किलो चावल ले आया. रंजीत घर आया तो पत्नी बच्चे रोने लगे फिर रंजीत ने अपनी पत्नी से कहा अब मैं भीख माँग लूँगा. तुम सुबह मुझे चौक छोड़ आया करना. मैं वहाँ भीख मांग लूँगा फिर शाम को ले आया करना. कुछ दिनों तक ऐसा चलता रहा. एक दिन रंजीत की पत्नी उसे लेने नहीं आई वह धीरे-धीरे चलने लगा, उसे रास्ते में एक पेड़ मिला वह पेड़ के नीचे बैठ गया. रात हो गई थी उस दिन भूतों का हिसाब करने वाला दिन था. वहाँ तीन भूत और एक उनका सरदार थे. पहले भूत ने कहा मैंने गाँव के दो भाई संजय और रंजीत में दो बार भला बुरा का तर्क करवा कर रंजीत को अंधा बनवा दिया भूतों के सरदार ने कहा वह अंधा ही रहेगा उसे क्या

मालूम कि इस पेड़ की ओस लगाने से उसकी आँखें ठीक हो जाएंगी दूसरे भूत ने कहा की यहाँ की रानी की शादी होने वाली थी मैंने उसे गूंगा बना दिया भूतों का सरदार बोला बहुत खूब उसे क्या मालूम कि इस पेड़ की जड़ को पीसकर पी लेने से वह बोलने लगेगी. तीसरे भूत ने कहा मैंने पड़ोसी गाँव रत्नापुर मैं अकाल ला दिया है भूत के सरदार ने कहां बहुत अच्छा उन्हें क्या मालूम कि मिट्टी की 7 परत हटा दी जाएँ तो वहाँ का अकाल खत्म हो सकता है. रंजीत सब सुन रहा था अचानक तेज हवा चली और भूत गायब हो गए. सुबह हुई तो जल्दी से रंजीत ने पेड़ की ओस अपनी आँखों में लगाई और उसकी आँखें ठीक हो गईं. अब वह राजा के पास गया और रानी को उस पेड़ की जड़ को पीसकर पी लेने के लिए कहा रानी ने जब वह रस पिया तो वह बोलने लगी. राजा ने रंजीत को बहुत सारे पैसे दिए रहने के लिए घर दिया वह रत्नापुर गाँव गया वहाँ मिट्टी की 7 परते हटवा दीं तो वहाँ हरियाली छा गई. जब वह अपने गाँव पहुँचा तो उसे इतना अमीर देखकर उसके भाई के मन में लालच आ गया उसने उसने छोटे भाई से पूछा तुमने इतना पैसा कहाँ से पाया? छोटा भाई रंजीत दयालु था उसने सब कुछ बता दिया जब बड़ा भाई संजय उस पेड़ के पास गया तो भूत बात कर रहे थे कि उस दिन की बात किसी ने सुन ली थी वह इधर-उधर देखने लगे बड़ा भाई संजय उन्हें पेड़ पर बैठा दिखाई दिया उन्होंने उसे वहीं मार दिया.

पेड़ हमारे दोस्त

रचनाकार-क्रित्यंची पात्रे,कक्षा आठवी, के जी बी वी दुल्लापुर बाजार, पंडरिया, कबीरधाम

पेड़ों को तुम काट रहे हो
प्रदूषण को तुम पाल रहे हो
इस जीवन को ही मानव
संकट में क्यों डाल रहे हो.

यूँ ही पेड़ों को काट दोगे तो
स्वच्छ पवन को तरसोगे
धरती बंजर हो जाएगी
तुम अन्य नीर को तड़पाओगे.

ग्लोबल वार्मिंग के खतरे से
तुम कैसे फिर बच पाओगे
हर जगह प्रदूषण पाओगे
बीमारी से मर जाओगे.

अब भी मौका है सुन मानव,
पेड़ों को काटना बंद करो
सुखमय जीवन जीना है तो
वृक्षारोपण का संकल्प करो
वृक्षारोपण का संकल्प करो

कोरोना स्लोगन

रचनाकार-अर्पित गुप्ता, कक्षा दशवीं, सरस्वती शिशु मंदिर कवर्धा

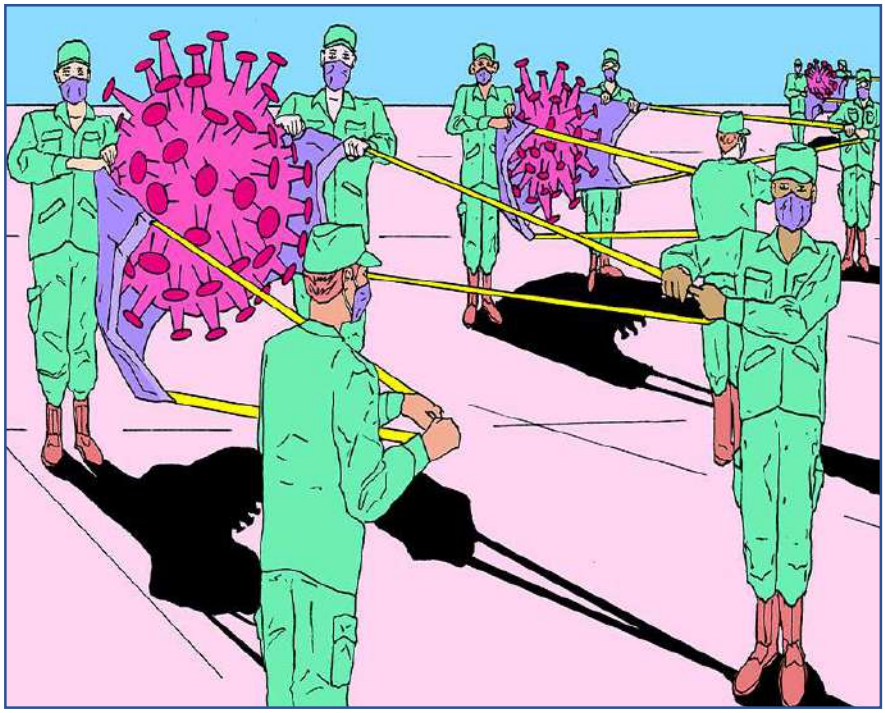

1. कोरोना से डरो न,
दो गज दूर रहो न..

2. जन जन का नारा है
मास्क से कोरोना को हराना है..

3. शुरू करे एक अभियान,
वैक्सीन लगाके बढ़ाओ सम्मान..

4. कोरोना की तोड़नी है चेन,
सभी रहो अपने घर अपने रैन..

5. COVID-19 हमारा दुश्मन,
इसके खिलाफ है हमारे देश का कण कण..

6. कोरोना से बचो न,
हाथ सेनेटाइज और मास्क को करो हाँ

जब जागो तभी सवेरा

रचनाकार-स्वाति मुकेश पांडेय

यह कहानी अत्यंत पिछड़े एवं दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र के एक गाँव की है. इस गाँव में कुछ गिने-चुने ही घर थे. गाँव का कोई भी व्यक्ति अधिक पढ़ा लिखा नहीं था, न ही गाँव में कोई पाठशाला चिकित्सालय या सरकारी कार्यालय था. गाँव के लोग अपनी मेहनत से इकट्ठा किए वनोपज, अनाज आदि को बेचने समीपस्थ कस्बे के बाजार जाया करते थे. इसी तरह गाँव के लोगों की आजीविका चल रही थी.

उसी गाँव में एक व्यक्ति मोहन भी रहता था. मोहन जब भी कस्बे जाता था,कस्बे के ऊँचे पक्के मकानों को देखकर बहुत प्रभावित होता था. हमेशा उसका ध्यान स्कूल पर टिक जाता था. उसे इस बात का पश्चाताप होता था कि उसने पढ़ाई क्यों नहीं की? अगर वह भी पढ़ा लिखा होता तो उसकी भी जीवनशैली कुछ अलग होती. वह अक्सर अपनी इस कमी को पूरा करने के विषय में सोचता था. एक बार वनोपज खरीदी बिक्री के बीच एक गुरुजी से मोहन का परिचय हो गया. कुछ बार की मुलाकातों से दोनों के बीच घनिष्ठता हो गई और मोहन ने अपनी दबी हुई इच्छा एक दिन गुरुजी के सामने अभिव्यक्त कर दी. गुरुजी यह जानकर बहुत खुश हुए कि आज भी मोहन के मन में. पढ़ने की इच्छा बनी हुई है.

गुरुजी ने मोहन से कहा कि तुम स्कूल में नहीं पढ़ पाए तो क्या हुआ तुम चाहो तो अभी भी पढ़ सकते हो, इसमें मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ. मोहन ने कहा अब मैं पढ़ कर क्या

करूँगा गुरुजी? गुरुजी ने समझाते हुए कहा कि इसी प्रकार सोचते रहे तो तुम्हारी पीढ़ी का कोई व्यक्ति पढ़ाई नहीं कर पाएगा, किसी को तो शुरूआत करनी होगी गाँव में किसी व्यक्ति को तो अपनी सोच बदलनी होगी तभी गाँव की उन्नति होगी. मोहन गुरुजी की बातों से प्रभावित हुआ और वह समय निकालकर पढ़ने लगा. कुछ दिनों पश्चात मोहन पढ़ना, लिखनाऔर हिसाब किताब करना सीख गया.

मोहन की शिक्षा का लाभ गाँव के अन्य लोगों को भी मिलने लगा. गाँव में पंचायत के चुनाव में मोहन को सरपंच चुना गया. सरपंच बनने के बाद मोहन ने शिक्षा के महत्व को समझते हुए गाँव में सबसे पहले प्राथमिक विद्यालय खुलवाया. मोहन के किए गए प्रयास का लाभ मिला और गाँव के बच्चे पढ़ाई से जुड़ गए. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम की कक्षाओं में जाकर गाँव के बड़े लोग भी साक्षर हो गए और आज पूरा गाँव में कोई भी निरक्षर नही है.

इस प्रकार मोहन के जागने से आज पूरा गाँव जाग चुका है. ठीक ही कहा गया है कि "जब जागो तभी सवेरा".

माँ

रचनाकार-सोमेश देवांगन

माँ पर क्या कविता लिखूं, ये तो बताओ.
पहले माता पिता को, भगवान तो अपनाओ..

माँ पर कविता लिखना, बस की बात नही.
फिर भी लिखता, पर इसमे पूरी बात नही..

सौ हड्डी टूटने का दर्द, जब वह सह जाती.
तब दुनिया महिला को, माँ कह के पुकारती..

नव महीने से जिसमे, कोख में हमको पाला.
गर्भ में खिलाया खाना, प्रोटीन का निवाला..

माँ ही हमपर, ममता का खजाना लुटाती.
नजर न लगे, कह हरदम बलाये उतारती..

अंतस से लगा के, गोरस जिसने पिलाया.
माँ उंगली पकड़ के, चलना मुझे सिखाया..

बड़ा हुआ तो, अपने हाथों खाना खिलाया.
राजा बेटा लक्की मेरा, दुनिया को बताया..

माँ के रहते मुझे कभी, कुछ कमी न आई.
मेरे साथ रहे जब माँ, आंखों नमी न आई..

कितनी भी लिखूं, माँ पर कविता अधूरी है.
माँ तो सर्वत्र जगत, ब्रम्हांड पृथ्वी धुरी है..

चार

रचनाकार-संतोष कुमार तारक

डोंगरी पहाड़ म जाबो,
पाके-पाके चार लाबो.
लाल तेंदू ल दोना भरके,
नंगत के मजा उड़ाबो.
गेदराय भेलवा ह गजब,
टपके महुआ ल पाबो.
सुखड़ी ल घर लानबो,
माई-पिला बैठ खाबो.

सहयोग

रचनाकार-अलका राठौर

एक बार कक्षा 5 में पढ़ने वाले सलीम, मीना, डेविड, रघु सभी ने मिलकर भिलाई के मैत्री बाग घूमने की योजना बनाई. सभी भिलाई जाने के लिए बिलासपुर रेल्वे स्टेशन पहुँच गए, ट्रेन आने मे थोड़ी देर थी. सभी प्लेटफॉर्म पर बैठे ट्रेन की प्रतीक्षा कर रहे थे. तभी एक 5 वर्षीय बच्चा आकर उनके सामने आ गया और उनसे खाने के लिए कुछ माँगने लगा. सभी उसको देख करुणा से भर गए, मीना ने उससे पूछा तुम्हारा नाम क्या है? बच्चे ने कहा मुन्ना.

तुम्हारे साथ कौन कौन है? सलीम ने पूछा.

मैं और मेरी माँ, मुन्ना बोला.

तुम्हारी माँ कहाँ है?

वो यहीं दूसरी जगह भीख माँग रही है.

तुम्हारी माँ को बुलाओ. रघु ने कहा.

चलो कहते हुए मुन्ना उन्हे अपनी माँ के पास ले आया.

सभी बच्चों ने मुन्ना की माँ से पूछा कि मुन्ना कौन से स्कूल मे पढ़ता है? माँ ने जवाब दिया कि मुन्ना किसी स्कूल में नहीं पढ़ता है. उसे स्कूल भेजने और पढ़ाई के लिए कॉपी, पेन, बैग, जूते आदि खरीदने के लिए पैसे नहीं है, इसलिए मुन्ना मेरे साथ ही रहता है, और माँगकर हम

अपना गुज़ारा करते हैं. बच्चे चिंता मग्न हो गए. कुछ सोचकर पूछा, मुन्ना क्या तुम स्कूल जाना चाहोगे?, मुन्ना बोला हाँ मैं स्कूल जाऊँगा और मन लगाकर पढ़ूँगा भी.

फिर क्या था मीना ने अपने बैग से कॉपी निकाल कर मुन्ना को दे दीं. सलीम ने पेंसिलें दे दीं. डेविड ने अपने पुराने जूते और रघु ने अपना पुराना बैग दे दिया. अगले दिन से मुन्ना स्कूल जाने लगा और उसकी माँ रेल्वे स्टेशन पर झाड़ू लगाने का काम करने लगी. मुन्ना मन लगाकर पढ़ाई करने लगा और रोज स्कूल जाने लगा.

चलो पढ़ना है

रचनाकार-संतोष कुमार तारक

चलो पढ़ना है
बंद पड़े हैं आज स्कूल,
बच्चे पढ़ना जाये न भूल.
संकट बड़ा है फैला कोरोना,
इसका निदान हमें है करना.
लाओ कैंची कपड़ा काटे,
मास्क बनाकर आपस मे बाँटे.
माता-पिता से सहयोग है लेना,
पढ़े पाठ पर रिवाइज है देना.
शिक्षण सामग्री ढेर पड़ा है,
वाट्सएप्प ग्रुप स्कूल से जुड़ा है.
घर के पढ़े-लिखे से सहयोग लेकर,
पढ़ना, समय अब होगा न बेकार.
ऑनलाइन भी पढ़ सकते हैं,
शिक्षक से फ़ोन कर पुछ सकते हैं
शिक्षक तो हर पल करते हैं प्रयास,
बच्चों के रुचि इसमे है खास.

कोरोना काल में मेरी आनलाइन कक्षा

रचनाकार-श्वेता पुष्पेन्द्र तिवारी

यह कैसी विडंबना छाई है,
विश्व में कैसी विपदा आई है,
काम करने का तरीका ही बदल गया,
जो कभी सोचा ना, न कभी कल्पना की,
ऐसा जमाना आया,
एक छोटे से अदृश्य शक्ति ने,
सब तरफ हाहाकार मचाया.

ऑनलाइन है यह सुना था,
तकनीकी का दौर है
इसे हमने स्वीकारा था.

नई-नई तकनीकों को
हम सीखना चाहते थे,
एक नए विकास की ओर
उड़ना चाहते थे.
पर वक्त लगेगा बदलने में,
बदलाव लाने में,
ऐसा मन में विचार आया था.

ऐसी बयार चली
हालात बदल गए,
लॉकडाउन आया,
सब कुछ झटपट सिखाया,
हमारे विद्यालय महाविद्यालय
अचानक बन्द हो गए.
घर पर रहकर करना काम था
जब पढ़ने पढ़ाने के बंद सारे द्वार हो गए.

माता पिता को चिंता बड़ी सताती थी,
जब बच्चों की पढ़ाई की बात आती थी.
ऑनलाइन से पढ़ना कैसे होगा संभव यह सोच मन घबराता था.

7 अप्रैल का वह दिन आया,
जब ऑनलाइन पढ़ना सिखलाया.

पुनः शिक्षक छात्र मिले,
बड़े बच्चे ऑनलाइन से पढ़ते अच्छे
पर जहां छोटो की बात आती,
हम सबको चिंता बढ़ी सताती,
छोटों को तो क्लास के समय पर ही, नींद और भूख बड़ी सताती.

कभी उनको डाँटते,
तो कभी उनकी फरमाइश पूरी करते.

चुनौती हम शिक्षकों ने स्वीकार लिया
नए-नए तरीकों से ऑनलाइन पढ़ाया शुरू किया
प्रार्थना योग गीत कविता पर्व त्यौहार नाटक संवाद
पाठ्यपुस्तक के बिंदु को अलग-अलग स्लाइड शेयर कंटेंट करके पढ़ाया.

बच्चों की रुचि बनी रहे,
इसके लिए ऑगमेंटेड क्लास चलाया.
बच्चे पढ़ते सब क्लास में,
कुछ को किया म्यूट तो
कुछ को अन-म्यूट कराया.
इस तरह हमने अपना कर्तव्य निभाया.

ऑनलाइन की कक्षा अच्छी,
ना बच्चे बाहर जाते.
घर पर बैठे-बैठे,
सारी पढ़ाई अपनी सीख कर आते.

नेटवर्क ना होना, सभी बच्चों का न जुड़ पाना,
फिर भी हम शिक्षकों के उत्साह में कोई कमी न आना.

बच्चों की बदमाशियाँ कहाँ रूकती हैं,
स्क्रीन पर लिखना, कैमरा ऑफ करना, चैटिंग करना,
उन्हें हर रोज एक नई शरारत सूझती है.

अंत में शिक्षक ने अपनी कक्षा को सफल बनाया,
यह सोच-सोच कर शिक्षक का मन है हरसाया.
इस बात में कोई दो राय नहीं है,
ऑनलाइन कक्षा ने, घर में ही स्कूल का एहसास दिलाया.

साल तो बीत गया,
कुछ चंद पल भी बीत जाएँगे.
हिम्मत मत हार शिक्षक,
यह जंग भी बाजी मार जाएँगे.

एक दूजे का साथ रहे,
हिम्मत और विश्वास रहे,
किसी का मनोबल ना गिरने देना है,
इस कोरोना काल से, सबको पार होना है.

सफलता की कहानी-प्रशिक्षक बनने की मेरी यात्रा

शिक्षिका का नाम-गीता शुक्ला

विद्यालय का नाम-कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय जगदलपुर

मेरा नाम श्रीमती गीता शुक्ला है, मैं कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय जगदलपुर में शिक्षिका के पद पर कार्यरत हूँ. वर्तमान में मैं निखार कार्यक्रम के अंतर्गत हिंदी विषय के लिए "जिला स्तरीय प्रशिक्षक" के तौर पर चुनी गयी हूँ. यह मेरे लिए अत्यंत गौरव की बात है क्योंकि मैं बस्तर जिले में अपने समकक्ष शिक्षकों और स्वयं से उच्च पद पर कार्यरत प्रधान पाठकों व प्राचार्यों को प्रशिक्षित कर रही हूँ.

एक प्रशिक्षक के रूप में चुना जाना मेरे लिए जितने गौरव की बात है, वहाँ तक पहुँचना उतना ही चुनौतीपूर्ण था. क्योंकि आज से कुछ वर्ष पूर्व तक मुझमें आत्मविश्वास की अत्यंत कमी थी. भीड़ में या मंच पर बोल पाना मेरे लिए लगभग असंभव था.

आज भी मुझे छः वर्ष पूर्व की वह घटना याद है जब मैं एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित हुई थी. प्रशिक्षक ने जब मुझे अपना परिचय देने के लिए कहा तब मैंने तीन-चार बार अपना परिचय दिया लेकिन प्रशिक्षक मेरी बात सुन और समझ ही नहीं पाए क्योंकि घबराहट के

कारण मेरे मुँह से स्पष्ट आवाज नहीं निकल रही थी. इस घटना से मुझे स्वयं के अन्दर आत्मविश्वास की कमी का अनुभव हुआ. उस दिन के बाद मैंने स्वयं को प्रेरित करने और अपनी कमी दूर करने का प्रयास करने का निश्चय किया. मैंने तय किया कि अब ऐसा कोई भी मौका आए जहाँ मुझे मंच पर या समूह के बीच बोलने का अवसर मिले तो मैं अवश्य उस अवसर का लाभ उठाउँगी और स्वयं को इसके लिए प्रेरित करुँगी.

2018 में, मैं "परियोजना विजयी"कार्यक्रम से जुड़ी, जिसने मेरे प्रयासों को एक दिशा और योजनाबद्ध तरीका प्रदान किया. इस कार्यक्रम के अंतर्गत छत्तीसगढ़ के चयनित 179 संस्थाओं की बालिकाओं को जीवन कौशल की शिक्षा दी जा रही है. हमारा विद्यालय भी इस कार्यक्रम से लाभान्वित हो रहा है. कार्यक्रम के प्रारूप के अनुसार प्रत्येक आवासीय विद्यालय से एक शिक्षिका और अधीक्षिका प्रशिक्षण प्राप्त कर बालिकाओं के लिए जीवन कौशल सत्रों का आयोजन करती हैं. इस प्रशिक्षण के लिए शिक्षिका के रूप में मेरा चयन हुआ है. अक्टूबर 2018 में मैं पहली बार प्रशिक्षण में शामिल हुई वहाँ पर भी अपनी बात रखते समय बहुत घबराहट महसूस होती थी क्योंकि उस प्रशिक्षण में अन्य जिलों की शिक्षिकाएँ और अधीक्षिकाएँ भी उपस्थित थीं. प्रशिक्षण के दौरान मेरे झिझकने पर प्रशिक्षकों द्वारा मुझे प्रोत्साहित किया जाता था और अच्छी बात कहने पर मेरी सराहना भी की जाती थी. इस प्रोत्साहन और सराहना ने मुझे अत्यंत प्रेरित किया.

प्रशिक्षण के दौरान हमने अनेक विषयों पर चर्चा की जिनमें से मुख्य रूप से मैंने "मैं (स्वयं) और मेरी पहचान", "सम्प्रेषण का कौशल", "दृढ़ होना" और "नेतृत्वकर्ता" के कौशलों को सीखा और अपने दैनिक जीवन में प्रतिदिन इन कौशलों का उपयोग करना शुरू किया. साथ ही उन सभी अवसरों को तलाशती रही जहाँ इन कौशलों का उपयोग कर सकूँ. इसी श्रेणी में मैंने 8 मार्च 2019 को हमारे विद्यालय में आयोजित "अंतराष्ट्रीय महिला दिवस" पर मंच संचालन किया, ब्लाक स्तरीय बैठकों में भाग लिया, 5 मार्च 2020 को "परियोजना विजयी" के अंतर्गत आयोजित समीक्षा बैठक में आदरणीय कलेक्टर महोदय की उपस्थिति में अपने विद्यालय का प्रस्तुतीकरण दिया. इन सभी अवसरों से मेरा स्वयं पर और स्वयं की योग्यता और क्षमता पर विश्वास बढ़ा. मुझे कविताएँ लिखने का भी शौक है, समय-समय पर मैं अपनी कविताएँ, आयोजनों के दौरान मंच से और व्हाट्सएप स्टेटस के द्वारा अपने परिचितों के साथ साझा करती हूँ. जिन पर मुझे अपने सहकर्मियों, प्रशिक्षकों व उच्च अधिकारियों से सराहना मिलती है जिससे मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है.

"सतत सुधार और जीवन कौशल शिक्षा के अभ्यास के फलस्वरूप मेरे अन्दर आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है जिसके कारण मैं आज एक प्रशिक्षक के रूप में चुनी गयी हूँ. मुझे विश्वास है कि मैं इसी प्रकार अपने कौशलो और व्यक्तित्व के विकास पर निरंतर कार्य करती रहूँगी और जिले तथा राज्य को अपनी सेवाएँ देती रहूँगी."

प्रकृति करे पुकार

रचनाकार-प्रमिला जांगड़े

प्रकृति करे पुकार
मेरा बचा लो संसार
प्रकृति से मत करो खिलवाड़
वरना जीवन हो जाएगी उजाड़
हे मानव अपने सुख सुविधा के लिए मत करो बर्बादी
वरना कम हो जाएगी जीव जंतुओं की आबादी
प्रकृति करे पुकार
मेरा बचा लो संसार.
प्रकृति बोली मैं हूँ कितनी अनमोल.
मुझसे मिलती है हर प्राणी को जीवन जीने की डोर..
फिर भी प्राणी काहे न समझे मेरी मोल.
प्रकृति करे पुकार
हे मानव अपना बचा लो संसार.
मुझ से करो प्यार..
यही मेरी पुकार.
यही मेरी पुकार..

नया पौधा

रचनाकार-गौरीशंकर वैश्य विनम्र

बाबा जी बाजार से आए
रंगबिरंगे गमले लाए

चुन्नू, मुन्नू, रघु चिल्लाए
आहा! गमले मन को भाए

देखो! आपस में मत झगड़ो
अपने-अपने गमले पकड़ो

इसमें पौधा नया लगाना
देखभाल कर उसे सजाना

बारी-बारी देना पानी
सबको करनी है निगरानी

दादी बोलीं-रखना याद
देखूँ एक महीने बाद

अच्छा पौधा, अच्छा काम
श्रेष्ठ को दूँगी मैं ईनाम

आखिरी सहारा

शहर ले गाँव-गली कोती कोरोना के रूप बढ़े लगिस. सरकार कतको सावचेत करिन फेर मनखे के भीड़ कहाँ रुकिस. अब अस्पताल कोती भीड़ बढ़े लगिस. मरीज मन के बढ़े ले अस्पताल म जगा कम पर लगिस. आखिर मजबूरी म सरकार ल लॉक डाउन लगाए ल परगे. काम-काज बन्द परगे.

रामलाल ल गाँव ले शहर आये थोरिक दिन होवे रहिस. पाछू साल के लॉक डाउन म उँकर कस ह टूटगे रहिस. आज कमा आज खा कस उकर हाल हो गए रहिस. दुब्बर बर दू आषाढ़ कस बिपत के बेरा आए रिहिस. घर म अठोरिया पन्दरहि कइसनो करके राशन पानी चलिस. आखिर म भुखमरी के चिंता सताए लगगे.

गांव ले शहर आये थोरकिन दिन तो होवय हे. फेर मदद बर कोन ल गोहरावव काकर तीर जावव. मने मन रामलाल ल चिंता के बादर घेर लिस. फेर गाँव के सुरता ओला आये लगिस. पाछू बछर जब लाकडॉउन रहिस त कइसे घर म आरा पारा अउ संगी मितानी के मया के चूल्हा उपास के बेरा नइ बने रहिस. पारा परोस म दार-पहित,खुला-खाली,सुकसा भाजी,अउ बारी-बखरी के साग भाजी मिल जावय फेर इहा कहा ले. गाँव के जिनगी के सुघर सुरता करत मन मसोसत रहिस. नान्हे-नान्हे लइका लोग के मुंह ल देख चिंता भीतर ले सतावत रहिस.

रामलाल के गोसईन ह कहिस " संझा बेरा बर दार चाउर नइहे कइसे करव. " एकर ले पहिली रामलाल कहीं कतिस भीतरी डहर कहि फूटे कस लगिस. ओकर बेटा गोलू ह अपन गुल्लक ले सिक्का मन ल निकाल के बापू ल दिस अउ कहिस बाबू बबा दाई अउ मन ह मोला चिल्हर

पइसा ल देवे तेला गुल्लक म भरे हव. बापू जब तुंहर तीर हो जाहि तब मोर बर कुछु बीस दुहु.

रामलाल के अक्का आइस न बक्का वो बड़का सोच म डूबके अउ अपन गोलू ल काबा म पोटार के आँखी डबडबा गे. विपत के बेरा म आखिरी सहारा कस गोलू के समझदारी के गरब रहिस अउ गोलू के गुल्लक म दाई ददा के मया के छाँव दिखिस. वो आखरी सहारा ले राशन जुगाडीन अउ बिहाने अपन माटी,अपन गाँव बर निकलगे.

मेरा भाई

रचनाकार-अक्षिता सिन्हा, कक्षा चौथी, सेंट थॉमस पब्लिक स्कूल, कटघोरा, कोरबा

भाई मेरा भाई, मेरा छोटा भाई....
करता है मुझसे, दिनभर लड़ाई....
पसंद है इसको, चॉकलेट और मिठाई.

बदमाशी करे वो, डांट खाऊँ मैं....
सामान फैलाए वो,जगह पर रखूँ मैं.

जो मैं उसकी शिकायत करने जाऊँ
मम्मी कहे, "बेटा, यह भाई है, तेरा छोटा भाई. "

हाँ है तो यह मेरा भाई....
मक्खन मलाई.

चोट लगे उसे, दर्द हो मुझे....
थप्पड़ पड़े उसे, आँसू आए मुझे.

जो भी है, जैसा भी है भाई....
जान है मेरी, मेरा प्यारा भाई.
मेरा प्यारा भाई..

कलम

रचनाकार-सुधारानी शर्मा

कलम मेरी बड़ी प्यारी है,
मुझको बहुत दुलारी है.

इसका काम लिखना है,
सही गलत को कहना है.

इसकी ताकत अपार है,
इसकी महिमा अपरंपार है.

छोटी सी कमाल है,
करती खूब धमाल है.

पहचान दिलाती है कलम,
मान बढ़ाती है कलम.

इसका मान सदा ही रखना,
इसका ध्यान सदा ही रखना.

जो काम असंभव दिखता है,
कलम सम्भव उसे बनाती है.

कलम परिवर्तन लाती है,
सत्य असत्य बतलाती है.

धरती से लेकर आसमान का,
मन में चल रहे तूफान का.

परिचय देती मानव मन का,
है अभिमान यह जन-जन का.

कलम मेरी बड़ी प्यारी है
मुझको बहुत दुलारी है.

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी -

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

जिज्ञासा वर्मा, कक्षा नवमीं, क. उ. मा. वि. रतनपुर, कोटा, बिलासपुर द्वारा भेजी गई कहानी

कछुए की जीत

एक बहुत बड़ा जंगल था. जंगल में सभी जानवर रहते थे. उसी जंगल में खरगोश और कछुआ भी रहते थे, दोनों में अच्छी दोस्ती थी. दोनों साथ में खूब खेलते और मौज करते थे. खरगोश बहुत तेज दौड़ता था और कछुआ बहुत ही धीमी चाल से चलता था. खरगोश को अपनी तेज चाल का बहुत घमण्ड था और वह हमेशा कछुए का मजाक उड़ाया करता था. कछुआ, खरगोश की बातों का बुरा नहीं मानता था.

एक दिन खरगोश घमंड भरे स्वर में कछुए से बोला-"क्या तुम मेरे साथ दौड़ लगाना चाहोगे."

कछुआ बोला-"मित्र खरगोश, अगर तुम दौड़ की प्रतियोगिता करना चाहते हो तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है. " तय किया गया कि दौड़ अगले दिन सुबह होगी.

अगले दिन खरगोश तथा कछुआ दोनों दौड़ के लिए तैयार होकर आ गए. जंगल के सभी जानवर भी दौड़ देखने आ गए. निश्चित हुआ कि जो पहले पहाड़ी पर पहुँचेगा उसे विजेता घोषित किया जाएगा. सभी को यही उम्मीद थी की खरगोश ही यह दौड़ जीतेगा.

भालू ने झण्डा हिलाकर दौड़ शुरू करवाई. खरगोश तेजी से भागते हुए बहुत आगे निकल गया. कछुआ धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था. खरगोश एक छायादार पेड़ के नीचे पहुँचा और पीछे मुड़कर देखा तो उसे कछुआ कहीं नहीं दिखा. ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी खरगोश ने सोचा कछुआ अभी बहुत पीछे है. क्यों न मैं थोड़ी देर विश्राम कर लूँ. यह सोचकर खरगोश ने जैसे ही आँखें बंद कीं, उसे नींद आ गई.

इधर कछुआ धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था. कुछ देर में कछुआ भी वहीँ पहुँच गया और फिर वह खरगोश से आगे निकल गया. बहुत देर बाद जब खरगोश की नींद खुली तब उसने यहाँ वहाँ देखा वह सोचने लगा कछुआ दिखाई नहीं दे रहा. उसने भागना शुरू किया आगे जाकर उसने देखा कि कछुआ पहाड़ी पर पहुँचने ही वाला है.

खरगोश अपनी पूरी ताकत लगाकर दौड़ा, पर उसके पहाड़ी पर पहुँचने के पहले ही कछुआ पहाड़ी पर पहुँच चुका था और इस प्रकार कछुए ने यह दौड़ जीत ली. जंगल के सभी जानवर यह देख हैरान रह गए. सभी कछुए को जीत की बधाई देने लगे.

खरगोश को अपनी हार पर बहुत पछतावा हुआ. खरगोश अपने अभिमान पर लज्जित हुआ और उसने कछुए से अपने व्यवहार के लिए क्षमा माँगी.

कु. डिलेश्वरी प्रजापति, कक्षा छटवीं, शा पू मा शा कालीपुर, प्रेमनगर, सूरजपुर द्वारा भेजी गई कहानी

कछुआ और खरगोश

खरगोश को अपनी तेज चाल पर बहुत घमंड था. जो भी मिलता उसे वह दौड़ लगाने की चुनौती देता. कछुए ने उसकी चुनौती स्वीकार कर ली.

जंगल के सभी जानवरों के समक्ष भालू ने झण्डा दिखाकर दौड़ शुरू कराई. खरगोश तेजी से भागा और काफी आगे जाने पर पीछे मुड़ कर देखा, कछुआ कहीं नज़र नहीं आया, उसने मन ही मन सोचा कछुए को यहाँ तक आने में बहुत समय लगेगा, मैं थोड़ी देर आराम कर लेता हूँ और वह एक पेड़ के नीचे लेट गया. लेटे-लेटे कब नींद आ गई उसे पता ही नहीं चला. उधर कछुआ धीरे-धीरे, लगातार चलता रहा. बहुत देर बाद जब खरगोश की आंख खुली तो कछुआ लक्ष्य तक पहुँचने वाला था. खरगोश तेजी से भागा, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी और कछुआ दौड़ जीत गया.

दौड़ में हारने के बाद खरगोश निराश हो गया, वह समझ गया कि अति आत्मविश्वास के कारण उसकी प्रतियोगिता में हार हुई है.

अगले दिन खरगोश ने फिर से कछुए को दौड़ की चुनौती दी.

कछुआ यह बात समझता था कि रास्ते में खरगोश के सो जाने के कारण उसकी जीत हुई है. दोबारा दौड़ हुई तो वह जीत नहीं सकता. क्योंकि खरगोश इस बार सोने वाला नहीं है.

खरगोश की चुनौती कछुए ने इस शर्त के साथ स्वीकार कर ली कि दौड़ का मार्ग कछुआ तय करेगा. खरगोश तैयार हो गया.

इस बार बंदर ने सीटी बजाकर दौड़ प्रारंभ कराई. खरगोश तेजी से तय स्थान की ओर भागा,उस रास्ते में एक नदी बहती थी. खरगोश को नदी किनारे पहुँचकर रुकना पड़ा.

कछुआ धीरे-धीरे चलता हुआ यहाँ पहुँचा है और आराम से नदी पार कर लक्ष्य तक पहुँच गया. कछुए ने दोबारा खरगोश को हरा दिया. प्रतियोगिता के बाद कछुआ और खरगोश अच्छे दोस्त बन गए थे और दोनों एक दूसरे की ताकत और कमजोरी समझने लगे थे.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

अनोखी दौड़

जंगल में सभी जानवर उत्सुक थे क्योंकि खरगोश और कछुआ की दौड़ होने वाली थी. भालू,बंदर, गिलहरी एवं अन्य जानवर भी वहाँ उपस्थित थे. बंदर ने खरगोश से कहा कि एक बार तुम दौड़ में हार चुके हो,फिर भी तुमने दौड़ने की शर्त लगाई है. इस बार तुम पुनः हारने वाले हो. खरगोश बोला-जब कछुए ने मुझे हराया था वह पुरानी बात है. उस दिन मैं दौड़ के बीच सो गया था. बंदर ने कहा वह तुम्हारी ही गलती थी पर दौड़ तो कछुआ ही जीता था. खरगोश कहने लगा-मैं नहीं मानता, दौड़ पुनः होनी चाहिए. इस बार दौड़ का रास्ता मैं तय करूँगा. कछुआ बोला ठीक है दोस्त हम फिर से दौड़ लगाएंगे.

भालू और गिलहरी को निर्णायक बनाया गया. दौड़ प्रारंभ हुई. इस बार खरगोश ने पहाड़ी वाला रास्ता चुना था. वह आराम से छलाँग लगाते हुए पहाड़ियों से निकल गया मगर कछुआ. बार-बार पहाड़ियों पर चढ़ता और फिसल जाता. मुश्किलों का सामना करते हुए कछुए ने दौड़ पूरी तो की परंतु वह दौड़ में बुरी तरह से हार गया.

खरगोश अपनी जीत पर खुशी से उछल रहा था तभी गिलहरी बोली, मुकाबला बराबरी का हुआ है एक दौड़ में तुम जीते और एक दौड़ में कछुआ. इसका मतलब है एक दौड़ और होनी चाहिए इस बार जो जीतेगा वही अंतिम विजेता कहलाएगा. इस बार दौड़ का रास्ता हम तय करेंगे. खरगोश को यह बात माननी पड़ी. भालू ने पुनः झंडा दिखाकर दौड़ प्रारंभ कराई. खरगोश तेजी से दौड़ता हुआ आगे निकल गया, मगर थोड़ी दूर जाने पर बड़ी नदी ने उसका रास्ता रोक लिया. खरगोश सोच में पड़ गया कि इस नदी को कैसे पार करूँ? तब तक कछुआ भी आ पहुँचा.

कछुए ने पूछा-क्या हुआ दोस्त?

खरगोश बोला-मुझे तैरना नहीं आता मैं कैसे नदी पार कर सकता हूँ?

कछुआ कहने लगा, चिंता मत करो, तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ मैं तुम्हें नदी पार करा दूँगा. खरगोश शर्मिंदा होकर सोचने लगा कि कितना बुरा हूँ. पिछली दौड़ में मैंने जान बूझकर पहाड़ी वाला रास्ता चुना था ताकि कछुआ हार जाए. आज कछुआ मुझे हरा सकता था लेकिन यह मेरी मदद कर रहा है. यह जानते हुए भी, कि ऐसा करने से वह हार जाएगा. दोनों ने नदी पार की और फिर खरगोश कछुए से बोला तुम बड़े नेकदिल हो मैं शर्मिंदा हूँ. प्रायश्चित के लिए मैं तुम्हें अपने पीठ पर बिठाकर दौड़ लगाता हूँ. इस तरह से यह दौड़ हम दोनों एकसाथ जीत सकते हैं. खरगोश ने कछुए को अपनी पीठ पर बिठाकर दौड़ पूरी की. सभी जानवरों ने इस अनोखी दौड़ की बहुत प्रशंसा की.

यशवंत कुमार चौधरी द्वारा भेजी गई कहानी

एक दिन जंगल में भालू, खरगोश, कछुआ,बंदर, गिलहरी पेड़ों के आस-पास खेल रहे थे. खरगोश कछुए का मजाक उड़ा रहा था. खरगोश अपने आपको बेहतर और कछुए को बहुत तुच्छ समझता था. खरगोश को अपनी तेज दौड़ने की क्षमता पर बहुत अधिक घमण्ड था उसने कछुए को नीचा दिखाने के लिए दौड़ प्रतियोगिता की चुनौती दी. इस दौड़ प्रतियोगिता को कछुए ने अपने लिए एक अवसर समझा.

खरगोश और कछुए के बीच मुकाबला हुआ. मुकाबला एक निर्धारित स्थान तक जल्दी पहुँचने का था. इस मुकाबले का निर्णायक भालू को बनाया गया. भालू ने झण्डा दिखाकर दौड़ शुरू कराई.

दौड़ प्रारंभ होते ही खरगोश आधे रास्ते तक तेज दौड़कर एक पेड़ के नीचे आराम फरमाने लगा उसने सोचा कि कछुआ यहाँ तक आ जाए तो उसे चिढ़ाकर मैं फिर आगे बढूँगा. कछुए को चिढ़ाने में बहुत मजा आएगा. दूसरी ओर कछुआ निरंतर चलता रहा और धीरे धीरे चलकर ही वह खरगोश से आगे निकल गया उसने देखा कि खरगोश पेड़ की छाँव में गहरी नींद में सोया हुआ था.

इस तरह कछुआ निरंतर प्रयास से मंजिल तक पहले पहुँच गया और उसे विजयश्री प्राप्त हुई.

जब तक खरगोश जागा तब तक बहुत देर हो चुकी थी. उसका घमण्ड चूरचूर हो गया. अब उसे एहसास हुआ कि सभी की अपनी अपनी क्षमता होती है और सभी का सम्मान करना आवश्यक है. कोई भी छोटा बड़ा नही होता. जीत के लिए सतत् प्रयास की जरूरत होती है. जो सही दिशा में लगन के साथ कार्य करता है वह जरूर सफल होता है.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

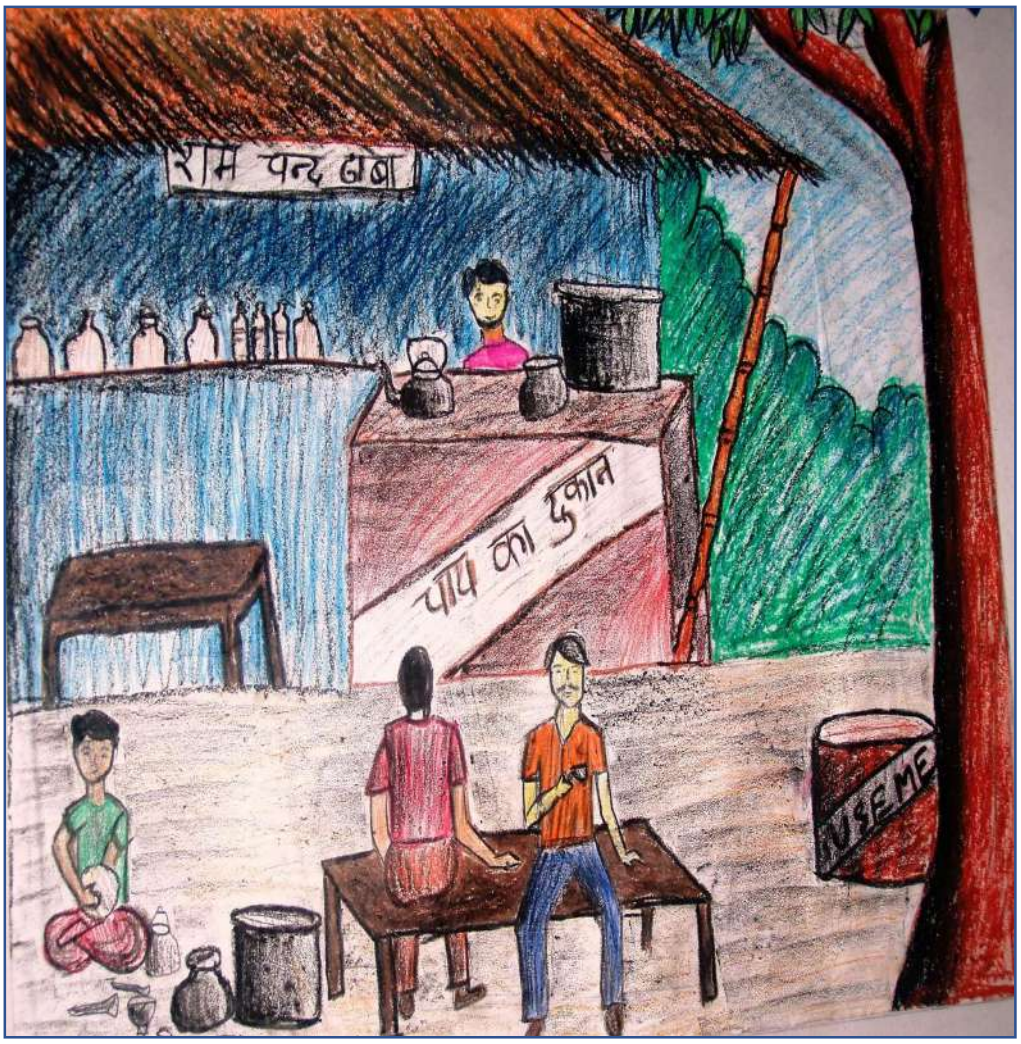

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल**kilolmagazine@gmail.com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे

मजदूर

रचनाकार-प्रिया देवांगन "प्रियू"

मजदूरी का काम है, करते प्रतिदिन काम.
बहे पसीना माथ से, मिले नहीं आराम..
मिले नहीं आराम, हाथ छाले पड़ जाते.
सर्दी हो या ठंड, मेंहनत कर के खाते..
परिवारों को देख, रहे सबकी मजबूरी.
कैसी हो हालात, करे फिर भी मजदूरी..

कहते हैं मजदूर को, जग के हैं भगवान.
कर्म करें वो रात दिन, बने नेक इंसान..
बने नेक इंसान, सभी के महल बनाते.
करते श्रम हर रोज, तभी तो रोटी खाते..
धूप रहे या छाँव, बोझ सबके है सहते.
सुख दुख रहते साथ, कभी कुछ भी ना कहते..

छाले पड़ते हाथ में, काँटे चुभते पाँव.
सहते कितनी मुश्किलें, बैठे कभी न छाँव..
बैठे कभी न छाँव, ठोकरे दर दर खाते.
रहती है मजबूर, नहीं दिखती हालाते..
आँसू उनके देख, जुबाँ लग जाते ताले.
चलते नंगे पाँव, हाथ पड़ जाते छाले..

डर लगता है

रचनाकार-तनिका महेन्द्रु

जब सोचती हूँ अपने बूढ़े माता पिता के बारे में,
तो डर लगता है.
आखिर बुढ़ापा भी तो
होता एक आईना ही है,
बचपन का

जब छोटी थी,
तो माँ हाथ पकड़ के
लिखना सिखाती थी,
आज उसी माँ को
कप्कपाते हाथों से
मोबाइल सीखते देखा है

जब निकली थी घर से पहली बार
दूर कहीं अपना खुद का घर खोजने,
भारी दिल और भीगी पलकों से
मुझे विदा करते देख है.

मेरे अकेले जीने की चिंता करते
उनको हर बार व्याकुल होते देखा है

आज मैं खुद एक भारी दिल
और भारी सी अटेची उठाके विदा होती हूँ
तो उनके लिए अपने दिल में
वही डर पनपते देखा है

'मुझसे दूर रहेंगे, कहीं कुछ हो गया तो? '
हज़ारो बार इस सवाल को
दरकिनार करते देखा है.

"अपना ध्यान रखना! "
बस यही बोल पाती हूँ बिछडते वक़्त,
मेरे बस मे होता तो कभी दूर न करती खुद से.
ऐसा ही कुछ माँ ने भी कहा था
जब पढाई करने
पहली बार परदेस गयी थी मैं.
आज माईने महसूस हुए हैं

उनसे दूर जाते ही,
रास्ते के हर मंदिर मस्जिद में
एक ही मन्नत करती हूँ
मेहफूस रहें स्वस्थ रहें
पता नहीं चला कब खुद को
माँ वाली दुआ माँगते देखा है.

जब कभी पराये शहर में
भटक रही थी मैं अकेली
तो अपनी माँ को मुझे
हॉस्ला देते देखा है

आज उसी माँ के दिल में
कैद एक डर है.
एक अनकही सी चिंता को मैंने

बेहला फुसला कर भगा दिया
जैसे कई बरस पहले खुद
माँ को करते देखा है.

कल तक मुझे
सीख मिली थी जिस जननी से,
आज उनको फिरसे
बच्ची बनते देखा है.

कल जो मेरी उंगली पकड़ के
स्कूल छोड़के आये हैं,
आज उनका अकेला
खाली हाथ अस्पताल जाते देखा है.

देखा है उमर का पासा पलटते
देखा है बुढापा ढलते,
देखी है परेशानी उनकी
ख्याल भी देखा है.
देखा है फ़र्ज़ी मुस्कुराना मेरे लिए
आँसू बहाते भी देखा है.

अब नहीं देख पा रही हूँ
इस बेबसी को चारो तरफ,
नहीं जीत पा रही डर से अपने
नहीं सोच पा रही आने वाला भविष्य.

आज भी डट के संभाल रहे हैं जो
खुद को और परिवार को पूरे
उनकी बूढ़ी आवाज़ को
जर्जर होते देखा है.

देखा है बुढापे को बचपन बनते
माँ पापा में लौटता एक बचपन देखा है
एक समय में मैं ख़ुद थी जैसी
मासूम, अंजान और सहमी सी
आज खुद को उनकी ढाल बनते देखा है

डोकरी दाई कहे

रचनाकार-जितेंद्र कुमार सिन्हा

गली खोर म जादा झन खेल
पिसान ल सान अउ रोटी बेल
सील में नून मिर्चा ल पीस
अँगना ल बहार, घर ल लीप.
मुँहू ल बंद राखे कर
झन करे कर खिस खिस.

डोकरी दाई काहे

नोनी तेहा घर के बुता ल जान
बात कहत हे बड़े सियान
मइके ससुरा ल चलाबे,
बेटी चूल्हा ल जलाबे
करबे सेवा ससुर-सास के
अउ जांगर चलत ले कमाबे.

डोकरी दाई किहिस

पति के सेवा करबे
कोट कोट ले खवा बे
मार दिही गुस्सा म लात
दुरिहा झन जाबे

फेर एक दिन का होविस
डोकरी दाई किहिस

चल उठ बेटी दौड़े ल जाबे
पढ़ पुस्तक-कापी
अउ सीख कुश्ती-कराटे
छोड़ सुख्खा रोटी
अब खा तेहा घी पराठा

डोकरी दाई किहिस

टूरा मन फिलिम मोबाइल
के गेम म भुलाये हे
कोई जनि काबर मुड़ी ल रँगाये हे,
चल उठ बेटी
धर्म ल तोला बचाना हे
देश के सियार म माते हे झगरा
अब तुही ल जाना हे
झन बाँचे एको बैरी
बन्दूक तुही ल उठाना हे

मेरी दुनिया माँ का आँचल

रचनाकार-श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'

मुझे कहीं सच में मिल जायें, अगर कहीं भगवान.
और कहें यदि माँगो मुझसे, तुम कोई वरदान.

अच्छे कपड़े और खिलौने, जो भी चाहो ले लो.
गड्डे गुड़िया कार प्लेन ले, उनके सँग मे खेलो.

या फिर जो अच्छी लगती हो, माँग मिठाई खाओ.
सोच समझ लो ठंडे मन से, जो माँगो सो पाओ.

या फिर ले लो पँख सुनहले, पंछी बन उड़ जाओ.
या फिर तितली के पर ले लो, फूल-फूल इतराओ.

सूरज चंदा तारे ले लो, धवल चाँदनी प्यारी.
जो भी माँगो पूरी होगी, इक्षा आज तुम्हारी.

हाथ जोड़ कर करूँ प्रार्थना, विनती सुनो हमारी.
सारी दुनिया में सच मुझको, माँ है सबसे प्यारी.

एक तरफ हैं सूरज चंदा, धरती अम्बर बादल.
सिर पर मेरे तना रहे प्रभु, मेरी माँ का आँचल.

कोरोना से बचाव

रचनाकार-प्रिया देवांगन "प्रियू"

कोरोना के काल मा, मचगे हाहाकार.
घर मा सुग्घर सब रहव, होही येखर हार..

घेरी बेरी सोंच के, होवव झन परशान.
आगे अब वेक्सीन हर, बचही सबो परान..

खाव जी तुलसी दल ला, खाँसी दूर भगाव.
गरम गरम पानी पियो, देह म ताकत लाव..

घर मा जम्मो बइठ के, सुनव गीत संगीत.
खुश होही लइका सबो, बढ़ही सबके मीत..

सोंच सकारात्मक रहै, राखव दृढ़ विश्वास.
बुरा काल हर भागही, राखव मन मा आस.

भाखा जनऊला (छत्तीसगढ़ी वर्गपहेली)

रचनाकार :- दीपक कंवर

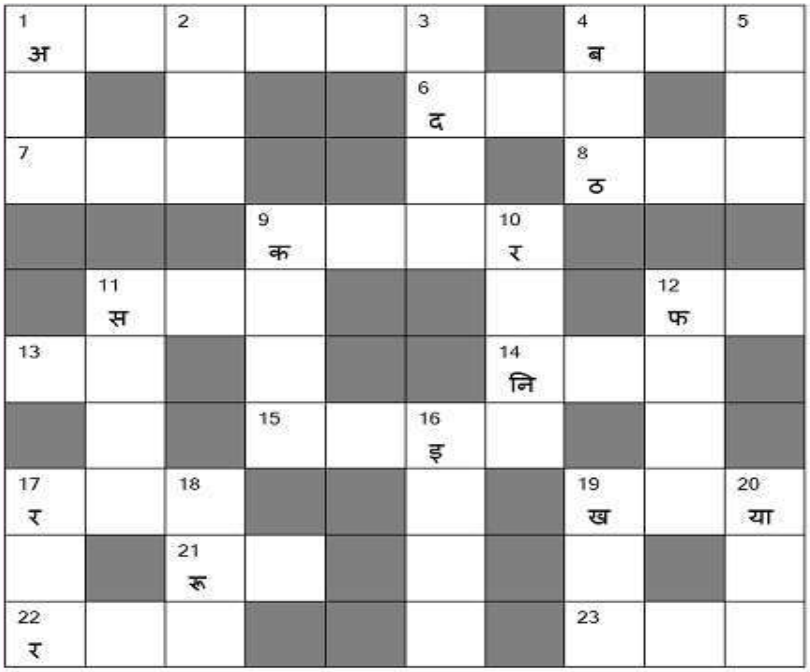

बाएँ से दाएँ

1. बंटवारा 4. बैगा 6. दवाई 7. जल्दी 8. आराम से, आलसी 9. तरबूज 11. इकट्ठा किया 12. फल 13. तीखा, ज्यादा मिर्च 14. बहुत कम 15. पढ़ने वाला 17. मालिस 19. खाट 21. पेड़ 22. रुको, ठहरो 23. ठिठक/ संकोच

पिछले अंक के उत्तर

1 चा	र	या	री				2 हा	ब	य
क				3 ल	ट	4 प	ट		
5 र	व	6 नि	या			र			7 घे
		से				घौ		8 बा	री
	9 क	नी	हा		10 पो	नी			बे
11 झ	न			12 पं	थी		13 ख	खो	री
	घ		14 द	रीं		15 खा	र		
16 अ	उ		र		17 च		18 ख	ज	19 री
	20 आ	नं	द	च	उ	द	स		सा
			हा		र		21 हा	ल	य

ऊपर से नीचे

1. आलसी 3. ज्यादा मात्र मे गिरना 4. बैठ 5. कंकड़ /पत्थर/दर्रा वाला मैदान 9. चुपचाप 10. ठंढ के समय धूप सेंकना 11. लगातार 12. मोटर सायकल 16. ऐसा/ऐसा ही 17. पेड़ पौधे का क्रम से लगा होना 18. शराबी 19. फसल को काटकर एक जगह जमाया हुआ 20. मांगने वाला (हिन्दी)

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था

WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था

WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

अपनी किलोल की
सदस्यता जारी रखने हेतु
सबस्क्रिप्शन लेना न भूलें

किलोल की जानकारी

- बच्चों के पठन कौशल एवं पढ़ने की रुचि विकसित करने हेतु विगत चार वर्षों से बाल-पत्रिका किलोल का ऑनलाइन प्रकाशन किया जा रहा है।
- किलोल को प्रकाशित करने का उद्देश्य शिक्षकों के रचनात्मक कौशल एवं लेखन को प्रदर्शित करना भी है।
- विगत एक वर्ष से किलोल की मुद्रित प्रति भी प्रकाशित की जा रही है जिसका उपयोग आप स्वयं के लिए, अपने बच्चों के लिए एवं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए भी नियमित रूप से कर सकते हैं।

किलोल पाने हेतु

वार्षिक सदस्यता	आजीवन सदस्यता
(शुल्क 720रु.)	(शुल्क 10000रु.)

आप अपनी सदस्यता सुनिश्चित करने हेतु सदस्यता शुल्क Wings2Fly Society के बैंक ऑफ़ बड़ोदा के बैंक खाता क्र. 45730100004644 IFSC Code BARB0MOWAXX (0 is zero others are 'O' in IFSC CODE) में जमा करावें।

राशि जमा करवाने के पश्चात **www.kilol.co.in** में पंजीयन कर अपना विवरण भर दें। पिनकोड सहित अपना पता एवं अन्य विवरण ताराचंद जायसवाल जी को 9926118757 पर व्हाट्सएप पर भी भेज दें।